बरिस - 1 अंक - 2

सिरिजन

www.sirijan.com

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

अक्टूबर - दिसम्बर 2018

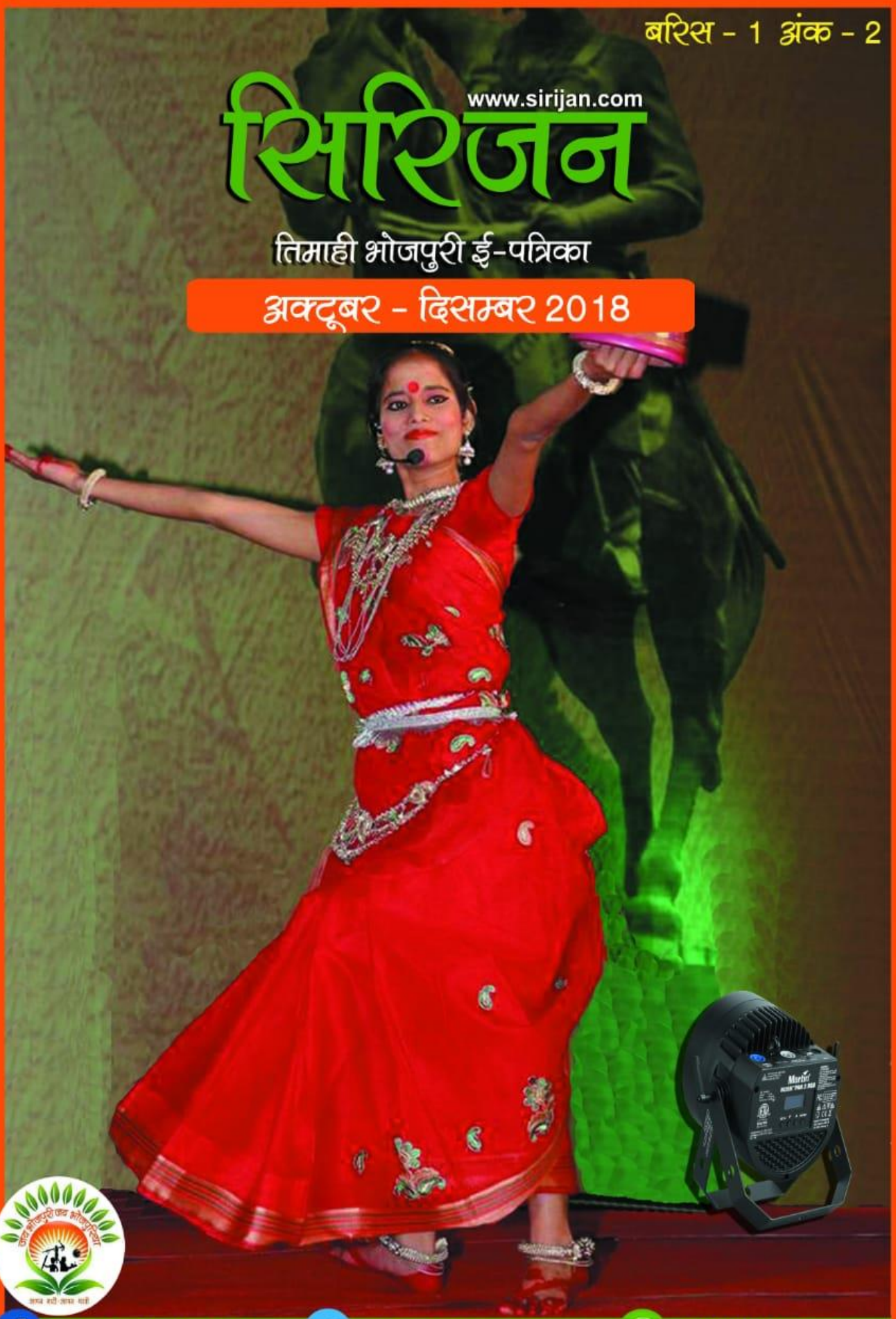

/bhojpuriaphulwari @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका)

प्रबंध निदेशक : सतीश कुमार त्रिपाठी

संरक्षक : 1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)

2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)

प्रधान सम्पादक : सुभाष पाण्डेय

सम्पादक : डॉ अनिल चौबे

बिशिष्ट सम्पादक : बृजभूषण तिवारी

उप सम्पादक : तारकेश्वर राय

कार्यकारी सम्पादक : संजय कुमार मिश्र

सलाहकार सम्पादक : राजीव उपाध्याय

सह-सम्पादक : 1. भावेश

2. दिलीप पाण्डेय

3. माया चौबे

4. डॉ अमरेन्द्र सिंह

5. गणेश नाथ तिवारी

प्रबंध सम्पादक : लव कान्त सिंह

आमंत्रित सम्पादक : चंद्र भूषण यादव

बिदेश प्रतिनिधि : रवि शंकर तिवारी

ब्यूरो चीफ : संजय कुमार ओझा

ब्यूरो चीफ (बिहार) : अमरेन्द्र सिंह

ब्यूरो चीफ (प. बंगाल) : दीपक कुमार सिंह

ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश) : 1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी

ब्यूरो चीफ (झारखण्ड) : राठौर नितान्त

पश्चिम भारत प्रतिनिधि : बिजय शुक्ला

दिल्ली, NCR प्रतिनिधि : 1. बिनोद गिरी

2. राम प्रकाश तिवारी

क़ानूनी सलाहकार : नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

सिरिजन क झपोली

अनुक्रम

1. संपादकीय
   - एही से करीं सिरीजन भोजपुरी में - डॉ अनिल चौबे / 4
   - आपन बात / तारकेश्वर राय / 5
2. कनखी
   - विज्ञापन जी ना रहिते त, हमनी के चिन्ता के करीत ? - डॉ अनिल चौबे / 9
3. कथा-कहनी /दँतकिस्सा
   - गोल्हरी - माया शर्मा / 26
   - जात-पात - सर्वेश तिवारी / 27
   - एहसास - जितेंद्र उपाध्याय / 35
   - माई में गुरु - अमन पाण्डेय / 42
   - कच्चा सूत - कच्चा नाता - संजीव कुमार त्यागी / 46
   - लोगवा का कही - शुभम सिंह / 48
   - आदमीयत - अखिलानन्द ओझा / 54
   - अपनापन - शशिरंजन शुक्ल "सेतु" / 59
   - पछतावा - प्रीतम पांडे सांकृत / 61
   - बुचिया - गणेश नाथ तिवारी श्रीकरपुरी / 63
   - बखरा - आदित्य तिवारी "विक्की" / 64
   - रसपान - विवेक सिंह / 67
   - सामंतवाद - सर्वेश तिवारी श्रीमुख / 72
4. कविता
   - तिरंगा हमार शान (सोरठी) - देवेन्द्र कुमार राय / 16
   - कठपुतरी - कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक" / 16
   - भारत देश महान - सुजीत सिंह / 18
   - भाई हमार - अनीता मिश्रा "सिद्धि" / 18
   - जिनिगी किताब होइत - बृज मोहन उपाध्याय / 24
   - मौका हाथ से निकल जाइ - कवि हृदयानंद विशाल / 24
   - गवनहरी के पँइयाँ - बृजमोहन प्रसाद "अनारी" / 25
   - खाके दवाई - बृजमोहन प्रसाद "अनारी" / 25
   - माई से ही आइल - परिचय दास / 31
   - एतना हऽ दरद जमाना में - बंटी बारिद 'मुकेश' / 34
   - भोरी भाई - दिनेश पाण्डेय / 34
   - इहे ह$शासन...? - फजीहत गहमरी / 36
   - बेटी - दीपक तिवारी / 37
   - सरकत चुनरीया - दिलीप पैनाली / 37
   - अभी तऽ उमिरिया बेवे काँच - राजीव उपाध्याय / 44
   - तूहूँ कुछू तऽ खरीद लऽ - राजीव उपाध्याय / 44
   - शिव जी से निहोरा (पूर्वी) - विबेक पाण्डेय / 45
   - बघवा डेराइल बा सियार से - मदनमोहन पाण्डेय / 45
   - मुक्तक - अनिल कुमार / 51
   - उल्टा के ब्यापार - संग्राम ओझा "भावेश" / 51
   - ओराइले बोलऽता - राजू उपाध्याय / 53
   - खटिया ओंघाए लागल - अभिनाष मिश्रा (रूद्रा) / 66
   - गरीबी क बोरसी - अमरेन्द्र सिंह / 66
   - हम चोर हईं - अभियंता सौरभ कुमार / 70
   - बी एच यू के ठीक पाछे - कौशलेन्द्र मिश्र / 70
   - अब हमरा के नाम करेद - विजय कुमार चौबे "मनु" / 71
   - आम किस्सा - विजय कुमार चौबे "मनु" / 71
   - महंगाई - सम्राट / 79
   - हम आ हमार घर - दीपक सिंह / 79
5. गीत / गजल
   - डॉ जौहर शाफियाबादी क कुछ ग़ज़ल / 12
   - भोजपुरी ग़ज़ल - विद्याशंकर विद्यार्थी / 17
   - भोजपुरी गजल - संजय मिश्र "संजय" / 19
   - भोजपुरी गजल - विमल कुमार /20
   - संगराम करेली - राम ध्यान यादव / 20
   - भोजपुरी गजल - संगीत सुभाष / 30
   - आव आव बदरा - रवि शंकर तिवारी "बिट्टू" / 30
   - जबले सइयाँ ना अइहें - आनन्द गहमरी / 52
   - हमरा पीछे परल बा जमना - आनन्द गहमरी / 52
   - भोजपुरी गजल - अशोक सिंह अलक / 74
   - मनवा न धीर - राजू सहनी / 74
   - बिदाई गीत - पंकज तिवारी / 80
   - माई - लाल बिहारी लाल / 80
6. पुरुखन के कोठार से
   - राधा मोहन चौबे "अंजन" जी क कविता / 13
7. संस्मरण
   - राजरानी - विमल कुमार / 77
8. नाटक / एकांकी
   - अधूरा मिलन (भाग-२) - लव कान्त सिंह / 21
9. आलेख/निबंध
   - काहें रचीलाँ हम भोजपुरी में ? / परिचय दास / 10
   - अंधविश्वास - माया शर्मा / 14
   - कुछ तीर कुछ तुक्का - दिनेश पाण्डेय / 38
   - गोधन आ रंगनी के काँट - राम प्रकाश तिवारी "ठेठ बिहारी" / 50
   - सवाल के गठरी - तारकेश्वर राय "तारक" / 56
   - बिकास भैया जल्दी जल्दी डेगवा चलावऽ.... - जलज कुमार अनुपम / 58
   - चुनौती के दिहिं बरियार चुनौती -त्रिपुरारी पांडेय /75
   - योग अउर योगी - योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी /81
10. पुस्तक समीक्षा
   - पहिलका डेग - जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 32
11. एह अंक के चित्रकार / 86
12. पाठक का कोना - राउर बात / 87
13. भावभीनी श्रद्धांजलि तीस्ता के - तारकेश्वर राय / 7
14. सतमेझरा – 8,83-85,88,89-91

एही से करीं सिरीजन भोजपुरी में.....

दू टुम बात करे के बा। रुचे-पचे लायक ई दुसरका अंक परोसात बा। समहुत अंक के जेतना उत्सो उमंग का साथे तिनसुकिया से लेके फरीदाबाद,गाजियाबाद, मुसहरी बाजार, दुर्गापुर आ छपरा आदि अनेक जगहा लोकार्पण भइल ओसे मन धधा गइल आ ई निश्चित हो गइल कि "सिरिजन" ई पतिरिका भोजपुरिया लोगन की दुआरी के दरवाजा अपनी उपस्थिति से जरूर ठक ठका दिही। डाउनलोड करवइया, लिंक भेजवइया रचनाकार आ पाठक सब के अनघा बधाई बा।

दोसर बात ई बा कि भोजपुरी आपन मातृभाषा ह, जवना में कंठ खुलल त माई- चाना मामा आरे आवS, पारे आव, नदिया किनारे आव, सोना की कटोरिया में दूध भात लेले आव, बबुआ के मुंह में घुट्टू सुना-सुना के खियवलस। दादी एही भाषा में -- राजा तू बढई डाँट, बढई ना खूँटा चीरे, खूँटा में मोर दाल बा, का खाँऊँ, का पिऊँ, का ले परदेस जाँऊ? ई कविता मय कहानी सुना - सुना के अपना गोदी में धीरे धीरे ठोक -ठोक के सुता लिहली। जब तनी आदमी बुझनउक भइल त चाचा-- एक चिरैया अट्ट, ओकर पाँख बाजे चट्ट, ओकर खलरा ओदार, जेकर माँस मजदार, ई बुझउवल बुझा बुझा के हमनी के दिमाग के दियरखा में सोच के दिया जरवलें। त ए भाषा से मोहब्बत तनी ढेर भइल जाइज कहाई। जहाँ पीपर के पेड़ पर बरहम बाबा आ जीन बाबा बाड़ें, अइसन मान के लँगोटा चढेला, जेवनार चढावल जाला। नीम के निचवे काली माई रहेली। राती के डेरात राही के डीह बाबा गाँव में ले पहुँचावेलें। एतना प्रकृति के नजदीक रहेवाला आपन ई भोजपुरी भाषा ह ।

आपन ई भाषा सत्तर हजार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फइलल बा। खाली भारत में सोरह करोड़ लोग भोजपुरी में बोलेलें। यूपी, बिहार, मध्य प्रदेश आ झारखंड में त खूब जम के परयोग होगा। नेपाल के तराई से लेके मॉरिशस, फिजी, त्रिनिनाड, मलेशिया अउर सिंगापुर जइसन सत्ताइस देसन के त आधारे भोजपुरी ह।

जवन नोट प्रयोग में ना आवे ऊ धीरे धीरे चलन से बाहर हो जाला। असहीं, जवन भाषा बोली व्यवहार में ना रहे ऊ धीरे -धीरे मर जाली सन। एगो आँकड़ा के हिसाब से अपना देश में हर साल औसतन पाँच से सात गो भाषा आ बोली मर रहल बाड़ी सन। पचास बरिस में लगभग अढ़ाई से तीन सौ तक ले भाषा मर गइली सन। त जवन भाषा पच्चीस करोड़ लोगन के जबान पर होखे ओके परचार के ना, परयोग के जरूरत बा। ई ठीक बा कि भोजपुरी बड़की पैकेज, बड़हन व्यपार, बड़ रोजगार ना दी, बाकी भोजपुरी संस्कार दी। त आईं, सिरिजन की साथे एगो संकल्प लियाव आ कोशिश कइल जाव नवका पीढ़ी के ऐसे जोड़े के , पुरनिया के जोगावे के। भोजपुरी में कुछ लिखीं,पढ़ीं आ बोलीं, आपन भाषा बचावे खातिर।

अन्त में, भारतीय राजनीति के पुरोधा, सबकर प्रिय भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के सिरिजन परिवार की ओर से अटल श्रद्धांजलि।

भोजपुरी जगत के एगो टटका अधखिलल फूल जेकरा गमक से ना जाने आपन समाज केतना गमकित, नियति के नियम मान के बेटी "तीस्ता" के लोर भरल आँखिन के कोर से बिदाई.....

जय भोजपुरी- जय भोजपुरिया

रउरे

(डॉ अनिल चौबे)
सम्पादक "सिरिजन"

आपन बात

"सिरिजन" के समहुत अंक के जवना उल्लास अउरी अपनापन के साथ भोजपुरिया समाज अपना अँकवारी में भरलस ओकरा के देखिके हमनीं के उत्साह जटाहिर बाबा तर लागल लमहर सोझका बाँस पर के झंडा से भी टिकासन भर ऊपर बा । राउर असीस बदे उठल हाथ सिरिजन के माथ प हमेशा बनल रहो, एकरा खातिर हमनीं के जी जान से लागल बानीं जा । राउर अपेक्षा बहुत बा हमनीं से, ओह अपेक्षा के मान राख पाईं जा एकरा बदे सिरिजन जमात कटिबद्ध बा । रउरा नेह के नापल बिवेचना के बश में नइखे । भोजपुरिया समाज के नेह - छोह के बरखा से हमनीं के भींजत रहीं जा एकरा खातिर हमनीं के प्रयास निरंतर जारी रही ।

मेहरारुन के शक्ति भोजपुरिया समाज में पूजनीय रहल बा । भोजपुरी के केंद्र में हमेशा से गाँव रहल बा। गाँव त रोजी- रोटी खातिर खेतिए प निर्भर रहेला आ खेती समुदाय - समाज के सहयोग के बिना सम्भवे नइखे । सब अदिमी के एगो माई त होखबे करेले, एकरा अलावे भी मातृशक्ति के कईगो रूप के दर्शन होखेला, अपना भोजपुरिया समाज में । टोला के काकी, गोतिया, देयादि के चाची, बड़की माई, छोटकी माई, भउजी, मोटकी अजिया, बड़की फुवा, छोटकी बहिन जइसन अनगिनित रिश्तन से पाटल बा समाज । आपन बेटी, बहिन आ टोला- पड़ोसा के बेटी, बहिन में अंतर ना माने के रीत बा । ए रिश्तन के मजबूत डोर से बन्हला के कारने परोजन भा कवनो मौका प येह रिश्तन क हस्तक्षेप आ सलाह- सुझाव देत खूब लउकेला । समाजिक सद्भाव खातिर ई संजीवनी के काम करेला । कवनो आफत- बिपत में होखे अदिमी तबो सुख के आश बनल रहेला । येह उम्मीद के परवान चढ़ावे वाली कवनो काकी, आजी, फुवा, बहिन, गोतनी, ननद भा सासुए होली । शहरी जीवन में ए कुल के अभाव साफ लउकेला ।

अदिमी आपन रोजी रोटी कमाए में आ आपन कर्तब्य के ठीक तरह से निभावे में एतना बाझ जाला कि अपना खातिर समय निकालल ओकरा बदे दूभर हो जाला । परबे -तेवहार एगो अइसन मोका होला जिनगी में, जवन रोजमर्रा क जिनगी से छुटकारा दियावेला आ पूरा परिवार एक साथ लाग के, एके मनावे के तइयारी में लाग जाला इहे कुल ख़ुशी ओकरा जिनगी जिए के नावा उत्साह जगावेला । भोजपुरिया समाज त हर दिनवे के एगो उतसव के रूप में मनावेला । हर महीना अपना अँकवारी में कवनो न कवनो तेवहार के लेके आवेला ।

आवे वाला तिमाही अक्टूबर से दिसंबर भोजपुरिया समाज खातिर बिशेष बा । ए महीनन में खास रूप से मनावे जायेवाला परब, जेमा खास बा दशहरा, दिया-दियारी आ छठ । दशहरा क आगम होखते बड़की माई, आजी, काकी, फुवा, बहिन, भउजी लोग एक जगह बटुरा के देवी गीत गावे लागेला । दुर्गा माई के सातो रूप के हजारो गीत सुने के भेंटा जाला येह मोका प। पुरान परामपरिक गीत त सुनइबे करेला एकरा अलावे नावा-नावा गीतन से भी पाट जाला बजार । ऑडिओ-वीडियो दुनो रूपन में एल्बम लउके लागेला । मेहरारुन के भोग्या समझेवाला लोग एक बेर फिनु मान जाला कि जब -जब समाज में आसुरी शक्ति के बोलबाला होला, ओके दमन खातिर दुर्गा रूपी शक्ति जरूर परगट होली । बुराई के जर कतनो बरियार होखे ओके हारहीं के परेला अंत में ।

दशहरा के थोरहिं दिन के बाद दिया-दियारी के परब मनावे के तइयारी में जुट जाला भोजपुरिया समाज पूरा देश के साथे । इहे ऊ परब ह जेमा लोग अपना आशियाना के साफ सुथरा क के रंग रोगन आ दियाबाती, बिजली के झालर बाती से सजावेला । लाख दुःख तकलीफ सहला के बादो बिजय के माला अच्छाई के गरदन के शोभा बढ़ाई । संकल्प आ साहस के जीत क ख़ुशी के उल्हास से मनावे क नाँव पर जरेले

दियरी । खेतिहर क उपजावल अन्न ए परब - तेवहार के बहाने समाज के हर तबका के हाथ में पहुँच जाला।

दिया-दियारी के छठवाँ दिने छठ मनावे के बिध ह, भोजपुरिया समाज में । लोकप्रियता के चलते आज छठ कवनो परिचय के मोहताज़ नइखे । आज गैर मजहब, गैर भोजपुरिया समाज भी ए परब के मनावत लउक जालें । गंगा जमुनी परम्परा के साक्षात दर्शन हो जाला ए मोका प । छठ मनावे खातिर अपना गाँव- गिराँव, परिजन से दूर गइल परदेसियो लोग लवटेला। कवनो कारणबश ना लवट पावेला त जे जहाँ बा ओहिजे येह परब के धूम धाम से मनावेला । देश - प्रदेश के साथे - साथ सात समुन्दर पार भी येह परब के धूम सुने के भेंटाला, संचारमाध्यमन से । बहुत प्रदेशन में येह दिन सार्वजनिक अवकाश रहेला । गैर भोजपुरिया प्रदेश में भी शासन, प्रसासन, स्थानीय निकाय, जन मानस श्रद्धा से छठ पूजा करेवाला श्रद्धालु लोग के सहयोग करत लउकेला । समाजिक सौहाद्र के मजबूती मिलेला येह परवन के चलते । नवका पीढ़ी सूप, दउरा, सुथनी, कन्ना जइसन बहुत लुप्त होत चिझन से परिचित होला । पूरा परिवार के सदस्य के सहभागिता रहेला येह परब में । जइसे सभके मालूम बा इहे एगो परब ह जेमा डूबत आ ऊगत सूरुज के एक साथ पूजा - अरचन के बिध ह । छठ के ख्याति दिनोंदिन परवान चढ़त जाता, जवन भोजपुरिया समाज खातिर गौरव के बात बा ।

भोजपुरी साहित्य के मिठास क एहसास करावत "सिरिजन" के नवका अंक रउरी आँखिन के सोझा बा । आशा ना बलुक पूरा बिसवास बा कि राउर असीस रूपी पाहुर जरूर भेंटाई ।

राऊर आपन,

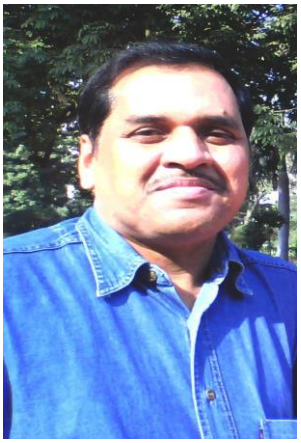

(तारकेश्वर राय)

भावभीनी श्रद्धांजलि तीस्ता के

बिदाई त बेटी के नियति बा, बर्तमान समाज के रीति-रिवाज के अनुसार, बेटी के जनमते पूरा परिवार मानसिक रूप से अपना के तैयार क लेला की लाड़- पियार से पाल -पोस के, पढ़ा- लिखा के घर बसावे खातिर नवजीवन क सिरिजन खातिर बिदा करहीं के परी एक न एक दिन। चाहे आपन दिल के टुकड़ा के बिदा करे में परिजन के खून के लोर काहें न बहावे के परे । लेकिन अइसन बिदाई जवन डोली पा न होके बाप के अर्थी के कांधा लगावे के परे ई सुन के कल्पना मात्र से बरियार से बरियार आ कठोर दिल के आदमी के आँख लोर से भरिये जाई, एहमें कवनो दुविधा नइखे । अइसने दुःख से गलबहियाँ करे के परल छपरा सारण के ऐतिहासिक सांस्कृतिक गौरवशाली धरती रिविलगंज के भोजपुरी लोकसंगीत के धुरंधर अउरी लोकनाट्यकर्मी उदय नरायन सिंह जी आ बेटी रहली १७ बरिस के काँच उमिर के अनुभूति शांडिल्य उर्फ़ तीस्ता । उहे तीस्ता जवन महज १३ बरिस के उमिर से ८० बरिस के पुरनिया क आजादी क लड़ाई क महान योद्धा बाबू कुंवर सिंह के कहानी के संगीतमय नृत्य नाटिका के माध्यम से लोकमंच पर जीवंत क देत रहली। मंच पर उनकर प्रस्तुति एतना मनभावन होखत रहे कि दर्शक अपना जगह पर बंध के रह जासु। उनकरा में लोकगीत गायिका तीजनबाई के साक्षात् दर्शन होखे । फूहड़ के पर्याय बन चुकल भोजपुरी गायकी के बड़ा उम्मीद रहे अपना ए बेटी से। महज चार साल के लोक मंच पर उनकर प्रस्तुति उनकर अलग पहचान बना देहलस, लोकमानस में । तीस्ता के साधारण बोखार के शिकायत पर पटना के एम्स में भर्ती कइल गइल १७ अगस्त २०१८ के। लेकिन डॉक्टर लोग आ परिजन के अथक प्रयास के बावजूद भी बेमारी दिन पर दिन बढ़ते गइल आ जब ई खबर पता चलल भोजपुरी समाज के, त भोजपुरी जगत के लाड़ली बेटी तीस्ता खातिर सगरे पूजा पाठ शुरू हो गइल। लेकिन, २८ अगस्त २०१८ के साँझि के सात बाजे काल के निष्ठुर चंगुल से ना बँच पवली तीस्ता आ जिनगी के अकाट्य सत्य मृत्यु के गोदी में सदा खातिर सूति गइली । शायद बिधना के इहे मंजूर रहे । भोजपुरी लोकगायन के उभरत सितारा तीस्ता के असमय गइला से भोजपुरिया लोकनाट्य, लोकसंगीत खाली ना बलुक समूचा कला जगत के क्षति भइल बा, ओकर भरपाई में त समय लागी । कलाकार कहाँ मुवेला? ऊ अपना कला के कारण लोक मानस में हमेशा जियत रहेला। लोक कंठ हमेशा ओकरा योगदान के कारण मुक्त कंठ से प्रसंसा करत लउकेला । तीस्ता अब सिर्फ अनुभूति बन के रह गइली लोकमानस में । जय भोजपुरी जय भोजपुरिया परिवार के लोर भरल अँखियन से श्रद्धांजलि बा "बिहार के तीजनबाई" उपनाम के पावेवाली तीस्ता के ।

तारकेश्वर राय "तारक"

नेवता बा .....

★एगो दिन माईभासा भोजपुरी के नाँव★

समय के पवनार में लोकजीवन आ लोकसंस्कृतिके ना जाने का- का दहा गईल आ का-का दहाये वाला बा? ओही सब थाती के क्षरण से रोके के प्रयास में लागल संस्था ★जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया★ के तत्वावधान में 18 नवम्बर 2018 दिन अतवार के गाँव : अमहीं मिश्र, पोस्ट- जिगना दूबे, प्रखंड आ थाना- भोरे, जिला - गोपालगंज, बिहार में भोजपुरी साहित्यिक-सांस्कृतिक महोत्सव के आयोजन कइल गइल बा। जेमा दूगो सत्र राखल गइल बा-

1- भोजपुरी की दशा- दिशा पर जानल- मानल विद्वान सबके व्याख्यान का साथे कवि सम्मेलन। दिन में 11-00बजे से 04- 30 बजे साँझि ले। ओकरा बाद विश्राम।

2 - लोकगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम साँझि के 7-00 बजे से।

अमहीं मिश्र भोरे- कटेया मुख्यपथ पर कोरेया से 01 किलोमीटर पच्छिम बा।

नजदीकी रेलवे स्टेशन-

सिवान, भटनी जंक्शन आ देवरिया सदर। गोरखपुर भी उतर सकतानीं। उहाँ से बस भा ट्रेन से देवरिया भा भटनी आ जाईं।

मुख्य जगहन से कार्यक्रम स्थल के दूरी-

भटनी से - 20से 22 किलोमीटर उत्तर।

देवरिया से- 40 किलोमीटर पुरूब।

सिवान से- लगभग 50 किलोमीटर पच्छिम।

गोपालगंज से- लगभग 55 किलोमीटर पच्छिम।

कटेया से- 10 किलोमीटर दक्खिन।

समाज मे आपन माईभासा ख़ातिर सम्मान जागो आ समाज के अंतिम पावदान तक के जनता जनार्दन एके लिखे, सुने, बोले आ पढ़े के प्रेरित होखे, ओकरा ख़ातिर ★जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया के एगो प्रयास बा । ई सफर अनवरत जारी रहे एकरा ख़ातिर रउवा सभके सहयोग के निहोरा बा । आईं ना, 18 नवम्बर 2018 क दिन समर्पित करे के आपन माईभासा भोजपुरी के । रउवा त शिरकत करबे करब, साथ में ले आईं हित- मीत, संगी- साथी आ परिजनो के । एह महोत्सव के सफल बनावे के, माईभासा के प्रति आपन नेह देखावे के । राउर इंतजार रही ।

निवेदक-

★जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया★अउरी सउँसे ग्रामवासी - अमहीं

विज्ञापन जी ना रहिते त, हमनी के चिन्ता के करीत ?

हम आज काल्ह इहे सोचत बानी कि विज्ञापन जी ना रहितें त ए मतलबी जमाना में के हमनी के एतना चिन्ता करित ?

भगवानो अपना भगत लोग के जरूरत के जेतनी चिन्ता नइखन करत, ओ से जियादा चिन्ता हमनी के विज्ञापन जी करिले। सिगरेट पर लिखल संवैधानिक चेतावनी की तरे विज्ञापन जी भी हरदम हमनी के जागरूक करत रहेले। बिहाने बिहाने कवन टुथपेस्ट हमनी के दाँतन खातिर लाभादायक होई। ताजगी खातिर कवन चाय पिए के चाहीं , नहाये बदे कवन साबुन त्वचा के रछा की साथे मईल में लुकाइल किटाणुअन के धो धो के सफाया क देला । तेल, मसाला, आटा से लेके कवन नीमक देश के नीमक ह।

अइसन अइसन ढेर ढेर जिम्मेदारियन के निरबाह अकेले विज्ञापन सम्हरले बा। मेहरारू के तनिको चिन्ता नइखे कि राउर कपार के बार उज्जर होता त एके करिया करे के बा। बाकी विज्ञापन का हरदम चिन्ता बनल रहेला। तबे नू ए महान काम के अन्जाम देवे खातिर टीबी के सगरी चैनल कसम खइले बाड़ेसँ। हम तनी संकोची सोभाव के हईं। कइसनो हीरोइन टीबी पर मुस्कुरात आके कहेली कि हई क्रीम चेहरा के निखार देला त बस हम उनके ना त नाहिंए कह पाइले। तुरन्ते किनि के ले आइले तबे दम धरिले। चाचा भी गंगाजल पिये की उमर में उहे आरओ के पानी पियेलें, जवन पिये खातिर हेमामालिन कहेली । हमनी के संस्कार नू बा जी। नारी के सम्मान कइल ठीक तरह से जानिले जा। आपन बजरंगी भाई जान दस रूपिया के ठंडा के बोतल पिये खातिर केतना तूफानी काम करेलें। हम त कई बेर कह चुकनी, काहे के जान जोखिम में डाल देल? तू सेलिब्रटी हउव, कहीं मर मुरा गइल त, बोतल के का ? ऊ त बेंचाइए जाई । बाद में हमनी के दोष दिहें कि समय रहते केहू बतावल ना।

शरीर के सबसे ऊपर वाला हिस्सा में दिमाग होला, जदि विधाता देले होखस त। ओ में टेन्शन ढेर बढ़ी जाव त ओ के ठंढा करे खातिर सदी के महानायक तेल लगावे के बोलेलें । हम दउड़ के किने चल जाइले। अब भाई एतना बड़ महान कवि के बेटा, सिनेमा जगत के सुपर इस्टार एगो कलर्क टाइप के आदमी के तेल लगाके मालिश करत बा त ठंढक आ आराम त जरूर मिलत होई। कलरकवा के भाग से जीव में जरतुआहि जाग जाता । लेकिन बचन जी अइसन हमनी खातिर करेले ताकि सभे ई समझ लेव कि जीवन में कलरको बने के होखे, तबो तेल लगावल जरूरी होला। कदम कदम पर विज्ञापन जी हमनी के धियान राखेलें। हम विज्ञापन जी के शुकुरिया अदा करत बानी। जवन हम बीए की क्लास में ना जान पवनी, ऊ हमार बाबू पचवें में जान गईले । सोचीं, विज्ञापन जी ना रहिते त हमनी के चिन्ता के करीत? एने एगो अउर चिंता बढ़ि रहल बा कि टीबी पर जबे विज्ञापन आवता "नो चिपकोइंग बेंच दे, बेंच दे, पुराना ओलेक्स पर बेंच दे। " तब्बे दुनो लइकवा एक टक दादा- दादी की ओर देखे लागत बाड़े सन ।

• डॉ अनिल चौबे
सम्पादक "सिरिजन"

काहें रचीलाँ हम भोजपुरी में ?

वइसे त , भाषा अभिव्यक्ति क एगो एक साधन ह, बाकिर ओकर भूमिका इतिहास आ संस्कृति के धारन कइलहूँ क ह। एसे अपन मातृभाषा में साहित्य रचला के प्रयोजने अनन्य ह । चूँकि एम्मे हमनी के स्मृति आ बिम्ब होले , एह नाते एकर सौन्दर्य एगो आत्मीयता आ निकटता के सर्जना करेला । साहित्य-कला हमनीं के अंतः विवेक आ संवेदन क आवश्यक फलश्रुति ह । हमनीं के अनुभव कइल जाला कि समाज क पतनोन्मुख हिस्सा हमनीं के अंतस' आ 'इयता' पर गैर-जरूरी दबाव डालेला , बाकिर ध्यातव्य हवे कि साहित्य क अंतःकरन समाज क उपनिवेश नइखे । बजार के नकारात्मक प्रभाव आ राजनीतिक दर्शनन क छाया साहित्य के आत्म के अनुकूलित कइल चाहत हवे, बाकिर साहित्य समय आ दर्शन के अतिक्रांत कइला के महासंवेदना ह।

जब हम भोजपुरी में साहित्य रचिला त ध्वनियन , शब्दन आ वाक्यांशन में शब्दक्रमन के विशिष्टता आ उनके क्रमबद्ध रूप दिहला के विशिष्ट भंगिमा से पता चलेला कि भाषा हमरा खातिर केतना महत्त्वपूर्ण ह। भाव, बिम्ब आ लय संश्लेषन के वाचिक आ लिखित माध्यम से सम्प्रेषित कइला में भाषा क हमरे खातिर अद्वितीयता ह । सम्प्रेषनीयता से संस्कृति क निर्माण होला । हमरा शिल्प के सर्जन में किसान-शक्ति क रचनात्मकता ह। सथहीं, परम्परा आ समकाल के नूतन सम्भावना से देखला क प्रत्ययो । किसान के अपन मातृभाषा बोलला आ एगो बृहत्तर राष्ट्रीय या महाद्वीपीय भूगोल से जुरल रहला में कौनो अंतर ना देखाई देला । हमरे शिल्प के उपकरण आज के चराचर के संदर्भित करेलन । प्राकृत आ अपभ्रंश क ऐतिहासिक अवस्थिति के देखत आज के भाषिक-साहित्यिक रूपाकृति में भाषा के विलोपन के प्रक्रिया के समझे के होखी । ' जरिन की ओर लवटला के बाति कहीं अलगा लागू होत होखी । हम अपन लेखन के जर से निकलले मानीला । आखिर हमार साहित्य जरमूल से संपृक्त जन खातिर त ह , उन्हनिये क भंगिमो ओम्मे होखी ।

सबसे पहिले त ई कि हम केकरा खातिर लिखिला ? जेकरा खातिर हम लिखिला ओकरा खातिर भाषा क चुनाव का अर्थ रखेला ? ई प्रश्न अत्यंत मूल्यवान ह कि अंग्रेजी , चाहे अन्य प्रभुत्वकारी भाषा अइसन का ना अभिव्यक्त क पावेलीं जवन भोजपुरी करेले । वास्तव में अंग्रेजी क कथ्य ऊ होइए ना सकेला जवन भोजपुरी के होखी ।

भोजपुरी आ अंग्रेजी क सांवेदनिक व सामाजिक पृष्ठभूमि अलग-अलग ह । भाषा में वास्तविक जनप्रेषण यथास्थितिवाद के चुनौती ह । भोजपुरी भाषा में बोले वाले इहाँ नगर-महानगर, हर कहीं हवें , हर तबका के । यानी कि ई जीवंत भाषा ह आ धरती से जुरल । ई महज शासन आ किताब के भाषा नइखे । हम उहे गाइला , जवन जनता गावेले आ हमार मन गावेला । हमार रचना क विषय-वस्तु आ बिम्ब आत्म व जन संघर्ष से लिहल गइल हवें । आत्म व जन संघर्ष के बीच एगो गहिर सम्बंध ह । सांस्थानिक आ जन स्तर पर सांस्कृतिक विनिमय अत्यंत आवश्यक ह ।

कई बेर देखल गइल ह कि संस्कृति के प्रतिमानन के रचना में पश्चिमी हस्तक्षेप हद से जियादा बढ़ि गइल हवे । पश्चिम क मूल्य हमनी के मूल्य ना हो सकेलन बाकिर सौन्दर्य के विभिन्न तंतुअन द्वारा हमनी के उप्पर उन्हनी के आरोपित कइला के सूक्ष्म प्रक्रिया जारी ह । हमनी के एह स्थिती में पहुंचे लागल हईं जा कि साहित्य, जीवन आ सामाजिक संघर्षन के बारे में एगो खास दृष्टिकोण-जइसन बनल जात हवे जवन , हमनी के जरन से ना आवेला । हमनी के साहित्य के व्याख्या पश्चिमी धुरी पर ठाढ़ होके कइल जाला आ दुनिया के ओइसने देखवला में लगि जाइल जाला । ई कवनहूँ तरह उचित नइखे । पश्चिमी सिद्धांत के जानल एगो अलग बाति बा आ साइत ऊ जरूरियो ह ।

होला का , कि जवन शिक्षा आ संस्कृति के पश्चिमी आधार आ अंग्रेजी के बल पर हमनी के समझला के कोशिश कइल जाला , ओम्में अपन जरि पूरी तरह आत्मसात ना होले , एहसे जब कब्बों बड़ सांस्कृतिक आ सामाजिक परिवर्तन के आवश्यकता होले त , ऊ दृष्टिकोण काम क ना होला । खाली सिद्धांत के बात अलग बा । किसान के अँगोछा क संस्कृति अंग्रेजी में ना लियावल जा सकल जाला , अइसन हमार मानल हवे । राष्ट्र द्वारा बोलल जाये वाली भाषन में उपलब्ध संस्कृति आ इतिहास क समृद्ध राष्ट्रीय परम्परा क प्रयोग क के शक्ति पावल जा सकल जाला । हमनी के वास्तविक साहित्य तब्बे विकसित हो सकेला , जब भारत के किसान समुदाय क समृद्धि संस्कृति, भाषा आ इतिहास के तह में

अपन जरिन खातिर प्रवेश करे। इहाँ किसान समुदाये अइसन हवे , जवन अधिक अधिक संख्या में ह आ ओकर जाहिर रचनात्मक-सांस्कृतिक महत्त्व हवे । दुर्भाग्य से आज ओकर आवाज़ बहुते कम सुनल जा रहल हवे आ ऊ आत्महत्या कइला के विवश हवे । रचनाकर्म करत समय हमके अतीत क समस्त ध्वनि, चीख, प्रेम, संघर्ष के स्वर सुनाई देला आ ई स्वर अइसन भाषा में नहीं हो सकेलन जेकर वास्तविक जरि भारत के धरती में न होखे या जनसंघर्ष से जुरल ना होखे ।

परिचय दास

कवि, निबंधकार , आलोचक, सम्पादक आ पूर्वसचिव, हिंदी अकादमी , दिल्ली व मैथिली -भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

डॉ. जौहर शफियाबादी क कुछ गज़ल

गजल

नेह घर से निकालल गइल ।
नाग अँगना में पालल गइल ।।

सान के धर्म का बीषि में,
लोग साँचा में ढालल गइल ।

बाजा-गाजा सँगे धूम से ।
सत्य के अरथी निकालल गइल ।।

देश पर बात जब आ गइल ।
नाम हमरे पुकारल गइल ।।

खून सीमा पर हमरे बहल ।
घर में हमरे के मारल गइल ।।

नेह खातिर बा आकाश से ।
चाँद-सूरज उतारल गइल ।।

रूप जौहर गजल के नया ।
तहरे हाथे सँवारल गइल ।

=गजल=

सइयाँ मोरे जाई बसे मधुवन में ।
अब का करीं जिया मानत नाहीं,
आग लगे तन-मन में ।
सइयाँ.....

कागा आ-आ शब्द सुनावे,
सुतल बैरी आगऽ जगावे,
ताकीं आस गगन में ।
सइयाँ.....

तन-मन-धन सइयाँ पर वारी,
आस मिलन के राह निहारीं,
अऊर कहाँ कुछ मन में ।
सइयाँ.....

प्रीत के रीत कठिन जौहर बा,
घट-घट में हरिहर-हरिहर बा,
आग धुआँ, दर्पण में ।
सइयाँ.....

=गजल=

प्रीत के पनका पोढ़ाइल, खत खुला अचके मिलल,
दर्द के चम्पा फुलाये, के पता अचके मिलल ।

साँच देखे के सुने के, सबका बा हिम्मत कहाँ ?
साध के एकला चले के, रास्ता अचके मिलल ।

नेह का मंडी में आके, घाट ना तउलिले हम,
तबहूं हर एक मोड़ पर, भारी घटा अचके मिलल ।

जिन्दगी के हर डरारी में, एक-एक अक्षर में बा,
मोल-मर्याद के रूत, हर साधना अचके मिलल ।

शांत ठहरल झील का, छाती प पत्थर फेंक के,
भोला-भाला शोख ऊ, निश्छल खड़ा अचके मिलल ।

हम मुहब्बत के पुजारी, स्वार्थ के देवी के साथ,
दूर जाके राह में कुछ, फासला अचके मिलल ।

हम ना तौलिले अंजोरो, के अन्हारे बाट से,
साँच कहला के बड़ा, निर्मम सजा अचके के मिलल।

हार के बाजी जिये के, चेतना-चिंतन के बा,
देख के तहरा के जौहर, हौसला अचके मिलल ।

(जौहर शफियाबादी)

राधामोहन चौबे "अंजन" जी क कविता अउरि जीवन परिचय

ना घर हमार ह, ना दुआर हमार ह,
ना गाँव हमार ह ,ना जवार हमार ह,
हम त एगो चउकीदार नीयर बानी,
ई राज राउर, सब राउरे सरकार ह,
जब अइसन विचार होखे के चाही, इ कइसन बवाल खड़ा करे के प्रयास हो रहल बा। आखिर ई लोग चाहत का बा। अपना घर में आगी लगा के चैन से सुते के आशा कइल बेकार बा।ऊहा का 5-12-2009के
एगो गीत लिखनी तनि एह् पर धेयान दीं---
का होई, कुछु मालुम नइखे-बीतल जात उमिरिया,
समय बदलते जाता रोजो-थाकल जात गतरिया,,
कहवाँ से कहवाँ आ गइनी,
जेतना सोचनी कुछु पा गइनी,
जवन कमइनी-लोग खा गइल,
ढ़ेर-ढ़ेर अपने खा गइनी,
आजु के दिन हम देखत बानी ,बदलल सजी डगरिया॥
सुख सन्तोष बुझाता हमरा,
भरल-पुरल बा अंगना दुअरा,
जेतना सोचनी सपना देखनी-
आंखिन से चलि गइल लमहरा,
अबो बहत बा, किसिम -किसिम के रोजो-रोज बेयरिया,
अब त हमरा इहे बुझाता,
जेतना इहाँ जोराता नाता,
का जाने केतना दिन निबही,
दिन-दिन देहि बुढ़ाइल जाता,
किन सुने ना देहि ना डोले धुमिल भइल नजरिया॥
परम-शक्ति के सजी ह खेला,
हाट-बाट जे लागल मेला,
रोज ओराला ,रोज बनेला,
हो गइनी हम आजु अकेला,
अब के अंजन इहाँ रचाई उगिले आग जवरिया॥

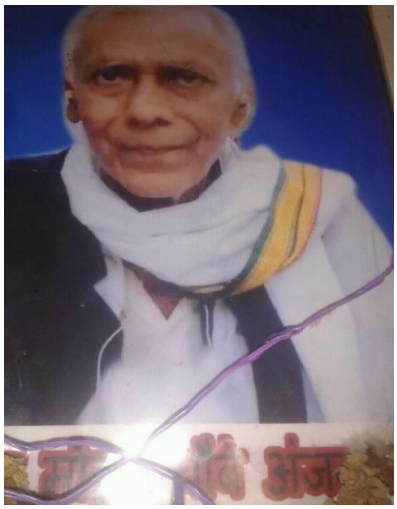

राधामोहन चौबे "अंजन"

कवि, गीतकार राधा मोहन चौबे (अंजन जी) क जन्म दिनांक 4 दिसम्बर 1938 को ग्राम शाहपुर-डिघवा, थाना-भोरे, गोपालगंज जनपद, बिहार में भईल रहे । इहाँ के बाबूजी के नाँव श्रीकृष्ण चतुर्वेदी अउरी माई के नाँव महारानी देवी रहे । बाद में अंजन जी आपन ननिहाल ग्राम अमहीं बाँके, डाक-सोहनरिया , कटेया में स्थाई रूप से बस गइनी । अंजन जी बचपने से कविता लिखे लगनी । बाकि प्रसिद्ध भोजपुरी कवि धरीक्षण मिश्र के संपर्क में अइला के बाद अंजन जी के काव्य प्रतिभा में निखार आइल । अंजन जी एगो प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहीं । हाई स्कूल क परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कइनी । अंजन जी बाद में हिन्दी मे एम०ए० पास कइनी, पास कइला के बाद 19 अगस्त 1959 के शिक्षक के नौकरी मिलल । तब से शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्राचार्य, प्रखण्ड शिक्षा अधिकारी, क्षेत्र शिक्षा अधिकारी आदि पद पर काम कइनी और फिर 1 फरवरी 1998 के सेवानिवृत्त भ गइनी । अंजन जी भोजपुरी गीतकार के रूप में मशहूर भइनी । इहाँ के आकाशवाणी पटना आ दूरदर्शन पर भी गीत प्रस्तुत कइनी । अंजन जी कविता अउरी गीतन के अलावा कहानी , उपन्यास और नाटक भी लिखनी । इहाँ के गीतन में गंवई समाज के संवेदना के उत्कर्ष और अपकर्ष क धुरी के चारों ओर नाचत मिलेला । आजो पूर्वी उत्तर प्रदेश के तमाम गायक अंजन जी के गीतन के गा गा के जनमानस के मन्त्रमुग्ध क देला लोग । अंजन जी कवि, गीतकार के साथ-साथ निक पहलवान भी रहनी । अंजन जी के कुल 25 जो किताब प्रकाशित भइली स । इहाँ के पहिलका किताब-कजरौटा, 1969 में प्रकाशित भइल रहे । कुछ अन्य मुख्य प्रकाशित किताबें के नाँव बा -फुहार, संझवत, पनका, सनेश, कनखी, नवचा नेह, अंजुरी, अंजन के लोकप्रिय गीत, हिलोर आदि । अंजन जी के पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद, कोलकाता, मुम्बई दूरदर्शन आदि के द्वारा समय-समय पर सम्मानित भी कइल गइल । अंजन जी क देहावसान 15-01-2015 के भइल, आज उहाँ के हमनी के सोझा नइखी बाकी उहाँ के रचना जब जब पढ़ल जाई तब तब जनमानस उहाँ के जरूर याद करी । बारम्बार नमन बा जमीन से जुड़ल एह कवि, गीतकार के ।

अंधबिस्वास

भारतीय समाज में अंधबिस्वास के जरि एतना गहिरा बा कि आजुओ के जुग में समय-समय पर एकर खराब परभाव देखे के मिलत रहेला। ई अंधबिस्वास का ह ए पर बिचार कइला से ई बाति सामनें आवेला कि ऊ मति,ऊ रेवाज जवना पर तनिको सोंचले बिना आँखि मूँनिके बिसवास क लिहल जाव। मानि लिहल जाव ऊहे अंधबिस्वास ह।चाहें कवनों धरम होखे,जाति-बर्ग होखे कवनो न कवनो अंधबिस्वास में जियते रहेला।ओमें बहुत कम्मे लोग एइसन मिलिहें जे एसे उबरि पवले होखें।

अब बाति ई बा कि के, कइसे उबरि जाला आ के, केइसे ना उबरि पावेला।समाज में हर परिवार के एगो आपन तौर तरीका होला रहला-सहला,खइला-पियला,जियला के,सोंचला के।जवना परिवार में पढाई-लिखाई के परभाव कम रहेला,बूढ-पुरनियाँ भरामक बाति में परे वाला होखीे,घर में अंधभगती होत रही,नवको पीढी ओही मान्यता में अझुराइल रही बिचारत रही।एतरे अब ऊ पीढी दर पीढी ओही में भुलाइल रहिहें।

बाकिर ओहीजा जो कवनो परिवार जेइमें लोग पढल-लिखल होखे त ओकरे सोच में फरक होला ,ऊ कवनों बाति-बिचार के तरक क के बिचारि के अपनावे वाला रहेला त अपनावेला नाहीं त ना।

आजु-काल्हि एइसन बहुते घटना रहि-रहिके सम्हने आवताड़ीसो जवना से ई नइखे मानल जा सकत कि खाली बेपढले-बेलिखले लोग अंधबिस्वास में परेला बल्की बढियाँ, बढियाँ पढल-लिखल परिवारो के लोग एइसन बातिन में परल रहेला।जेकरे देखा-देखी में अनपढ कमजोर लोग के त ओ बाति में परहीके बा।अबहिन हाल ही के दिल्ली वाली घटना एकर जीयत जागत उदाहरन बा जेइमें अंधबिस्वासे के चलते धनीमनी सम्पन्न परिवार के एगारह जनें बूढ से बच्चा ले आँखि मूनिके(बिना बिचरले)अपनिए हाथे फाँसी पर झूलि गइलें।पूरा देश उनकी मूर्खता पर सन्न रहि गइल।उनके मिलल का...?कुछू नाहीं..जनवो से हाथ धो लिहलें।

अपने समाज में तरह-तरह के रीति -रेवाज बाड़ी सो जवनन के पूरा समाज निभावत चलि आवता।एह रीति-रेवाजन में केतनें एइसन रीति-रेवाज बाड़ें जवन समाज के भलाई खातिर बनल बाड़े,उनकर भाव बढियाँ बा जइसे मानिलीं की कवनों परब-तिहुवार,असनान-धेयान बाकिर केतने एइसनों रेवाज बाड़ें जवन समाज के बढियाँ रास्ता न देखाके भरम में डाले के काम करेलें एसे बेकती के ,समाज के बहुते नोकसान होला,ओकर विकास ना हो पावेला ।ओइसने रीति-रेवाज के कुपर्था,कुरीति के नाँव दे दीहल जाला।एइमें मानिलीं कि जइसे तरह-तरह के टोटरम ।जवन आदमीं में भरम फइलावे के कार करेला,बढियाँ राहि न देखाके भटकउले के कार करेला जवना में अझुरइले दिन-महीना-साल के कवन गिनती जिनगी बिति जाला पार पवले।ए लोगन के समुझउलो-बुझावल बड़ी पहाण होला।समाज में एइसन लोगन के गिनती बहुत ढेर बा।

अब इहाँ बाति ई बा कि एइसन लोग वाला समाज के विकास होई कइसे...त एकरा खातिर बुद्धिजीवी बर्ग के सजग होखे के परी।बुद्धिजीवी बर्ग में सबसे आगे आवेलें साहित्यकार।इनकर जिम्मेदारी कुछू बिशेष होला,जवना में मुख्य बा इनकर सिरिजन।एकरे बले साहित्यकार समाज में उचित विचार क के बीज बो सकेला आ साथे-साथे समाज के कमीं उजागर क के ओके दूर करेके उपाहि सुझावेला।

अउरी दूसरे समाज के तरे अपने भोजपुरियो समाज में बहुते एइसन पर्था-रेवाज बाड़ीसो,बहुते कुछू भरामक बाति बा जवना के आजुओ के जुग में लोग तेयागि नइखे पावत आ ऊ विकसित सोंच खातिर रोकावट बा।जेतना टोटरम बा ओहीसे अंधबिस्वास बाआ अंधबिस्वासे से टोटरम बा।ओकर ए वैज्ञानिक जुग में कवनो मतलब नइखे।

आजुके ए वैज्ञानिक जुग में बहुत कुछ बदलि गइल बा।आदमीं तेजी से आगे बढे के चाहता ओकरा दकियानूस बातिन पर सोंचे के समय नइखे।बहुतेरे पढल लिखल लोग हो गइल बा।सब तरे के साधन होगइले के चलते लोग दूर- दराजो के बाति देखता,सोंचता ,सीखता।जवनाकी चलते ओकरे जिनगी में बहुते बदलाव भइलबा।तवनापर समाज में बहुते एइसनों लोग बाड़ें जे पुरनका भरममउवा बाति विचार के पोंसले अंधविस्वास के चोला ओढलहीं में आपन बड़ाई बूझताड़ें।कुछू त एइसन बाड़ें की समाज के भोलाभाला लोग के एइसन बातिन में फँसा के आपन रोजी चलावत बाड़ें। ईंहाले कि आज के संचार माध्यम के जेतना कड़ी बा उहो भरामके भूमिका में ढेरे लउकता। हई चमत्कारी हऊ चमत्कारी के ना परचार करित ना लोग झाँसा में अइतें।दूसरी ओर संत समाज के बदनाम करेवाला लोग संत के चोला में समाज के धोखा देरहल बा।परिनाम ई बा कि पूरा भक्ति मय संत समाजो से लोग के भरोसा ऊठे लागल बा।ई त बहुते चिंता के बाति बा।

आजु जरूरत बा कि कवनो उपाहि क के लोग के आँखी से पट्टर हटावल जाव।ओके ई

लउकावल जाव कि समाज में अफवाहन, अंधविस्वास के कवनो जग्गहि नइखे।आजु जतरा-पतरा सगरी नाकाम बा।

भूत-बेयारि,सोखा-ओझा,झाड़-फूँक,जंतर-मंतर,बलि दीहल,सियार,बिलारी के रास्ता काटला पर खराब मानि के घबड़ाइल इ कुलि सगरो अंधविस्वास में गिनालें।त हमनीं के चाहीं कि ए कुल में न अपने अझुराइल जाव न समाज के अझुराए दीहल जाव।

माया शर्मा

उ. म. वि. नेहरूआ कला
पो. भठवां बाजार, प्र.–पंचदेवरी
जि. गोपालगंज , बिहार

तिरंगा हमार शान(सोरठी

भारत के शान हवे तीन रंग तिरंगवा ,
आरे तीन रंग तिरंगवा हो,

हरदम फहरे आकाश नू ए राम।
उपरे केशरिया बलिदानी के निशनिया,

आरे बलिदानी के निशनिया हो,
सादगी उजरका पहचान नू ए राम।

हरिअर हवे रामा भरल पूरल धरती,
आरे भरल पूरल धरती हो,

अन्नपूर्णा के ई निशान नू ए राम।
चक्र हउवे भारत माँ के माथे के टिकुलिया,

आरे माथे के टिकुलिया हो,
हरदम चमके लिलार नू ए राम।

कवनो मुदइया राय नजर उठइहें,
आरे नजर उठईहें हो,

देहबि भुजवा उखाड़ नू ए राम।
कबहूँ तिरंगवा के झुके नाहीं देहबि,

आरे झुके नाहीं देहबि हो,
जाई चाहे हमरो परान नू ए राम।

• **देवेन्द्र कुमार राय**
(ग्राम +पो०-जमुआँव, पीरो ,,भोजपुर, बिहार)

कठपुतरी

ए कठपुतरी बोलऽ ना ।
मन के अंदर छिपल वेदना
आपन मुँहवा खोलऽ ना
ए कठपुतरी बोलऽ ना ।।

कतिना दिन तू नाचत रहबु
बान्ह के पग में डोरी
जे तोहर रखवार बनल बा
उहे गला ममोरी
का जानत रहलू कि छन में
छप्पन छूरी चलाई ?
अपना के मानवतावादी
संरक्षक बतलाई
जब जिनिगी जहमत बा बनल
तऽ पपियन के तू झोलऽ ना
ए कठपुतरी बोलऽ ना ।।

काठ के बानी काठ रहब हम
काठ के जइसन जरब
बनबऽ अब खपचाल नुकीला
अंतडी बाहर करब
डालब सर में संखिया अइसन
मगज कबो ना खुली
नगर निवास के कहल का जाई
अपनो नमवा भूली
ई कठपुतरी काठ ना रही
सही सही सभ कऽही
कहे कठपुतरी किरिया खा के
सुनऽ ए सरकारी बाबू
कवनो पुतरी काठ ना होखे
इंसाफ़ के फाटक खोलऽ ना
ए कठपुतरी बोलऽ ना ।।

• **कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक"**

मनवा के भावना बता देला मनवा
मनवा के मनवा जना देला मनवा

भरोसा के रोटी दुइए गो काहे ना
ओतने के धनी बना देला मनवा

आन के रोटी पर तिके के अनभल
डाह के करत बा, पता देला मनवा

ललसा के दौर में कइसे रिन भइल
दबल जज्बात के हवा देला मनवा

राह बा दुरूह त दुरूह सोच नइखे
रूबरू जख्म से करा देला मनवा

केकरा हँसी में जहर बा घोराइल
विद्या के अगते चेता देला मनवा |

- विद्या शंकर विद्यार्थी

कइसे कहीं कि चिन्ह - चिन्हार ना भइल
मतलब साध के लोग किनार ना भइल

हरियर घास तलक लोग साथ चलल
काँट परल त ई दुनिया हमार ना भइल

दरद के थाती लौटावे लागल सभे हमार
कइसे कहीं कि रिश्ता में दरार ना भइल

दिल में अवहता नेह लगइला के अब
कइसे कहीं करेजा चिरफार ना भइल

रे मन रेत में चल त आस छोड़ के चल
के कही कि इनकार, इनकार ना भइल

जे रहल दूर सांत्वना देता आके विद्या
ऊ हमार ना भइल त तोहार ना भइल |

- विद्या शंकर विद्यार्थी

जल्दीबाजी कइल नीक ना ह मीत,अन्हरिया के टर जाए द
बदरी से चान निकल जाई मीत, अँजोरिया के ठहर जाए द

जिंनगी बा त राह तय करहीं के परी एह जीवन में सुन ल
दुपहरिया निमन ना ह मीत, बेर गिरल बेयरिया के पर जाय द

जे हाली में बा अ ोकरा के केहू का समुझाई रोक के कबो
जे चले से पहिले सपरता मीत, टोक$ मत सपर जाए द

लोग बहुते होला कि लोग के हहरावेला भरम में डाल के
निगाह में रख ओइसन के मीत, कतराये त कतर जाए द

हर केहू प भरोसा करे के नइखे विद्या मान के चले के बड़ए
जरे त जरे लहरे द मीत, हो सके त नजर से उतर जाए द |

- **विद्या शंकर विद्यार्थी**

भारत देश महान

बन्द भइल ना घूंस अभीले,
ले रहल शैतान बा।
हं भईया सचहुँ के आपन,
भारत देश महान बा।

चील्ह कुकुर के नियन,
नोचे के सीरत जाइ ना।
लाख जतन कोई कर लिही,
राम राज फेर आइ ना।

रोपये धरम-करम बा इंहा,
रोपये त भगवान बा।
हं भईया सचहुँ के आपन,
भारत देश महान बा।

शरम-हया सब छोर के,
नीच नीचता करता।
दोसर के हक मार के,
आपन झोड़ी भरता।

पद-पावर के तार-तार,
कर रहल हैवान बा।
हं भईया सचहुँ के आपन,
भारत देश महान बा।

अपना से नीचेवाले के,
सभे आँख देखावेला।
जे रोआब ना सहे भाई,
उ बहुते पछतवेला।

छूट बा लुटे के लूटीं ना,
जबले होत सकान बा।
हं भईया सचहुँ के आपन,
भारत देश महान बा।

गलत करीं चाहे ना करीं,
देवे के नजराना बा।
हुकुम-हाकिम सब देखावा,
जाँच त बस बहाना बा।

खुद खाइं उपरो पहुंचाई,
साहेब के फरमान बा।
हं भईया सचहुँ के आपन,
भारत देश महान बा।

सुजीत सिंह(शिक्षक)
कन्या मध्य विद्यालय
अपहर
अंचल-अमनौर,सारण

भाई हमार

भाई धीरज
भाई सुन्दर
भाई साहस
भाई से सँसार बा ।

भाई नटखट
भाई प्यारा
भाई साथी
भाई जीवन आधार बा ।

भाई बन्धन
भाई चंदन
भाई धड़कन
भाई हृदय के प्यार बा ।

भाई सन्दल
भाई संबल
भाई सागर
भाई से रौशन परिवार बा ।

अनीता मिश्रा "सिद्धि"
हजारीबाग, झारखण्ड

भोजपुरी गज़ल

का बताईं का असर, हो ग़ज़ल बा प्यार के।
नीक अब लागे लगल, हर चीज एह संसार के।

पहिले त जिनिगी में हमरा, पतझड़-ही-पतझड़ रहल,
उनुका मिलि गइला पर आइल,बाटे दिन बहार के।

चुटकी में दिनवा ओराला, पास जब उनुका रहीं,
दु जमाना जइसन लागे, दुघड़ी इंतजार के।

नेह के नदिया गहिर बा, रहि रहि के लागेला डर,
कइसे खे पाई खेवैया, नाव बिनु पतवार के।

देखि ल पन्ना पलट के, सामने इतिहास बा,
उहे जीतल जे गइल बा, दिल के बाजी हार के।

- **संजय मिश्र'संजय'**

कार्यकारी सम्पादक "सिरिजन"

9576824357

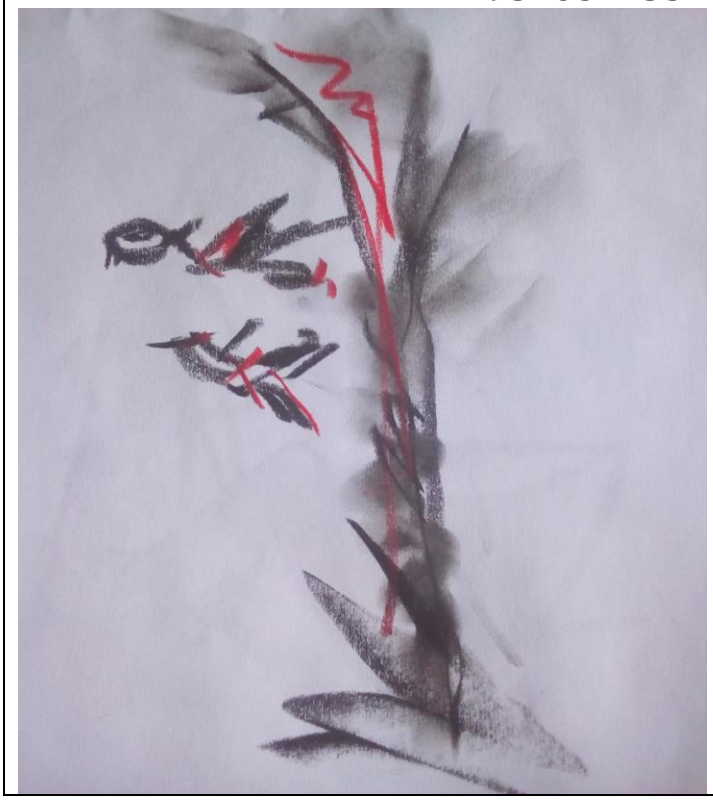

भोजपुरी गीत

केतनो चहनीं भुलाइल, ना भुलाइल मितवा।
छोड़ अइसन पराइल, ना भेंटाइल मितवा।।

मन परे फरछीन, ऊ मिलन के पहिला दिन,
छीन अँखियाँ से नीन, कब समाइल मितवा?
छोड़ अइसन पराइल, ना भेंटाइल मितवा।।

मन के मनवा से जोर, नवचा नेहिया के डोर,
पोर-पोर पिरितिया अँखुआइल मितवा।
छोड़ अइसन पराइल, ना भेंटाइल मितवा।।

सुधिया देले झकझोर, राखीं मनवा बटोर,
लोर अँखियाँ के सगरो ओराइल मितवा।
छोड़ अइसन पराइल, ना भेंटाइल मितवा।।

आखिर कवने कसूर, पास रहल भइल दूर,
'संजय' सेतिहे में जिनिगी भुँजाइल मितवा।
छोड़ अइसन पराइल ना भेंटाइल मितवा।।

- **संजय मिश्र'संजय'**

कार्यकारी सम्पादक "सिरिजन"

9576824357

भोजपूरी गजल

तहरा अँखिया से कजरा चोरा लेब धनी
अपना करेजा में तोहके बसा लेब धनी।

खुश राखबि शिकायत के मौका ना देब,
तहरा धड़कन के आपन बना लेब धनी।

संग चले में तोहर पाँव थकि जाई त,
उठाके कोरा पलक प बइठा लेब धनी।

पाँवे पायल माथे बिंदी सेनुर लगा के
नई दुलहन जस तोह के सजा लेब धनी।

नाहिं जनलू तू महके ना पहिचनलू
अपना जिनगी के पगहा धरा देब धनी।

प्यार करिह भा जोति के आन्हर करिहऽ
रहिह नजरी के सोझा मुस्का लेब धनी।

ए करेजा करेज नाहिं कतल करऽ
ना त सोझहीं हम जिनगी गवाँ लेब धनी।

हरिअर बाला चूड़ी अउरि टिकुली लेलऽ
कहबू त तोहके देवघर घुमा लेब धनी।

आव बहियाँ के झूला में तू झूलि जा
मानि जा तू सभ नखरा उठा लेब धनी।

• **विमल कुमार**
ग्राम +पोस्ट-जमुआँव
थाना-पीरो,भोजपुर,बिहार

संगराम करेली

घरवा रोजे - रोज हमरा संगराम करेली,
माई - बाबू संग जीयल ई हराम करेली।

कहेली कमाई राजा बय जनी भरऽ,
देतानी उपाइ मोरा कहल तूँ करऽ,
सबसे अलगा रहे खातिर ऊ सलाह करेली।
घरवा रोजे - रोज हमरा संगराम करेली,
माई - बाबू संग जीयल ई हराम करेली।

जरत बा जमाना नाहीं साथे रहि पाइबि,
तूहईं बतावऽ कइसे सपना सजाइबि?
अपना बचवन के खातिर इंतजाम करेली।
घरवा रोजे - रोज हमरा संगराम करेली,
माई - बाबू संग जीयल ई हराम करेली।

तोहरे कमाई राजा सब केहू खाई,
अँखिया से देखि नाहीं हमरा सहाई।
रोटी नाहिं बनल नाटक सुबह - शाम करेली
'ध्यानी' कइसे जीहें बड़ी परेशान करेली,
माई - बाबू संग जीयल ई हराम करेली।

• **राम ध्यान यादव**

अधूरा मिलन (दूसरा भाग)

गतांक से आगे -

दृश्य - 2

(शहर के कवनो कालेज के कैन्टीन जहाँ एगो प्रेमी जोड़ा बैठके बात कर रहल बा।)

विजयः- (अखबार पढ़त) दुनिया में एक से बढ़के एक लोग बा।

शहनाजः- अइसन का पढ़ लिहनीं जनाब?

विजयः- (कुछ सोचत बा, फेर अचानक अखबार के लपेट के पकड़त) ई अखबार में जेतना ख़बर छपेला ओसे कोई सबक काहे ना लेवे।

शहनाजः- अरे विजय भइल का? ई त बताईं। देखाईं, अखबार हमरा के दीं।

(अखबार लेके पढ़े लागत बारी।)

विजयः- रोज-रोज पंचायत के फरमान, हत्या.....(थोड़ा विचलित बा। हम सोचिला अगर हमनीं के घरवाले हमनीं के रिश्ता खाति ना मनिहें तब का होई?

शहनाजः-(अखबार रखत) देखऽ विजय, अभी हमर पढ़ाई में एक साल आउर रह गइल बा। तू अभिए से एतना चिन्ता काहे करत बारऽ ?

विजयः- शहनाज, बार-बार ध्यान हटावे के बाद भी ई बात दिलो-दिमाग से निकलत नइखे। अच्छा, चलऽ फर्ज़ करऽ कि तहरे घर वाले राजी न भइलें त?

शहनाजः- त का विजय? हम पहले भी कह चुकल बानीं कि हमार अब्बू हमरा से बहुत प्यार करेलें , ऊ हमार बात ज़रूर मनिहें।

विजयः- अगर ना मनलें त का?

शहनाजः- ना त हम अपने घरवालन के खिलाफ जाएम आ ना तहरा के अपने घर के खिलाफ जाए देहम। अगर तहरे घरे हम केहूके के पंसद ना आईं , त हमरा के भूल जइहऽ विजय।

विजयः- तू लड़की लोग केतना कठोर होलू नू, एकदम से कह देलू कि भूल जइह। भूलल एतना आसान ना होला शहनाज, जेतना आसानी से तू कह देलू ह। अगर हमरे घरवाले ना मनलें त पक्का बता रहल बानीं, भाग जाएम तोहरा के लेके।

शहनाजः- घर वालन से भागके कहाँ जइबऽ, बतावऽ। तनी सोचऽ कि तहरा माई-बाबूजी पर का बीती। उनके अरमान के मिट्टी में मिलाके तहरा का मिली आ ओइसे भी हम एह तरह से तहरा के ना भागे देम।

विजयः- त तहरा का लागत बा, हमरा घर के लोग खुशी-खुशी राजी हो जाई, तोहरा से हमार शादी खातिर। अगर छोट-मोट बात होखित त शायद मान भी जइते बाकी सबसे बड़ बात ई बा कि हम ब्राहमण बानीं आ तू मुस्लिम.....जाति..... खाली जाति के नाम पर ही केतना लोग के अपना रिश्ता से, इहाँ तक कि अपना जान से भी हाथ धोए के पड़त बा आ इहाँ त धर्म के गहिर खाई बा जवना के पाटल ओतना ही मुश्किल बा जेतना कि लंका तक पुल बनावल। फिर भी तू बात समझत नइखू।

शहनाजः- देख विजय, तोहर बात एकदम सही बा, बाकी हम खाली एतना कहल चाह रहल बानीं कि तू अपने घरवालन के प्यार से समझावे के कोशिश करऽ त ज्यादा अच्छा रही आ हमरा उम्मीद बा कि घरवाले जरूर मान जइहें। आखिरकार ऊ तहार माता-पिता बा लो, तहार भला ही त चाही लोग थोड़ा मुश्किल जरूर होई बाकी नामुमकिन नइखे। (मजाकिए अंदाज में) वैसे भी, अच्छा चीज के पावे खातिर कठोर परिश्रम त करे के ही पडेला।

विजयः- हम गम्भीर बात कर रहल बानीं आ तहरा मजाक सुझ रहल बा। तोहरा के हमरा से शादी करे के बा कि ना?

शहनाजः- बिल्कुल करे के बा बाकी खाली शौहर ना चाहीं, ओकर माता-पिता यानी हमरा सास-ससुर, ननद, भाई, भौजाई सब चाहीं। बचपन में ही हमरा अम्मी के मौत हो गइल रहे....अब्बा दूसर निकाह कर लेहलें.....हमनीं के माई के प्यार देखलहीं नइखीं.... एसे हम एह बात पर जाेर दे रहल बानी कि प्यार से मनावे के कोशिश करऽ। इन्साअल्लाह, जरूर मान जाएम लोग।

(एही बीच उनकरा मित्र के पइस)

राजेशः- आरे भाई विजय तू लोग इहाँ बैठल बार आ हम पूरे कालेज में चक्कर लगाके आ गइनीं।

शहनाजः- आदाब, राजेश जी।

राजेशः- आदाब.....का बात बा, लागत बा रउआ लोग कोई गम्भीर बहस में लागल बानीं। अगर हम खलल डाल के गुस्ताखी कइले होखीं त हमरा के माफी दे दीं।

शहनाजः- अरे ना ना, अइसन कोई बात ना। आईं ना, बइठीं, बल्कि रउआ त हमार मित्र बानीं रउरा अइला से खलल कइसन। (राजेश बैठत बा।)

विजयः- हाँ भाई, हमरा के ढूंढत काहे रहल, उहो एतना बेचैनी से आ हाथ में ई डिब्बा कइसन?

राजेशः- डिब्बा!! अरे हाँ (याद आवत बा।) ई मिठाई के डिब्बा बा आ तहरे के मिठाई खियावे खातिर आइल बानीं।

विजयः- मिठाई? बाकी कवना खुशी हो।

राजेशः- पहले खा ल तब बताएम (विजय मिठाई लेत बा) रउआ भी खाइए लीं, बाकी मना करे के कोशिश भी ना करेम। (सब ठहाका लगावत मिठाई खा लेता)

विजयः- अब त बतावऽ महाराज, ई मिठाई कवना खुशी में खियावल जा रहल बा?

राजेशः- याद बा, कुछ महीना पहिले हम बैंक के इमित्हान देले रहनीं। आज ओकर परिणाम आइल बा।

विजयः- अच्छा त तोहर नौकरी हो गइल, एही से मिठाई खियावल जा रहल बा।

शहनाजः- मुबारक हो राजेश जी।

राजेशः- मुबारकबाद त विजय के दिहीं, काहेकि ई मिठाई हमरा ना इनके नौकरी मिले के खुशी में बा।

विजयः- का!! हमार नौकरी..... मजाक मत कर दोस्त।

राजेशः- मजाक नइखीं करत..... तहार नौकरी हो गइल आ डबल खुशी के बात ई बा कि हमरो नौकरी हो गइल। बाकी मिठाई तू खियइबऽ अब।(सब हँसत बा)

विजयः- यार ई त तू बहुते अच्छा खबर सुनवलऽ।

शहनाजः- बाकी रउआ परिणाम पता कइसे चलल? राजेशः- आज के अखबारो में छपल बा आ हमरा घरे डाक से एगो चिट्ठी भी आइल बा।

शहनाजः- अखबार त ई रहल.....(अखबार में देखत) हाँ ई रहल राउर नाम, चलीं ई अच्छा भइल कि रउआ सरकारी बाबू बन गईनीं.....बहुत-बहुत बधाई।

विजयः- धन्यवाद.....मोहतरमा.....

राजेशः- धन्यवाद..... मिठाई-सिठाई ई सब त चलत रही। पहले रउआ लोग ई बताईं कि शादी के का इरादा बा? अब त नोकरियो हो गइल, घरे बात कइलऽ लो कि ना।

विजयः- भाई, तू त जानते बारऽ हमरा घर के का माहौल बा। खाली घरे ना पूरा गाँव-समाज में इहे हाल बा। हम जानत बानीं कि ऊ लोग एह शादी खातिर कभी ना मनिहें बाकी तबो एक बार अपन बात रखके उनका लोग के समझावे के कोशिश त जरूर करम।

राजेशः- हाँ कोशिश कइले बिना हार मानल सबसे बड़ हार बा।

विजयः- बल्कि हम शहनाज से ई कह रहल बानी कि अगर घर वाले ना मनलें त हम कोर्ट मैरेज कर लेम, घर से भाग के ही सही। बाकी ई बारी कि मानते नइखी। 36 बात आउर सुना रहल बारी। अगर हमार मानऽ त तू एकबार समझावऽ इनका के। तू अपना उदाहरण देके समझावऽ.....।

शहनाजः- (बात काटत) रउआ बताईं ना राजेशजी, का हम गलत बानीं? अपन लोग से भाग के हमनीं जाएम कहाँ? आ सबसे बड़ बात ई कि हमनीं शादी करके अलग रहे लगनीसँ त हमनीं के घरवाले खुश रह पइहें का?

राजेशः- रउआ एकदम सही कह रहल बानीं शहनाज जी। हम आपन उदाहरण ही दे दीं। हमनी के घर से भाग के ओह लोग के खिलाफ जाके शादी कर लेहनीं बाकी अब महसूस होता कि न हम खुश बानी आ न हमरे घर वाले। गाँव-समाज मे बदनामी भइल से अलग। आज भी कबो-कबो माई के हाथ के भोजन आ प्यार-दुलार याद आवेला त रोए के मन करला। बाकी इहो नइखीं कर सकत....।(विजय से मुखातिब होकर) विजय, तू जवन सोच रहल बारऽ ऊ बिल्कुल गलत बा। हम त एगो मित्र भइला के नाते इहे सलाह देम कि घर के लोग के समझावऽ, मनावऽ, अगर ऊ लो माने त ठीक ना त उनके हिसाब से ही रहऽ, कभी घर से भागे आ समाज से बगावत के बात सोचबो मत करिहऽ। काहेकि भाई हो हम जवन झेल रहल बानीं, हम कबो ना चाहेम कि तूहो झेलऽ।

विजयः- तोहरो बात सही बा राजेश बाकी प्रेम भी त कवनो चीज बा न, एकर का करीं। शहनाज के अलावा कवनो आउर के बारे में हम सोच नइखी सकत।

शहनाजः- रउआ अपनी जगह सही बानीं, बाकी ई कठोर समाज हमेशा से प्रेम के बलि चढ़वले बा। खैर, अब हमनीं के घरे चलेके चाहीं बहुत देर हो गइल बा....

राजेशः- हाँ.....हाँ हमरा त विजय से मिठाईयो खाये के बा।

हंसी....

---- मंच पर अंधेरा-----

---------- अगिला भाग अगिला अंक में

लवकांत सिंह

जिनिगी किताब होइऽत

काश हमार जिंदगी सचमुच में किताब होइत ,
पढ़ सकतीं हमहूँ कि आगे-आगे का होइत ?

का मिली हमरा, का दिल से हार होइत ,
कब कुछ खुशी मिली, कब दिल रोइत?

एकर नीमन से मिलजुल हिसाब होइत ,
बुझ जइतीं हमहूँ कि भविष्य में का होइत?

काश हमार जिंदगी सचमुच में किताब होइत ,
फार सकतीं ओह पन्ना के जवन उदास होइत ,

जोड़ सकती ओह लम्हा के जवना से उपकार होइत,
का पवनीं का गववनीं एकर नीमन से हिसाब होइत,

वक्त से आँख चुरा के आपन सपना साकार होइत,
काश हमार जिंदगी सचमुच में किताब होइत,

कुछ खुशी के पल हमरो सरताज होइत ,
जेठ-बड़ के आपस में राय सलाह होइत ,

परिवार में खुशी के छन के आगाज होइत,
भोजपुरी में लिखे के नीमन-नीमन एहसास होइत,

काश हमार जिंदगी सचमुच में किताब होइत ,
पढ सकती हमहूँ कि आगे आगे का होइत?

- **बृज मोहन उपाध्याय**

मोका हाथ से निकल जाई

आँख ना जुरी रोवे के जब
मोका हाथ से निकल जाई
रोक लीं ना त ई माई भाषा
अबकी रसातल में चल जाई

पर-पट्टीदार लो' हलुक जान के
खूब मजाक उड़ावत बा
कुछ कपूतन के कारण दोसर
हाड़ फोर-फोर गरियावत बा

आपन माई जब ना रही त
केकरा के माई बूझल जाई
रोक लीं ना त ई माई भाषा
अबकी रसातल मे चल जाई

अपने बेटवा जब आन्हर हो के
अपना माई के चीन्हत नइखन
आन के पतल चटिहें बाकी
ए माई के गुण गिनत नइखन

टुवरा-टुवरा सभे कही तब
हाड़ के भीतर ले हल जाई
रोक लीं ना त ई माई भाषा
अबकी रसातल में चल जाई

हृदयानन्द विशाल कहे अब
देर कइला के ताक नइखे
देश-विदेश में कवन जगह जहाँ
भोजपुरिया के धाक नइखे

धरमराज शशि अनिल हरेन्दर
माइये भाषा में लिखल जाई
रोक लीं ना त ई माई भाषा
अबकी रसातल में चल जाई

- **कवि हृदयानंद बिशाल**

गवनहरी के पँइयाँ

गते-गते परे गवनहरी के पइयाँ,
बड़ा नीक लागे, टुटलकी मड़इया।

बोले जब मुरुगा बिहाने भोरहरिया,
मरदा आ मेहरी करेले गोलवरिया,
बछवा के देखि-देखि हूँकुरेली गइया।
बड़ा नीक लागे, टुटलकी मड़इया।

घरऽ घरऽ बोलेली बेहुड़ा में रही,
जवन सुख मिलेला कि कँउची' हम कहीं,
बोलेला कागा जब पात के पुलुइयाँ।
बड़ा नीक लागे, टुटलकी मड़इया।

खेलेले झुनिया के संगे ललमुनिया,
गेंग जब होला त चलावेले छिकुनिया
ढोवेला मँगरू के ढोंढ़वा पिठइयाँ।
बड़ा नीक लागे, टुटलकी मड़इया।

खायेके मिलेला राब रोटी चटनी,
करेले 'अनारी' कुबेरा ले खटनी,
हा-हा-ही-ही में मेटेला सेहरइया।
बड़ा नीक लागे, टुटलकी मड़इया।

- **बृजमोहन प्रसाद "अनारी"**

खाके दवाई

सीता, सावित्री हमहीं, बनबी मीराबाई हो
जनि मूववावु माई हमके, खाके दवाई हो

करबू कुकरम, लागि भारी हतियारी
देबे लगीहें गारी पाताऽ लगते 'अनारी'
जहर होइ जिनगी चलबू मुहं चोरवाई हो
जनि मूववावु माई हमके, खाके दवाई हो

छोड़ी देबु जियत तऽ बाजी कहियो बाजाऽऽ
आई बरियाती संगे रहीहें दूल्हा राजाऽऽ
गारी गवाई दुअराऽ बाजीऽ शहनाई हो
जनि मूववावु माई हमके, खाके दवाई हो

पितर नेवतबु तूँ, मानरऽ के पूजी के
लावा मेरइहें भईयाऽ देबु जवन भुजी के
दिहेन कन्यादान बाबाऽ जाँघि पर बइठाइ हो
जनि मूववावु माई हमके, खाके दवाई हो

बेटी हम बन तानी, हमरो अफ़सोस बाऽऽ
लेता दहेज त समाज के न दोस बाऽऽ
लिखनी बिधाता के केहू ना मेटाई हो
जनि मूववावु माई हमके, खाके दवाई हो

आपन वाली करबू, ना सुनबु घिघियाइल
त दर-दर के ठोकर खईबू फिरबू बिलाइल
हो जइबू कोढ़ी चाहे, चरक sफूटी जाइ हो
जनि मूववावु माई हमके, खाके दवाई हो

- **बृजमोहन प्रसाद "अनारी"**

गोल्हरी

गोल्हरी हमनिएँ के सम्हकउरिया रहलि ह। हमनी के सड्हे हरदम खेली । नौ बजते कहबिजा कि चलु पढे तऽ ऊ त जाए के कही बाकिर ओकर माई कहिहें कि हमार बेटी पढे ना जाई तहनिएँ के जा जाँ। पढि-लिखि के कमाई ढहिहजाँ।

ओकरे भइया के देखनहरू अइलें। लइकी पढलि-लिखलि ना रहे त ना क दीहल लोग। माँग रहे कि कुछू ना त नाँवों-गाँव लिखे वाली पतोहि चाहीं । भाई त इण्टर क के बहरा कमात रहलें। एइसन कइ बेरि भइल रहे। पढुवा लइकी वाला इनहीं के नापसन्न क दे आ ए लोगन के बेपढ़ल चाहीं ना।

एकदिन इहे कुल्हि बाति चलत रहे कि सुमन फूआ कहली- "भउजी ...? अपना बेरि त पढ़ल-लिखल पतोहि चाहीं आ आपन अनपढ़ बिटिउवा काहाँ बियहबू ? आरे, एही खतिर एक दिन झँखे के परी झँखे के, पोंसऽ पोंसुआ, पढाव जनि। देखतड़ू अब केहूके बेटी बिना पढ़ल रहतड़ी? सभ लोग पढावता अब जबाना पहिले के नइखे रहि गइल.., चलल बाड़ी बतियावे।" फूआ के झारल देखिके गोल्हरी के माई हँसत कहे लगली- "बबुनी खूब बतियावेनीं। ई बताईं कि हमरा घर में बेटी के पढ़ल सहेला? नन्हे के बेटी पढ़े लागलि त बड़की बेमारी में चलि बसलि, रउवा नइखीं जानत का?"

"हँ, कवनो कारन होखे पढ़लके से मूवलि । इहे घोखिके बइठल बाड़ूजा? ...ए दादा! अरे, होनी के के जानऽता? ओकरा खातिर पढइए जिम्मेदार बा? जा जनि पढावऽ ,बूझिहऽ अनका के का करेके बा? तहरा से बतियावल आ भँइसि के आगे बीन बजावल बरोबरे बा। जवन बूझाय तवन कर , हट हिंहाँ से।"

का जाने कइसे परभाव परल कि गोल्हरी के माई फूआ के हाथ पकड़ि के कहली- "देखीं! आजु रउरिए बाति पर अपनी बेटी के हम पढ़े भेजबि ।..का अबसे ऊ पढ़ि पाई?"

"काहें ना..कवनो बूढि नइखेनू हो गइलि। भेजऽ।" कुसुम फूआ कहली।

गोल्हरी अब पढे जाए लागलि। एक दु साल त पीछे रहलि बाकिर बाद में हमनिएँ के सड्हे पढे लागलि। सड्हे पढत हाई स्कूल पास कइलसि ना कि ओकरे माई के ओकरी बियाहे के फिक्किर सतावे लागल। लागल घर बर खोजाए। खोजात भर में इण्टरो क लिहलसि। आखिरकार पर्हु फगुनवे में ओकर बियाह होइए गइल्।

दु दिन भइल , गोल्हरी के माई रसगुल्ला लेके आइल रहली ह। फूआ पूछली ह कि ई कइसन मिठाई ह भउजी? त हँसत कहत रहली ह कि ए बबुनी! गोल्हरा बेटी आइल बाड़ी।"

"हँ..त बाएन त कल्हुए खियवलू, ई दोहरावन केइसन?" गोल्हरी के माई बीचे में बोल परली ह कि ए बबुनी, गोल्हरी के जाते ओकर आँगनबाड़ी में नोकरी नूँ लागि गइल ह। ओकर ससुर बड़ी चालू-पुरजा अदिमी हईं, हरदम बड़का लोग के साथे रहनीं, ओही से लगवा देहनी हँ।कुसुम फूआ कहुवी- "वाऽह!आ..आ गोल्हरी पढले ना रहित त.. का नोकरिया हो गइल रहित?तूँ त कहत रहले कि बेटी के पढ़ल तहरा सहबे ना करेला, त ई बतावऽ कि अब सहता कि ना?आजु त मिठाई बाँटतड़ू। गोल्हरी काहाँ बीया?"

गोल्हरी के माई का कहें ,सकुचाते हँसत कहुवी- "बाड़ी..अइहें, अबहिन तनी लजाताड़ी।..सही कहनीहँ बबुनी, हमसे बड़ा बड़हन गलती होत रहे,ऊ त.. रउरी बाति पर हम पढ़े भेजे लगनीं ना त हमार धीया के का होइत? सब रउरे देन बा। बबिया ई बाति कहेले कि फूवे के चलते हम पढले बानीं।"

" अब त हम सबसे इहे कहब कि तनी कम्में में रहींजा बाकिर बेटा क सड्हे बेटियो के पढाईंजा लिख आईंजा, उहे उनुकर सबसे बड़हन धन बा आगे जिनगी में।" फूआ हँसत रहली-"हँ..हँ अब त सबके उपदेश देबे करबू ,रगुताइन जे हो गइलू।"

माया शर्मा
उ. म. वि. नेहरूआ कला पो. भठवां बाजार, प्र.–पंचदेवरी
जि. गोपालगंज , बिहार

जात-पात

भोरे हाईइस्कूल के बगल में एगो मड़ई में टिशन पढ़ावत विनोद मिसिर के दशवाँ क्लास के एगो लइका छेड़लस-'सरजी रउआ अबहीं ले बियाह काहें ना कइनीं? सुनले बानीं रउआ साथ के पढ़निहार टोला पर के वीरेन्दर गौतम जी के लइका इस्कूल जाए लायक हो गइल बा।'

"अरे वीरेन्दर के सरकारी नोकरी बा आ उहो नोकरी कवनो कमसिन नोकरी नईखे। ऊ बीडीओ बाड़न,त उनसे हमार बरोबरी कइसे हो सकेला?

एह जुग में बिना कवनो निश्चित आय आमदनी के बियाह क के घर गिरहस्थी कइसे सम्हाराई?"

एतना कहत भर में विनोद मिसिर के मुँह सुरुज डूबला के बाद के लटकल सुरुजमुखी जइसन हो गइल।

'सुने में इहो आवेला कि रउआ महेंदर गौतम से पढ़े में बहुत तेज रहनीं फेर राउर नोकरी अबहीं ले काहें ना भईल सर जी?' पढ़ुआ लईका एक बार फेर बिनोद मिसिर के उटकरलस।

बिनोद मिसिर के अइसे लागल जइसे बरिसन पहिले के ठीक भइल उकवत के केहु कोंहड़ा खिया के उपाट दिहले होखे।

उनकर आँख में नदिया के हिलला से दही के ऊपर उतराइल पानी के जइसे लोर बिटोरा गईल।

एकाएक बिनोद बाबू अपना इस्कूली जीवन में चहुँप गइलें,जब सरकारी मिडिल इस्कूल के आठवाँ क्लास में पहिला बेर उनका महेंदर से भेंट भइल रहे।

महेंदर त कहे के दलित पलुवार के रहलें लेकिन उनकर बाबूजी पराइमरी इस्कूल के मास्टर रहलें,एहीसे उनके सातवाँ ले के पढ़ाई उनका ममहर विजयीपुर के नामी मन्टेसरी इस्कूल में भइल रहे।

लेकिन एकरा उलटा बिनोद मिसिर घर के स्थिति निमन ना रहला की वजह से बचपने से सरकारी इस्कूल में पढ़त आवत रहलें।

बिनोद मिसिर ओहि बेरा एकदम नवका सोच वाला लइका रहलें।ऊ जाति पाति में एकदमे बिसवास ना करस।

मन्टेसरी में पढ़ला गुने सभ लइका महेंदर से इयारी करे खातिर लालाइल रहें कुल।चूँकि बिनोद बाबू क्लास में सबसे तेज लइका रहलें एकरा कारन बहुत जल्दिए उनका महेंदर से बहुत करीबी इयारी हो गइल।बिनोद बाबू जहिया देर से आवें ओहि दिन महेंदर अऊर जहिया महेंदर देर से आवें ओहि दिन बिनोद बाबू एक दूजा के अगिला बेंच पर जगहि छेका के रखे लो।

दुनू जने के इयारी देख के लइका मने मन खूब जरें कुल।

बहुत लइका बिनोद बाबू के ई कहि के फोरे के कोशिश कइलें कुल कि महेंदर छोट जाति के हउवें उनसे इयारी मत राखऽ।

लेकिन बिनोद बाबू तनिको टस से मस ना भइलें।

कई बार त ऊ महेंदर के छोट जात कहला खातिर लइकन से मारा मारी भी क लिहले रहलें।

मैटिक के इम्तिहान में बिनोद बाबू फस्ट डिवीजन से अऊर महेंदर सेकेंड डिवीजन से एके साथे पास भइल लोग।

बाबूजी के मना कइला के बादो बिनोद मिसिर इंटर में महेंदर के साथे एके कमरा में रहि के पढ़लन।इंटरो में बिनोद मिसिर महेंदर से ढेर नम्बर पवले रहलें।

दुनू जने इंटर के बाद बीएचयू में पढ़े के बिचार बनावल लो काहें कि बिहार के इनवरसिटी तीन साल के डिगिरी पान साल में देबे खातिर परसिद्ध रहलीं कुल।

लेकिन बिनोद मिसिर के भाग साथ ना देहलस।बीएचयू के इंटरेंस में महेंदर से एगारह नम्बर अधिक पावला के बादो बिनोद के बीएचयू में नाम ना लिखाइल जबकि महेंदर के नाम उनका जाति के कोटा में आराम से लिखा गइल।

आठवाँ क्लास के बाद पहिला बेर दुनू इयार बिछड़त रहे लोग एह से दुनू जने एक दूसरा के पकड़ि के खूब रोवल लोग।
लेकिन ओकरा बादो बिनोद मिसिर हिम्मत ना हरलें अऊर एक साल अउरी तइयारी क के अगिला साले उहो बीएचयू चहुँप गइलें।
बिनोद मिसिर साँझी खान बनारस में बच्चा सन के घरे जा जा के टिशन पढ़ा के अपना पढ़ाई के खर्चा निकालस।
महेंदर के बीए बिनोद मिसिर से एक साल पहिले पूरा हो गइल।ओकरी बाद महेंदर नोकरी के तइयारी में इलाहाबाद चलि गइलें।

एन्ने बिनोद मिसिर एक साल बाद गोल्ड मेडल के साथे बीए पास भइलें।
बेटा के गोल्ड मेडल पावत देख के बुढ़ऊ मिसिर जी के हियरा जुड़ा गइल।
औकात ना रहला के बादो खेत बान्हे रखि के बिनोदो मिसिर के तइयारी करे खातिर इलाहाबाद भेज दिहलें।
फेर से दुनू इयार एक्के कमरा में रहि के तइयारी करे लागल लोग।
संजोग से बिनोद मिसिर के पहुँचला के एक्के साल बाद महेंदर के बीपीएससी निकल गइल अऊर ऊ बीडीओ बनि गइलें।
फेर से दुनू इयार लोग बिछड़ गइल।इलाहाबाद से नोकरी लागला के बाद आवे के बेरा दुनू इयार गले लाग के खूब लोर बहावल लोग,लेक़िन एह बेर के लोर खुशी के लोर रहे।
महेंदर कहलें जल्दी तहरो नोकरी हो जाई, भाई।अउर अगर ना भइल त हम त अब गवरमेंट में समाइए गइल बानीं।कवनो ना कवनो बेवस्था जरूर हो जाई।
महेंदर के अइला के एक साल बाद तक बाबूजी के पइसा से बिनोद मिसिर इलाहाबाद रहि के जी जान से तइयारी कइलें लेकिन दूरभाग अउर आरक्षण के मेहरबानी से कबो एक नम्बर कबो दू नम्बर से छँट गइलें।एन्ने खेत के पइसा भी ख़तम हो गइल अऊर बाबूजी के तबियत खराब रहे लागल। एह से इलाहाबाद छोड़ल बिनोद मिसिर के मजबूरी हो गइल।तबसे ऊ घरहीं रहि के टिशन पढ़ा के घर के खर्चा निकालत बाड़ें आ संगे संगे सरकारी नोकरी सब के इम्तिहान भी दे तारें।

बिनोद मिसिर के मन में इहे कुल पुरान बात सनिमा के तरे पारा-पारी चलते रहे, तबले मड़ई के सामने एगो चरपहिआ रूकला के आवाज़ से उनकर ध्यान टूटल।
बाहर निकल के देखलें त सुट बुट के संगे चश्मा लगवले महेंदर के देख के मुस्कुरा उठलें।
दुनू इयार लोग गले मिलल।हाल चाल भइल।
लेकिन अबकी बार महेंदर के हाव भाव कुछ बदलल लागत रहे।
फिर भी,ओकरा बाद तनी संकोच के संगे बिनोद मिसिर कहलें कि हम कई दिन से तहरा से एगो बात ख़ातिर फोन करे के चाहत रहनीं हँ।
महेंदर कहलें- हँ हँ बोलs बोलs।
'भाई अबकी बार बिहार के क्लर्क वाली बहाली के परीक्षा हम पास कर लेले बानीं।'
'अरे वाह ई त बड़ी खुशी के बात बा हो।ई बात एतना संकोच के काहें कहs तारs हो' महेंदर कहलें।
'हँ खुशी के बात त बड़ले बा लेकिन बहुत लमहर एगो समस्या बा।'- विनोद लमहर साँस लेके कहलें।
--का हो?
-इहे कि सबकुछ भइला के बाद भी नोकरी देबे खातिर एक लाख रुपिया घुस मांगs तारें कुल।हम जइसे पचास हज़ार रुपिया के बेवस्था त कर लेहले बानीं लेकिन पचास हज़ार रुपिया अउरी के कवनो जोगाड़ नइखे लागत।हम चाहs तानीं की ऊ तूँ हमके दे दितs त हमार नोकरी हो जाइत।बिनोद मिसिर एक्के साँस में पूरा कहि गइलें।
ई बात सुनके महेंदर ठठा मार के हँसले।
उनकर हँसी देखि के बिनोद के बिस्वास हो गइल कि हमार काम हो गइल।उहो मुस्कुरा उठलें।
लेकिन ई का हँसी रूकला के बाद महेंदर के मुँह से जवन निकलल ऊ सुनके बिनोद मिसिर के लागल कि अब करेजा बइठ जाई।
महेंदर कहल शुरू कइलें-हमरा इयाद बा बिनोद पंडीजी! हमार बाबूजी बचपन मे बतावस कि हमनी के बिरादर के ऊपर तहार जाति बड़ी अतिआचार कइले बा।
सुनले बानीं हमार बाबूजी जब मास्टर बनलें त मिसिरटोला के लोग ई कहे कि पढ़ावल लिखावल त

हमनी के काम हऽ ई सब त गुरु के महिमे गिरा दिहें सन।

त बिनोद गुरु! जी अब ई जवन अपना बिरादर वाला काम रउआ मिलल बा अऊर गुरु पद के महिमा बढ़ावे के मोका मिलल बा तब क्लर्की खातिर काहें परेशान बानीं।पढाईं ना! एइमें का परेशानी बा? घर परिवार के खर्चा त चलिए जाता आराम से।

एतना कहि के महेंदर अजीब हँसीं हँसले।

फिर आगे कहल शुरू कइलें-

पचास हजार रुपिया त हमरा गाड़ी में रखले बा।

लेकिन ई हमार जवन नोकरी बा ऊ बाबा साहेब के देन हऽ।उहाँ के हमरे उपर कर्जा बा।एहीसे अपना टोला पर बाबासाहेब के मूर्ति लगवावे खातिर ई पइसा देबे के बा।

अगिला महीना जब मूर्ति लाग जाई त एकर उदघाटन रउरे से करवा दिहल जाई बिनोद माट साहेब।आखिर रउआ हमार मित्र जे हईं।

व्यंग के भाषा में एतना कहि के मुस्कुरात गाड़ी में बइठ के महेंदर गउतम चल दिहलें।

बिनोद मिसिर दस्ती निकाल के आँखिन से गिरत लोर के ओइसे रोके के कोशिश करे लगलें जइसे भादो के अन्हरिया में मड़ई में बइठल कवनों गरीब बरखा के चुवत पानी के तरकुल के पतई से रोके के परयास करत होखे।

इतने में एगो लइका आ के पुछलस का भइल सरजी!!

बिनोद फफक के कहलें बाबू आज सीख मिलल हऽ आरक्षण खाली नसीबे ना बदलेला,सोचे के तरीका भी बदल देवेला।

ई फेर से समाज से सद्भाव के लील घारे खातिर मुँह बवले खड़ा बा,जबले ई रही जात-पात ओराए वाला नइखे।

एतना कहते बिनोद मिसिर के दाँत लाग गइल।

- **सर्वेश तिवारी**

ग्राम-कल्यानपुर,भोरे,गोपालगंज बिहार।

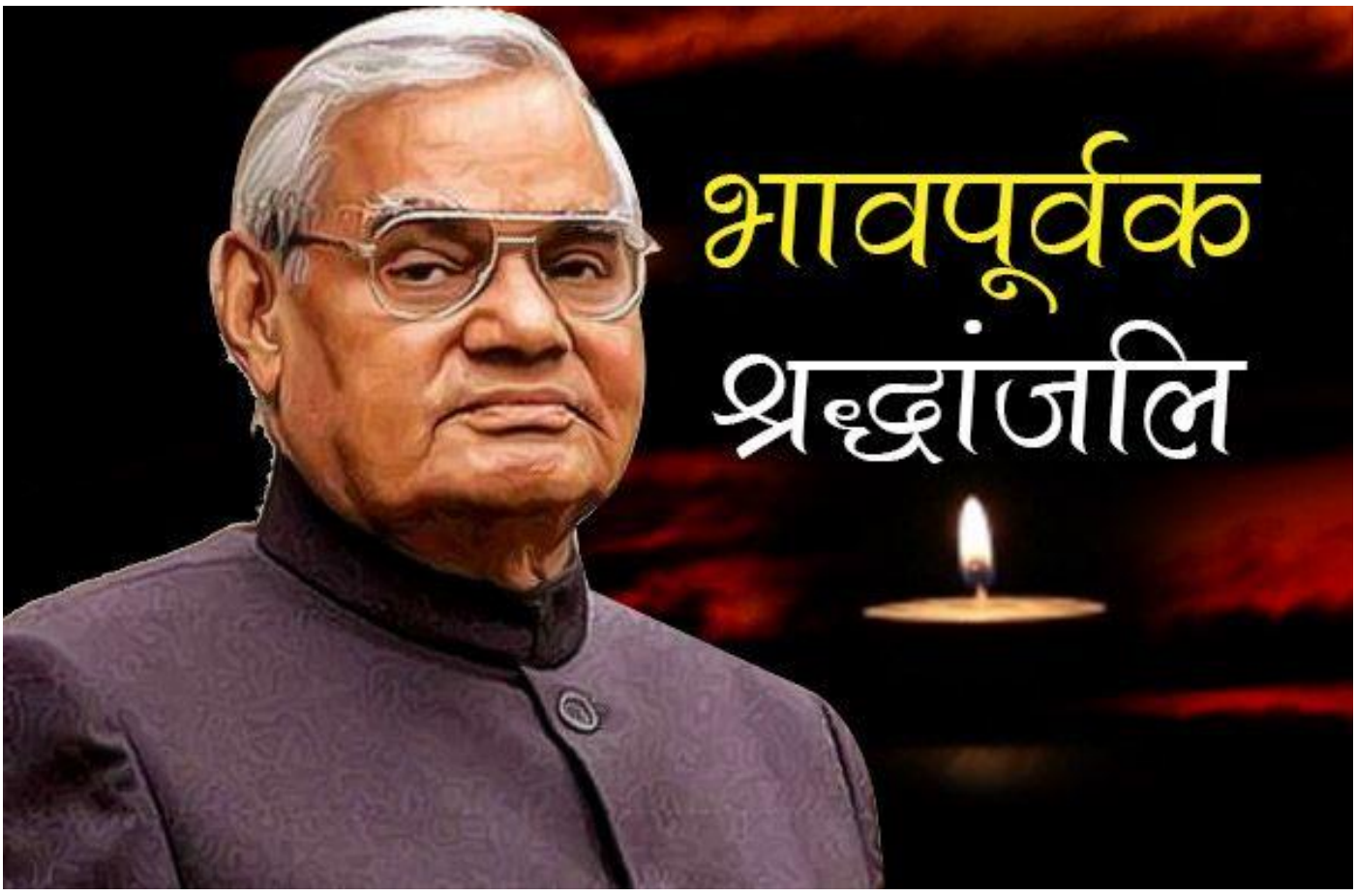

भोजपुरी ग़ज़ल

रहे दीं, बनउआ दस्तूर निभाईं काहे?
दिल में बाटे दूरी, हाथ मिलाईं काहे?

जीयत रहनीं तबले, भरि नजरी ना तकनीं,
मुअला प मइयत के कान्ह लगाईं काहे?

पत्थल से माथा पऽ जब घाव मिली हमरा,
आँगन में फरवाला गाछि लगाईं काहे?

एकदिन पलखत पाके डँस लीही हमरे के,
बिखभरल सँपोलन के दूध पिआईं काहे?

दम बा बाँहिन में त, मूठी में बा दुनिया,
बनि के हम भिखमंगा हाथ बढ़ाईं काहे?

सोझा मधुरी बानी आन्हें गरियावेला,
अइसन दुइमुँहवन के मीत बनाईं काहे?

झुकनीं ना, ना सिखनीं, सुननीं ना पुरुखन के,
लूर ढंग ना बा 'संगीत' सुनाईं काहे?

- **संगीत सुभाष**

प्रधान सम्पादक - "सिरिजन"

आव आव बदरा

आव$,आव$,बदरा बहार बनिके,
सोना, चाँदी,मूंगा,मोती जस फुहार बनिके|

भले दुवरा भींजे गइया,
नदिया चले लागे नइया,
भरी जा पकावा इनार,
भरी जा तालावा तालाब,
बदरा घिर घिर आव$ के बारिश बौछार बनिके|
सोना,चाँदी.....

लागल खेतवा में धान,
बाट जोहता किसान ,
नाहीं अइब$ त सुखि जाई,
बाल बच्चा सब का खाई,
आव सुखल,सुखल धान के ओहार बनिके|
सोना,चाँदी.....

धरती के फाटल छाती,
उड़े लागल हवा में माटी,
भइल ना अबहिन ले नहवावन,
करित$ धरती के परिछावन,
आव पानी लेके धरती के सिंगार बनिके|
सोना,चाँदी.....

- **रवि शंकर तिवारी "बिट्टु"**

माई से ही आइल

आमें के बउरी से महकत भाषा
माँ पहुँचवली
अन्तःस्थल में हमरा ..
मातृ भाषा .....
पूर्वाह्न के रंग-लग्न
समा गइल पोर-पोर में दूध के मिठास से
माँ से ही आइल फसलन के हरियरी हमरा भित्तर
राति में चन्द्रमा के नीम -मीठ उजियार में सपना आइल
माँ के गरम गोद में सुत्तत हमरा नियन शिशु के
पृथ्वी से कम बड़ नइखे माँ क चुम्बकत्व
उहाँ प्यार भरल अइसन ओरहन ह जहाँ रोमिंग ना लगे
जहाँ प्रत्येक शब्द ह : ऊर्जा, साहस, प्रार्थना
नया रस्ता के स्थापत्य के आँकत आँख
एगो अइसन अभिकेंद्रक जवन महुवा के फूल नियन
परिधि में छितरा जाला
इयादन के ऊ पुरान पिटारा हमरा आँखिन में हवें
हमरी भाषा में हवें,
हमरे आँसुन में हवें ऊ तमाम दिन
कालहीन चिरंतन मानस के लभ्य अँगनाई, जहाँ हम खेल लीं कूदलीं
श्रद्धा , विस्मय , मुग्धता से आगे जाके
कवनहूँ लघुता क हो जाला तोहरा में बड़प्पन, माँ
हर वनस्पति हो जाले सार्थक तोहमें
ख्याति के अहंकार , विलोपन के त्रास , कर्म के जटिल आवरण टूटें बार -बार
हम चाहीलाँ
हम चाहीलाँ अँधियार राति में , असमय में
तोहरे वात्सल्य क महकत स्पर्श
हमके विकल्प के भविष्यत क नया वासर दे
एक मानुषी उजियार से जवन देहले रहलू रंगन के आवृत्ति तूँ
हवा के गंध बनिके पदचाप नियन खनखनाले हमरा भित्तर
ऊ तुँहई हऊ , जेसे बतिया के भोजपुरी नया अर्थ पावत रहल
ऊ तुँहई हऊ , जेकरा खातिर हम " रउवाँ " इस्तेमाल न कइलीं
तोहसे स्वस्ति -वचन लिहलीं हम
बाकिर अपन व्याकरण स्वयं निर्मित कइलीं , जइसन तूँ चाहत रहलू
तोंहसे कहिके कुछऊ हम हो जात रहलीं मुक्त , निर्भय
खाली तुँहई रहलू जहां हम कहि सकत रहलीं सब कुछ
भाषा जहाँ अपर्याप्त रहल आ हम निरुत्तर
अक्षर शब्द वाक्य से परे तूँ ...
लाख योजन भी तुम दूर चलि गइल होखले भलहीं
हमरा अंदर हवे तोहरे ऊर्ध्वशिखा क विपुल विश्वास
सृष्टि क साँस।
गेना के पीयर मँहक में
सन्तरा क मिठाई जवन तोहके पसंद रहल
हरियर धान के गंध क चिउरा जवन तोंहके पसंद रहल
माटी के कसोरा में भेंटत हईं एह कविता-रूप में .

परिचय दास
कवि, निबंधकार , आलोचक, सम्पादक आ पूर्वसचिव, हिंदी अकादमी , दिल्ली व मैथिली - भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

यथार्थ के धरातल पर पड़ल पदचाप के गूँज "पहिलका डेग"

अपने माई भाषा मे साहित्य रचल आउर ओकरा जीयल , माई भाषा आउर अपना माटी खाति एगो लमहर समरपन होला । भोजपुरी भाषा के मिठास केहु से छिपल नइखे । भोजपुरी काब्य संग्रह "पहिलका डेग" , अशोक कुमार तिवारी जी के एगो आइसन फूल बा , जवना के उ माई भाषा के चरण मे अर्पित कइले बाड़े । वकालत के संगे संगे भाषा अउरी साहित्य के सेवा मे लागल तिवारी जी के रचना भाव प्रवण आउर गंभीर बाड़ी सन । उनुका पारखी नजर सागरो गइल बा । जवान कवि के परिपक्वता के बखूबी दरशा रहल बा । बाढ़ के तबाही नामक कविता मे कवि के पीड़ा छलक आइल बा , देखल जाव :

"केहू के लइका डूबल , डूबल केहू के नाती '
मरद मेहर केहू के डूबल सब पीटता छाती । "

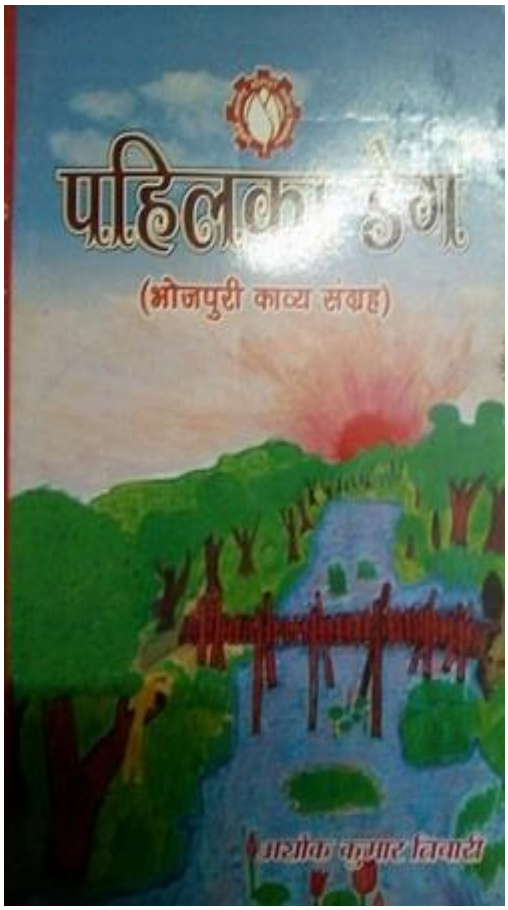

राजनीति आउर भ्रष्टाचार पर प्रहार करत कवि कह रहल बा –

नेता लोग एही मे , सेके राजनीति के रोटी
सरकारी अधिकारी सेट करे बस आपन गोटी

समाज मे फइलल बुराई से कवि के कोमल हिया आहत आउर घायल बाटे , जवना के बिम्ब भ्रूण हत्या वाली कविता मे दीख रहल बा । देखल जाव –

" बोलऽ माई कवन बाटे गलती हमार रे
पेटवे मे चाहत बाड़ू डीहल हमके मारि रे"

पश्चिमीकरण के बढ़त प्रभाव आउर ओहमे छय हो रहल गाँव , संस्कार अउरी संस्कृति के दरद " गाँव होई नापाता " मे खुल के दीख रहल बा –

शहरीकरण के हवा चलत बा
रोजो गाँव बिलाता
कुछुवे दिन मे अइसन होई
गाँव होई नापाता

****
****

माटी के जगहा साबुन बा
उबटन कहाँ मलाता
कुछुवे दिन मे अइसन होई
गाँव होई नापाता ॥

कवि के नजर हर ओह जगहा पर गइल बा , जवन देश आउर समाज के दशा दिशा नीमन ढंग से परिभाषित करेला । कहीं त ओकर अच्छाई बतावत ना हिचकेला , आउर कहीं ओकर कमी बतवहूँ मे कंजूसी ना देखावेला । देखल जा सकत बा "समय" कविता मे –

समय बिगड़ेला तऽ आफ्नो वीरान हो जाला
घुंटि घुंटि मरे पर मजबूर , ईंसान हो जाला

मुखिया जी के शौचालय कविता मे आज के राजनैतिक स्थिति के छुवत बहुत नीमन ढंग से समाज के सोझा आपन बात राखे मे सफल बाड़ें । देखल जाव –

शौच करे बेटी – पतोहि के , बाहरी जनि निकाली
बाहर शौच करे गइल , नइखे खतरा से खाली ।

कवि के लेखनी बड़ी सुगमता से चालत हाइकु आउर सेनरयु मे दीख रहल बा । सेनरयु मे एगो चित्रण देखल जाव –

मन के बढ़ावल
नीमन ना ह
अपना जामल के ।

एह संग्रह मे कवनो कवनो कविता ढेर लमहर हो गइल बाड़ी सन , जवन पाठक लोगिन के धीरज के थाह ले रहल बाड़ी । छंद बद्धता पर कवि के मजगुत पकड़ बा । कवि के विनम्रता उनुके गीतन मे , उनुके गायन मे सोझा झलकेला । इ तारतम्यता बेबिघिन के चालत रहे आउर कवि अशोक कुमार तिवारी जी अइसहीं भोजपुरी साहित्य के भंडार के भरत रहें , इहे हमार शुभकामना बा ।

किताब – पहिलका डेग
कवि – अशोक कुमार तिवारी

- **जयशंकर प्रसाद द्विवेदी**

संपादक : (भोजपुरी साहित्य सरिता)
इंजीनियरिंग स्नातक ;
व्यवसाय : कम्पुटर सर्विस सेवा
सी -39 , सेक्टर - 3;
चिरंजीव विहार , गाजियाबाद (उ. प्र.)
फोन : 9999614657
ईमेल : dwivedijp@outlook.com
फ़ेसबुक : https://www.facebook.com/ jp.dwivedi.5
ब्लॉग: http:// dwivedijaishankar.blogspot.in

एतना हऽ दरद जमाना में

एतना हऽ दरद जमाना में
अँखिया से देखल न जाला,
अइसन हालात बा अदमी के
करेजा फटके रह जाला।
एतना.....
माई-बाप, बेटा और भाई
कउनो रिश्ता कुछहूँ ना,
जाने कउने लालच में
अपना के खून भी बह जाला।
एतना.....
खेत-दुआरी घरवा-अँगना_
बँट जाई तऽ हैरानी का!
घर के कउनो चीज के जइसन_
माई-बाप भी बँट जाला।
एतना.....
केकरा ऊपर करीं भरोसा
बीतल समय भलाई के,
दुश्मन तऽ दुश्मन होला
दोस्त के गरदन कट जाला।
एतना.....
पाकिट भरल बा तोहर
तऽ इ सउँसे दुनिया तोहरे बा,
खाली तोहर पेट देखके
दुनिया पाछे हट जाला।
एतना.....
केहू के बढ़िया खाना बा_
पर भूखे नइखे पेट में,
केहू भूख के मारल देखऽ_
जूठा पत्तल चट जाला।
एतना.....
सुख के घड़िया बितते ही_
अइले पहर जे दुखवा के,
सब दिन संघे रहेवाला
मीत भी तबहीं पलट जाला।
एतना.....

बंटी बारिद 'मुकेश'

भोरी भाई

भोरी भाई, भोरी भाई,
काहे कइलऽ चोरी?
का कउनों सपना
पसार देली गोरी?

ओड़ी-ओड़ी दुख केउ
कबले समेंटी?
छुधा आगि पानिएँ से
का केहू मेंटी?
इचिको ना रहे
तोहर घर में खरेंटी?
सुननी कि जूड़ी में
झुरात रही बेटी?
घुस गइलऽ नीमना हीं
भीत सेन्हँ फोरी?

कत लउर बाजल होखी
पेट प पीठाँस प?
कत कउर जरल होखी
बेकती के साँस प?
बजर घहर गइल
नन्हीं-नन्हीं घास प?
कत बून ढरल होखी
अनचीन्हे लास प?
मरलो प पाछ कील
कइसे के धँसोरी?

सुननीं कि रहली ना
तहरी किशोरी।
कनिया के ले गइल
थाना बरजोरी।
भोरी भाई,भोरी भाई,
कइसन कइलऽ चोरी?

- **दिनेश पाण्डेय**

आवास संख्या-१००/४००, रोड नं0-२] राजवंशीनगर] पोस्ट-शास्त्रीनगर], पटना-

एहसास

अमेरिका से जबे सत्यम के फोन आवे सविता परिशान हो जासि, एह बदे ना कि ऊ उनुकर अभाव महसूस ना करत रही, बलु 'अब ओहिके कवन चीझ के जरूरत होखी' अइसने सवाल सविता के दिलोदिमाग में चले लागे। ओइसे त बेटा-बहुरिया तकरीबन पाँच बरिस अगते अमेरिका चलि गइल रहन बाकिर एहि पाँच बरिस में मोसकिल से पाँचे-सात बेरि सत्यम घरे फोन कइले होइहें। खैर, जबे कबो सत्यम अमेरिका से वापिस अपना घरे आवसि त सविता के बजट बिगरि जाय, ई बात सौरभ बखूबी समुझत रहन। ऊ कय बेरि टोकले ''अरी भगिमान, जवन चीझ अपना बसे नइखे तेकरा बदे का परिशान होखे के बा, ओइसहूँ कभिए -कभार सही बेटा फोन त क लेता....।'' उनुकर आँखि के नमी ई बतावे बदे काफी रहे सविता खातिर कि बेटा के तड़प सौरभ में उनुका से कहईं अधिका बा। महीनन बाद आज फेरु सत्यम के फोन आइल रहे। स्क्रीन प जइसहीं सत्यम लिखाइल सौरभ खुशी से फोन उठावत कहले - "सत्यम के फोन ह.... अब कवन चीझ के कमी हो गइल होई.." सविता एही सोच में डूबल रही कि सौरभ के अतिना खुश देखि के खुद के ना रोक पवली। "का कहलसि सत्यम जे अतिना खुश बाड़ऽ।" "कुछ खास त ना बाकिर अब ऊ हरमसे खातिर भारत आवल चाहत बा। साइद ओहिके आपन गलती के एहसास हो गइल बा। ई कहत-कहत सौरभ सविता के अँकवार में भरि लिहले।

जितेन्द्र उपाध्याय

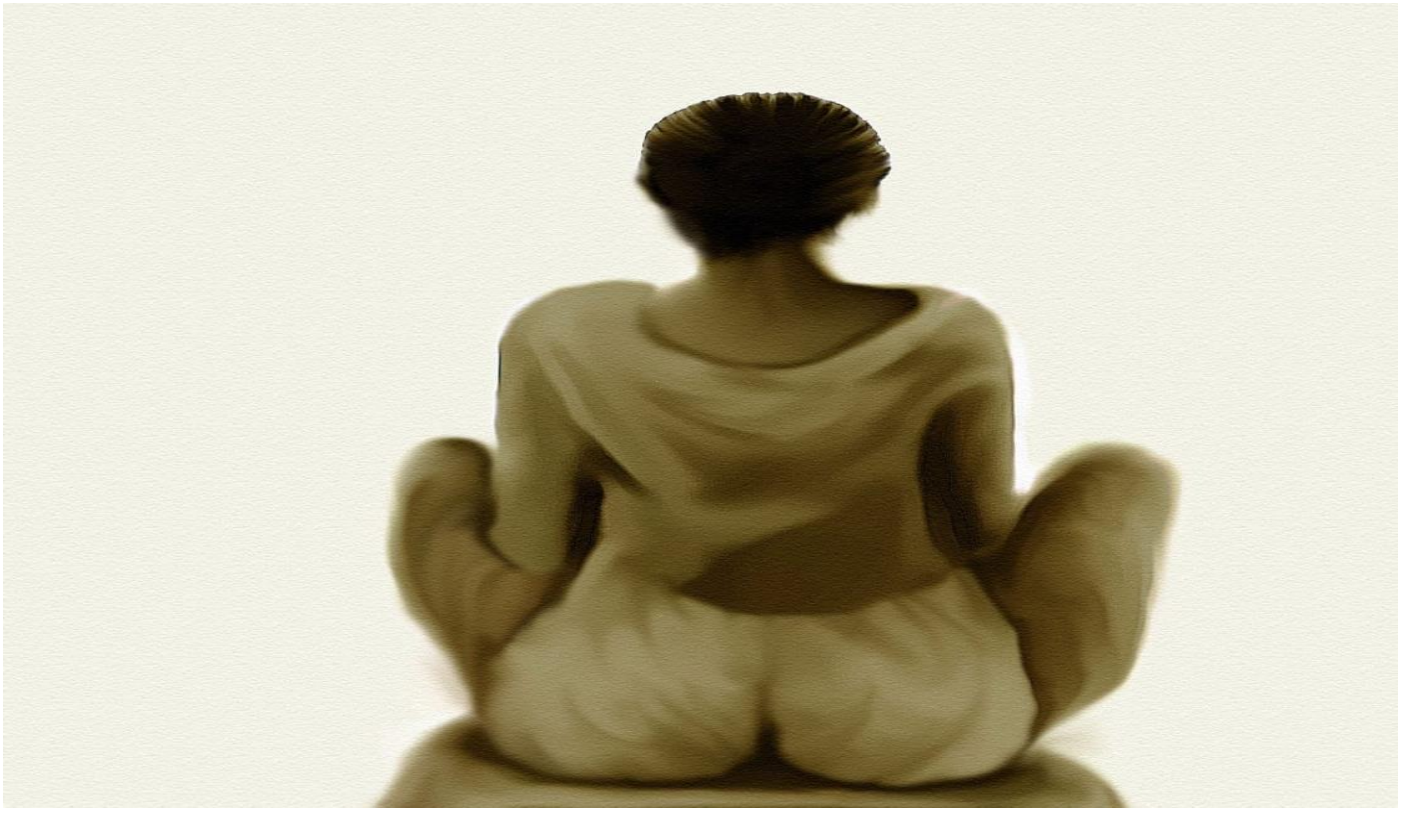

इहे ह$शासन..?

बापू के बानर ना हम चुप रहब,
देखब सुनब जवन तवन-तवन कहब।
अधिका का करबऽ हमरा के मरबऽ,
फ़ज़ीहत के अब का फ़जीहत तू करबऽ।

तोहरा के खीर पूड़ी हमरा के भासन,
इहे हऽ शासन?

हमरा के पाठ एकता के पढ़इब,
अपने तू रोज नया पार्टी बनइब,
धन बाड़ नेता जी धन बा ईमान,
काहें ना कहब तू भारत महान,
ठेहुने भर पानी बा खूब काटऽ चानी,
मिलल बा कुर्सी करऽ मनमानी,
मड़ई मोहाल मोहें तोहके इन्द्रासन--

इहे हऽ शासन..?

का खाई गइया अब बछवा बेचारा,
हउ हत्यार देखऽ खा गइल चारा,
राछस समाइल रहे खा गइल खाद,
एहि खातिर भइल बा देश इ आजाद,
नेता सुभाष रहले बिस्मिल उधम,
देश खातिर खा गइले गोली आ बम,
हई बेसरम देख पीये किरासन--
इहे हऽ शासन?

थाना में रजिया के इज्जत लुटाइल,
पेपर में आइल पत्रकारो पिटाइल,
निकलल दरोगा जब मंत्री के साला,
मेडिकल रिपोटों में भइल घोटाला,
माइंड डिस्टर्ब बा रिपोर्ट रहे लागल,
एमे पढ़ल बेटी हो गइली पागल,
त केके गोहरब जब कृष्णे दुशासन--
इहे हऽ शासन?

हॉस्पिटल सरकारी से सबहीं डेराता,
जहवाँ दवाई ना डॉक्टर भेंटाता,
ड्यूटी के छोड़ करे घरे प्रैक्टिस,
देखेला लेबे ले पाँच सौ फीस,
नीचे से ऊपर तक जुड़ल बा नाता,
गलती बा आपन अब इहे बुझाता,

मरतीं जा खाँचके,
लऽ हई ओट ह,
डंकल के चोट ह,
हर्षद के नोट ह,
बिजली कटौती ह,
कुर्सी बपउती ह,
हइ हल्ला बोल ह,
घोटाला तारकोल ह,
पियाज महँगाई ह,
घोटल दवाई ह,
हइ दलबदल ह,
आ हइ ओकर हल ह,
अब्दुल्ला बुखारी हउवन,
सन्त ब्रम्हचारी हउवन,
बाबरी महजिद ह,
हइ राम जनम भूमि ह,
अल्ला इस्लाम ह,
खतरा में जान ह,
जात हाइ बड़का ह,
जात हाइ छोटका ह,
आरक्षण आतंकवाद ह,
हइ समाजवाद ह,
राम जी के रथ ह,
गन्ना के रस ह,
चरवाहा स्कूल ह,
अखाड़ा के धूल ह,
सोना के कुर्सी ह खूब देंह अइठ,
आ हइ बूथ कैप्चारिग ह पाँच बारिस बइठ।।

- **फजीहत गहमरी**

गोविंद राय के पट्टी,
ग्राम पोस्ट-गहमर
जिला- गाजीपुर (उ.प्र.)

बेटी

सभके जनमावल, बेटिये के कइल बा।
सभ केहू दुश्मन,आज बेटिये के भइल बा।।

तबो समझे ना केहू, बा लो कोखिये में मारत।
दहेज के लालची, बा लो अगिया में जारत।।
ये देशवा में,ना जाने का हो गइल बा.....

मान सम्मान सभ, गइल लो भुलाई।
माइवो त बेटी हई, देऊ लो मुवाई।।
लोग का बेटी के प्रति,काहे नफरत भइल बा.....

पापी पाप करऽ तालो,अपने ही कर से।
बच जाई धन, दान दिहला के डर से।।
बाप के बपौती,धन जइसे कि धइल बा.....

बेटी हई लक्ष्मी दुर्गा, काली सरस्वती के रूप।
उहे अचरवा से ढाकस, ना कहि बाबू के लागे धूप।।
तोड़ देला लो रिस्ता,ओसे रहत फइल बा.....

बेटी बिना सभ अधूरा बा काम।
जब बेटी ना रही बुरा होइ अंजाम।।
करबऽ का इयाद, केहू कह के गइल बा.....

करे के बा गौर, एपर देबे के बा ध्यान।
बेटी बचाओ, ना रुके के चाही अभियान।।
जन जन के अब,ई नारा भइल बा.....

दूध जदि पियले बाडऽ, तू माई के अपना छाती के।
खा लऽ किरिया अबसे, बचइह ए तू थाती के।।
ना हिरदय के करऽ कठोर, सम्मान दऽ तू बेटी के।
आवे वाला समय में तोहरा,मूल्य बुझाई बेटी के।।
छुआछूत के छोड़ऽ, कवनो ना एमें मइल बा.....

- **दीपक तिवारी**

ग्राम पोस्ट : श्रीकरपुर,थाना गुठनी,जिला सिवान (बिहार)

सरकत चुनरीया

अंते बसले पिया मोर जबसे गवनहरी के हाल भइल,
सर से सरके सर-सर चुनरिया लाजे गाल लाल भइल ।

आनी बानी मारत डगरिया पुरवइयो बउराइल
धीर धइले धरात नइखे मिलन ला मन अगुताइल
भय लागे भकसावन होखते महलिया अब जाल भइल
सर से सरके सर-सर चुनरिया लाजे गाल लाल भइल ।

ननदी बिया कंउचावत कबो कबो देवरन के टोली,
बिरह का अगिया के धधकावे कोइलिया के बोली।
उफनत यौवन धड़कत दिल के समझावल अब काल भइल,
सर से सरके सर-सर चुनरिया लाजे गाल लाल भइल ।

समझ ना पाईं रहीं कइसे भइल बेकहल पोर-पोर हो,
लाज सरम के बन्हन टूटी बिछिल जाई जब गोर हो,
कहत पैनाली चउरसो जगहिया हमरा ला खाल भइल,
सर से सरके सर-सर चुनड़िया लाजे गाल लाल भइल ।

- **दिलीप पैनाली**

सैखोवाघाट

असम

कुछ तीर कुछ तुक्का

लोकमन में ई किस्सा अबहूँले पेहम बा।

भादव महीना।साँझ का समय। कई दिन के झापस अब थमि गइल रहे, बाकी रह-रह के फुहिआय। रामबोला के लवटत अबेर हो गइल। इहाँ अइले मालूम परल जे रतना त लितहर संगे अनगुतहीं नइहर चलि गइली। अचके जइसे सभकुछ खलिआ गइल। कल्पना के अल्पना के सोख रंग सोख लिहलसि केहू। कवनो अटा प करिया घटा घहरा गइल जइसे। भीतरे कुछ भर्र-से भरक गइल। घर भायँ-भायँ करे-'बिनु घरनी घर भूत बसेरा'।

अब उनुका बदे इहाँ कुछू रहुवे का?

कइसे पाँव बढ़ चलल ससुरारि का ओर ई समुझ ना परल। केतना देर केतना दूर? कुछ दूर सोती, फिर ओपार। घरीरात चढ़ते चहूँप जाई अदिमी। घोड़चाल में भी सोती तक जात-जात गधबेर हो गइल। भादव के बदनाम अन्हरिया। गाँव-गिराम, अदिमी-जन, सभका भेव समापत। कुछ-कुछ अनेसा अगते से होत रहे, उहो साँच निकसल। हजार बेरि के आइल-गइल, जानल-बूझल, धाँगल-लाँघल सोती अब सोती ना रहे। छुदुर नदी के थोरहीं जल में तरइला-सुपूरा स्यात्कुनदिका- के पहिलका आ परतच्छ गियान। खलखल, हहरात जलधारा का हियाव का आगे दरियाव झूठ। तनिका धन पा के बउराइल खल अस भयगर, चुटकी भर में चुरुआ उपलाइल चूँटरी-सुपूरो मूषिकांजली- अस चंचल। नेति बरजे- "रजबंसिनी, नखसिंघी पसु, हथियारधारी मनई आ नदी कतिनों अनुकूल होखसि, जनि पतिआ।" बाकी पिरीत के रीत बिचित्तर हऽ भाई! ऊ कवनो नेति-अनेति के दाब कब मनलसि?

पाँव पाछा ना हटल। मन में एके बात आवे-"धुत् हइहे नू, कतिना पाट होखी? ना जाने कतिना सहि-सहि के सहाउर, गुरुजी का संगे पंचागिन में तपावल, कड़ेर-से-कड़ेर जोगासन के साधल देह आ उतपलावन बिधि के सीख कवनि काम के?" कब जमीन से पैर कबरल, कब दूनो भुजा बाना भाँजे के मुद्रा में हरकत करे लागल, कुछ भी सुचिंत-सुजोजित ना रहे। ऋग्वेद में हहरात नदी के अइसने धारा के कामातुर नारी (उषतीः इव)से तुलना भइल बा। आगा-पाछा, ऊँच-खाल, ढूह-डगर सभके कूदत-फानत, आपन चपेट में लेत, तनिक बाधा प तरंगन का झोंटा फहरइले खखुआत पगली अस सोती के बेग से जूझल रामबोला सरीखे सहज एकवाही पिरीत-भाव से भरल तरुन का बस में ना रहे। चेतन-अचेतन कुछुओ के रूप, दसा, दिसा अस्थिर भइला प कवनो हक-बक काम ना करे। खने-खने बदल जाए वाला के कवनो भरोसा ना। मति त पहिले से हेराइल रहे। डूबाह पानी में तरे-ऊपरे गोता खात अदिमी के कुछो अलम मिले। कहल जाला कि डूबत के तिनिको सहारा ह। अइसन में अठकठ बाँस के सीढ़ी हहुअइले हाथ आ जाय त फिर का पूछे के बा? ई देखे के अवसरि कहाँ रहे जे ऊ साँचो सीढ़िए ह भा कवनो दहत लहास।

भीतर से उपजल जानबचाऊ जूझ आहाथे आइल एह अलम के ई परिनाम भइल कि तनिक देर में पाँव जमीन से लागल। घटनाचक्र चलत रहल- भयावह सपना के कड़ी-दर-कड़ी अस। गिरत-परत, लस्त-पस्त, लेटल-पोटल, घनघोर अन्हरिया में राह तलासत, ससुरघर तक चहूँपत आधरात से ऊपर भ गइल। पानी अभिओं टिपटिपात रहे। रह-रह के बिजुरी चमके आ जाँता दरइला अस आवाज सगरे फैल जाय। रामबोला के दबल कंठ से निकसल सीमित पुकार बिजुरी के गड़गड़ाहट से हिगराय तब नू केहू के काने परे? अइसना हाल में चिचिआए के भी एगो हद रहे। ससुरार के लोगन के मन में एह निखिध मौसम में पाहुन के अधरतिया के अवनई ना जाने केतना मुँहामुँहीं के जनम दीही। जादे भइ त रतना के उड़ी। ऊ लोगन के कानाफूसी आ तंज का सामना कइसे करि पइहें। निहचै भइल जे कसहूँ चहारदिवारी फान के घूसल ठीक रही। रतना समुझवले-बुझइले आ हालत देखि के अवसि पघील जइहें। बादबाकी देखल जाई। एकाध घरइए के बीच बात रहि जाई।

ऊ घूमि के कुछ तजबीज कइले। पिछूती का ओरि दिवार के ऊँचाई कुछ कम लागल- इहे, तकरीबन टीकासन से हाथ भर ऊपर होखी। इहे ऊ बखत रहे जब उनुका ओरी से झूलत रसरी

प धेयान गइल। हाथ से धइला प कुछ अजीब लागल जरूर, बाकी एक त कुचकुच करिया राति आ दोसरे,एह लिजलिजापन के अहसास पर ओद मौसम में नम रसरी का भके कवनो सन्देह ना भइल। दोसरका हाथ से छान्ही के बाँस पकड़ाते कुछ पकड़ आ ओजन ढील हो गइल। रसरी का पलटा खा के फुफुकार छोड़त,हवा में गुलाटी खात, भद् से भुइयाँ गिरला का बाद बुझाइल जे बाप रे! ई त कुछ अवरू ह। डर का मरले धरती का बिपरीत जे हूमच के छलांग लागल त एकदमे छान्ह का ऊपर। तनीमनी खुरखुराइल आ फिनु बिलाई का कूदला अस आवाज भइल।

रतना गाढ़ नीनि में रही। आगा जवन घटल ओ मे भावनि के सिलसिलेवार रूप रहे- डर के, अचरज के, सनेह के, लाज के, खीझ के आ सभका पाछे देह के बिनासी सरूप के इयाद से उपजल निरबेद के। स्थाई भावन का संगे कतिना संचारी पानी का बुलबुला अस आइल-गइल होखिहें ई त उहे जाने जेकरा भोगे परल होखे। इहे ऊ बखत रहे जवना का बाद ओह अन्हार में रामबोला अंतरधान भ गइले। पूरुब से अकास कुछ साफ हो गइल रहे। चिरईं-चुरमुन कुलबुलाए लगले। परात बाऊ का संगे तुलसी के नयका पौध में हिलोर उठे लागल। कान में बेरि-बेरि प्रतिधुनि गूंजे-

"अस्थि चर्ममय देह यह, तासों ऐसी प्रीति।"

एतना त तय बा जे ऊ कवनो कविता के बखत ना रहे कि रतना दन् से एगो दहकत दोहा दाग दिहली जवन रामबोला के करेज ममोरि के ध दिहलसि। हँ कुछ संभावना के गुंजाइस अबहूँ ले बनल बा। एक, कि जदि रतनों कविकरम के जानकार होइहें त अगते के रचल ई दोहा उचित ओसरी पा के मुँह प आ गइल होखे। दोसर, कि ई दोसर केहू ना बलुक रमबोलेजी के कारनामा ह जवन बाद में कभियो मुक्तक रूप में, कवनो भावदसा में परगट भइल होखे। एगो इहो, कि कवनो अनाम कथक्कड़ भा कबि के गढ़ल, बदल ई चीझ लोकसुरुत का सकल में सगरे पसरि गइल होखे। काहे से कि बहुते बिदमान लोगन का नजर में ई सरबस घटना गपोड़ी के गप बुझाला। एकर कवनो पोख्ता साखी सबूत नइखे भेंटल।

इहाँ कथा के सचाई के बारे में पूरासाख तलासल कवनों मकसद नइखे। हर अदिमी बालपन से लेके अंत तक आपन जिनिगी के जीअल छन, दुख-तकलीफ, हरख-बिखाद, राग-बिराग आदि के अनुभव केहू-न-केहू से कबो-न-कबो परतच्छ भा परछन्न रूप में साझा अवसि करेला। तुलसी अस मुखर अदिमी, जे अपना बारे में खूब कहले, भर हूब कहले, ऊ एह घटना के बारे में एकदम-से मउन कइसे साध लिहलें? हो सकेला ऊ घटना साँच ना होखे। चाहे इहो हो सकेला कि ऊ साँच होखे। असहूँ कवनो बुधिमान अदिमी आपन हारल आ मेहरारू के लथारल सगरे गावत ना चले।

अदिमी के बेहवार तय करे में ओकर इच्छा आ स्मृति के मुख असर होला। मन के कवनों कोना में दबल-बसल कारण-सरूप इच्छा आ स्मृति अदिमी के भितरिया सोच अवरू बहरिया आचार-बेहवार में उजागर हो जाला। कवनों कलाकार कहईं-ना-कहईं आपन निहफल कामना से हतास होके तोस बदे कला मधे सोनहुला सपनलोक के सिरजन करे ला। तनिका सचेत हो के देखल जाय त रचना के भीतरे कवि के अतीत के छाहीं झिलमिलात नजर आ जाई- कहीं सोझे-सोझे त कहीं बहुरूपिया का सकल में, भेख बदलले। एह थिउरी के अँजोरा तुलसी बब्बा के रचना सँसार के हेरले-बिचरले अइसन रहसलोक भासे ला कि जनि पूछीं। बाकी इहाँ ई साफ क देल जरूरी बा जे ई बात छाती ठोंक के नइखे कहल जा सकत कि जवन देखल गइल भा जइसन देखल गइल ऊ हूबहू ओसहीं बा जइसन देखल गइल, आ इहो कि जइसन देखल गइल ओइसने कहल गइल आ जइसन कहल गइल ऊ ओइसने रहे। इहवाँ त हेरते-हेरते हेराए ओली बात बीया।

संभ्रमः स्नेहमाख्याति

एहि कहनी में कुछ ढूह बाड़न सन। ढूह याने टीला, ऊँच जमीन, जवना प चढ़ि के चारु ओरि तजबीज कइल जा सकेला। ढूह बान्हलो जाला, कुछू ढेरी रख के- एगो हद का रूप में। एह हिगरावट से काम अधिका आसान हो जाला।

त, एह कहनी में एगो ढूह ह-'संभ्रमः स्नेहमाख्याति'। एह बात के असहूँ कहल जा सकेला जे-'बेकरारी से बूझीं नेह'। नेह एक बेमारी ह। बड़ दुखदेवन। चाणक्य के कहनाम ह-

यस्य स्नेहो भयं तस्य स्नेहो दुःखस्य भाजनम्।
स्नेहमूलानि दुःखानि तानि त्यक्त्वा वसेत् सुखम्।

(जे नेहे अझुराइल हो, उहई भयभीत।
एहि कारन दुख पाइल हो, जनि करिहऽ प्रीत।)

तुलसी बब्बा एह रोग भा बिकार के अलग-अलग रूप, अवस्था आ तीव्रता के जगहे-जगह चरचा कइले बानीं। बिना बेवाय फटले अइसन पीरा के अनुभव के करी। देखल जाव-

(1) जोबन-जुर जुबती कुपथ्य करि,
भयो त्रिदोष भरि मदन बाय।

(2) विषय संग सह्यो दुसह दुख।

(3) परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन,
निज बस ह्वै न हँसैहो।

(4) देखत ही कमनीय, कछु नाहिन किए विचार
ज्यों कदली तरु मध्य निहारत कबहुँ न निकसत सार।

(5) नए-नए नेह अनुभए देह गेह बसी
परखे प्रपंची प्रेम परत उघरि सो।

इन्ह बानगिन में बेमारी के कइयक लच्छन परगट हो रहल बा- कफ पीत बाई, त कवन बैद बचाई।चढ़ते जवानी मदनबाय धइ लिहलसि। दुख अतिना जे पूछीं जनि आँखि, नाक, कान,जीभ

तुचा सभ बेबस। नीमन देखते मति भरनठ। एह नयकी बेमारी का देह में घुसते कतिना परपंच के चोंइटा छूटे लागल। नेह के कइयक दसा के सटीक जिकिर उहाँ के कइले बानी जवननि के संबंध-जुगुल के नजरिए देखल गइल बा। नाद-निठुर (हिरन-ब्याधा), समचर-सिखी (आग-पतंग), सलिल-सनेह (मछरी-पानी), ससि-सरोग (चान-चकोरी), दिनकर (सूरज-कमल), पयद (मेघ-चातक), सभ के सभ प्रेम-पथ कूर-शिकारी भा शिकार। अब पता ना कि ई सरफरोसी के तमन्ना ही नेह ह कि बिलकुल सरफिरों-सी ओली बात ह। बाकिर अतिना त तय बा जे तुलसी बब्बा में कबो ना कबो ई मनोविकार आपन प्रचंड रूप में उपजल होखी। तुलसी साहित्य में ई जगहे-जगह साफ लउकता- कबो नेह, कबो मोह, कबो कामातुरता, कबो बेवकूफी वगैरह का इजहार का रूप में। खैर, ई त उनकर आपन इस्टाइल ह। संत रहन त संते अस बतिअइहें। हमनी के गबड़ाए के नइखे। विविध नाम रूप धइले ई उहे बहुरूपिया नेह ह जवन उनुका के ढेर सतवले रहे।

नदी

तुलसी का मन में नदी के परिछाहीं बार-बार झिलमिलात नजर आवेला। कइसे कहल जाव कि ई परंपरा के प्रभाव ह भा बेकती के भोगल जथारथ के कवनो रूप। भारतीय सभ्यता में आ इहाँ के सोच में नदी के मुख जगह बा। नदी के बहरिया रूप भौतिकता में उजागर बा लेकिन एहि से अलगा भीतरियो नदी के मौजूदगी आ ओकर कइकइगो सरूप का पता लोगन के बहुत पहिले से बा। ई सरूप दूनो तरह के बा- कल्याणमय अवरि अमंगलकारी। नदी कहीं सभ बुद्धि के उजागर करे ओली- विश्वा धिया विराजति (ऋक् 1.3.11)- त कहीं अवरि सभ चीझ से पियारा- उत नः प्रिया प्रिया सु (ऋक् 6.61.13)- बाड़ी।

भरथरी अइसने एगो नदी के खोज कइले बाड़े- टिसुना का लहर अवरि इच्छा का जल से भरल आसा नाम के नदी बीया। ओ मे राग-मगरमच्छ, तर्क-वितर्क-चिरईं बाड़न सन। धीरज-फेंड़ के कबारे ओली ओहि नदी में मोह-भँवर उठत बा। गहिर नदी के चिंता-अरार पार कइल मोसकिल। जेकर भीतरे निरमल बा उहे जोगी एहि नदी के पार क के अनन्दित हो लें-

आशा नाम नदी मनोरथ जला तृष्णातरंगाकुला,
राग ग्राहवती वितर्क विहगा धैर्यद्रुमध्वंसिनी।
मोहावर्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुंगचिंतातटी,
तस्य पारगता विशुद्धमनसो नंदति योगीश्वरा।

तुलसी जी भी अइसने नदी के अनुभव से गुजरल बाड़े-

(1) धोर अवगाह भव आपगा पापजल पूर, दुष्प्रेक्ष्य, दुस्तर अपारा।
मकर षडवर्ग, गो नक्र चक्राकुला, कुल शुभ-अषुभ, दुख तीव्र धारा।
सकल संघट पोच सोचवष सर्वदा दास तुलसी विषम गहन ग्रस्त।
त्राहि रघुवंषभूषण कृपा कर, कठिन काल विकराल कलि त्रास त्रस्त।
-(विनय पत्रिका 59)

(2) महामोह सरिता अपार मँह संतत फिरत बह्यो।
- (विनय पत्रिका 92)

(3) महामोह मृगजल सरिता मँह बो हौं बारहिं बार।
से परि डरै मरै रजु-अहि ते, बूझे नहिं व्यवहार।
- (विनय पत्रिका 188)

(4) बन बहु विभ्रम मोह मद माना
नदी कुतर्क भयंकर नाना।
- (रामचरित मानस)

बूझीं जे जतिना भितरिया भाव-विकार बा ऊ सभ नदिए के कवनो-ना-कवनो अवयव का सकल में ढल गइल बा। भृगुनाथ के किरोध खातिर भी नदिए के रूपक सटीक भेंटल-'घोर धार भृगुनाथ रिसानी'।

नदी के दोसरको रूप उनुकर मन में बा। ई रूप अवसि सांत भा निरबेदल मनईए के नजर आई। बरखा के कोप खतम। बाढ़-बूढ़ जवन करे के रहे तवन क के बिला-पता गइले। अब नदी मनसायन बाड़ी, धारा निरमल, सभ परानी के सुकून देवे ओली। ई परिनाम से पैदा नजरिया ह जवना में सरजू-जल से धोअले पाप, ताप, दरिदाई के अंत हो जाला-'समन दुरित दुख दारिद दोषा। 'एकर धार 'काम कोह मद मोह नसावन' आ 'बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन' बा। इहवें तक ना, सभ नीमन आ साहसी लोगन के आह्वान बा जे एहि नदी का पानी मे चहबोरि के आपन मगज सीतल करि लिहल जाव। जी-जहानि सभ जुड़ा जाई, ना त हई-

जिन्ह एहि बारि न मानस धोए।
ते कायर कलिकाल बिगोए।

कउवा असहूँ नीके ना नेहाए। उथर पानी में, जहवाँ ठीक से ठोरो ना बूड़ी, मूँडी बूड़ा के छुपछुप भइल, आ भ गइल। एहि से लुबलुब नेहान के कउवानेहान कहल जाला। बकुला त रातेदिने नदिए का छोपा रहेलें, बाकी एह से उनकर नेहाए वाला उदेस सिद्ध नइखे भइल। कबहूँ केहू कतहूँ इहो नइखे देखले जे कउवा नेहा के कोइलर आ
बकुला हंस बनल होखसि। लेकिन अइसन अजगुत के बखान तुलसी बाबा छाती ठोक के करत बाड़ें-

मज्जन फल पेखिय ततकाला।
काक होंहि पिक बकउँ मराला।

दरअसल ई जवन परयाग ह तवन ई प्रयाग ना ह। ई परयाग अलगंठ चीझ ह जेकर मौजूदगी कवनों खास जगहा नइखे। ई कहऊँ हो सकेला, जहाँ संतन के आनन्द आ कल्यानमय समाज होखे, रामभगती के अविरल धारा होखे, ब्रह्मविचार के फैलाव

सरिस तरे-तरे ससरत सुरसती नदी के धार, बिधि-निखेध के जमुना, धरम में दिढ़ाई के अछेबट आ सुभ करम के आम समाज होखे। प्रसन्नमन सुने आ आनन्द में गोता लगावे में पुररुसारथ के प्राप्ति ह।

त ई बात बुझाइल होखी कि तुलसी बाबा का नदी के दुनों रूप, बिनासक आ कल्यानमय से अंतरंग संबंध रहल ह अ उनुका भीतर ई अनुभव बहुत गहिरोर बा।

रसरी के भरम

भारतीय संस्कृति में सरप के मौजूदगी पुरातन काल से ह। बिखधरता, हिंसा, कुटिलता, छुप के वार ई सभ सरप के सुभाव हवें। ऋग्वेद (1.191.5) के एक ऋचा ह-

एत उ त्ये प्रत्य वृश्नन्प्रदोषं तस्कराइव।
अदृष्टा विश्वदृष्टाः प्रतिबद्धा अभूतन।।

(ओसहीं चोर रात में निकलेलनि, खुदे लोप रहेलनि बाकिर आन प निगाह रखेलनि, एन्हनि से लोग सावधान रहऽ।)

कहे के जरूरत नइखे कि ई बिखधर आसपास समाज में सगरे बाड़े, लोग देख पावे भा ना। भलाई आ बुधिमानी एह में बा कि एन्हनि के पहिचानल जाव आ सचेत रहल जाव। ई मायाचारी हवें, एन्हनि के दोसर रूप ई बा कि ई अदिमीं के भितरियो मानसलोक में मौजूद रहेलें, बिकार-बिखाद के रूप में। एकर अहसास हो जाय आ इन्हका के झटके दूर फेंक दिहल जाय त सभका कल्यान। एकर निराकरन के एगो परिस्थिति बा-

उदपप्तदसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वन।
आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा।।(ऋक् 1.191.9)

(समूचे संसार के देखे वाला आ लुप्त बिखधरन के नष्ट करेवाला सूर्य एन्हनि के निबल करत उदयाचल से उगेलें।)

ई बहरिया सूर्य त हइए ह, अंदरूनी ज्ञान के परगास के बोधको ह। मद्य खींचेवाला कलार जइसे मद्य के मशक में डालेला ओसहीं हम बिख के सूर्यमंडल का ओरि फेंकत बानीं। जा तरे ए से सूरज ना मरस ओसहीं हमनियों मत मरीं। ई मधुविद्या तोके अमृत बना दीही।

एक जगे वशिष्ठ के बिनती बा मित्रावरुण से-"अजकावं दुर्दृशीकं तिरोदधे मा मां पद्येन रपसा विदत्सरुः" (ऋक् 7.50.1) यानि 'अजकाव' आ 'दुर्दृशीक' हमरा से दूर रहस, 'त्सरु' हमार रहता में मत आवस, गोड़ में काटस जनि। 'अजकाव' बकरी जइसन छोट जनावर के भख जाएवाला, 'दुर्दृशीक' कठिनता से लउकेवाला आ 'त्सरु' टेढ़िया सरप हवें।

गोसाईं जी समूची दुनिया के रसरी-सरप सरिस भरममूलक मानत बाड़न। वस्तुगत साँच कुछ अवरि बा। मूल तत्त एके ह बाकिर संपूरन विश्व के नाना नाँव रूप में फैलाव के लोग भिन्नता बोध से देखेलनि ठीक ओही तरे जइसे अन्हार राति में भरमवश कवनो रसरी के सरप समुझ लिहल जाय। जब तक जथारथ के बोध ना होई तब तक ज्ञान के जवन सरूप बा ऊ भरम के सेवाय अउ कुछ ना ह। अन्हारा छटले प वास्तविक तत्तज्ञान होई। ई अन्हारा अज्ञानता ह, मिथ्या ज्ञान ह। ई मिथ्या ज्ञान ईश्वर के भीतर के माया-शक्ति के कारन होला जवना के प्रसार विश्व के कने-कने में बा, परतच्छ भा परोच्छ जे कुछ बा ऊ एह प्रभाव से मुक्त नइखे। ई खाँटी दार्शनिक नजरिया ह। जिनिगी के दुख-सुख अज्ञान के अजथारथ सपन अवस्था के ओजह से बा, ठीक मिरिगजल का तरे' भा जोरि का साँप के तरे'-

"सोवत सपनेहूँ सहै संसृति संताप रे,
बूड़्यो मृगवारि खायो जेवरि को साँप रे।"

(सपन सरीखे भरम में डूबल भवपीरा सहत रहलीं, मायारूपी मृगजल में डूबनीं, जोरि के अजगर खा गइल।)

-"सो परि डरै मरै रजु-अहि ते बूझे नहिं व्यवहार"(विनय पत्रिका 188)।

(दुनिया, तू चालाकी जनि चलऽ, रसरी के साँप से डरि के उहे मुई जे ओकर भेद ना जानत होखे।)

जिनिगी का का गुल खिलइलसि-"जल चाहत पावक लहौं विष होत अमी को"- चहनीं पानीं भेंटल आगि, अमरित माहुर भ गइल। शान्ति के बदले अशान्ति, करम के अमरित अहं के बिख में बदल गइल।

त ई कुछ ढूह रहीसन् जे प चढ़ि के कुछ साफ, कुछ धुँधराह लउकऽता जेकरा से बहुत नगीची अनुमान कइल जा सकेला। 'उर बसि प्रपंच रचे पंच बान', 'विसय संग सह्यो दुसह दुख', परिहरु पाछिल गलानि', 'रोग वियोग सोग श्रम संकुल बड़ि बय बृथहिं अतीत', 'नए नए नेह अनुभए देह गेह बसि, परखे प्रपंची प्रेम परत उघरि सौं', 'तुलसी सुनी न कबहुँ काहू कहुँ, तनु परिहरि परिछाँहि रही है', किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलिमल ग्रसित बिमूढ़' जइसन ना जाने कतिने पंक्ति बाड़ीसँ जवन तुलसी के जिनिगी के कुछ दबल-छुपल रहस के, स्थिति-परिस्थिति के, मानसिकता के चुगली करत नजर आवेलीसँ।

• **दिनेश पाण्डेय, पटना**

माई में गुरु

ई सत्य के खारिज ना कइल जा सकेला कि माई से पहिले केहू गुरु ना भइल.....
माई न सिखावल कि केहू कुछ दिही त खइह$ मत बेटा। माई के कहाँ मालूम कि ऊ का देत बारी आपन बेटा के सीख के रूप में ,,,,माई त अनपढ़ बिया ओकरा का मालूम कि ऊ आपन बेटा के स्वाभिमान देतारी,,

,उहे न सिखवली केहू से कुछ माँगल ना जाला ,,,,, केहू कुछ खा त ओकरे जिद्द ना कइल जाला,,,, आपन बेटा के संतोष खातिर ओकर फटल पुरान कपड़ा में भी कहेली कि बाबू हमार सबले नीमन लागत बावे,,,,,नज़र ना लाग जाओ.....
माई ना सिखवले रहित त कतना लो रोटी से पहिले भात
खा लेत लो,,,,अउरी 4 बरिस तक माई गोड़ के चप्पल सीधा क के पहिनावेली.....
हम अपना माई से बहुत सवाल पूछत रहनी हँ ....
ए माई! हई बादर कइसे बनेला ?
माई कहस कि देखतारs चूल्हि में से धुँआ जाके इकठ्ठा हो के बादर बन जाला....
बाकी शुरू से अन्वेषी प्रकृति के रहनी हमके सब अभी ले इयाद बा.....
अगिला सवाल माई से - माई! हेतना कम चाउर में पूरा भगौना कइसे भात से भर गइल ? माई कहलस कि अरे एक चावल में से 4 गो अउरी निकल जाला.....एक हाली हमार पाटीदार के बुआ लोग अइसहीं मजाक में कहत रहली कि हमनी के बूढ़ हो जाएके फेर मर जाएके.....
ओ लोग का पता ना रहे हमरा बालमन पे का प्रभाव परी? हम ई बात सुनला के बाद एकांत में जाके सोचे लगनी इहे कि कब हम बूढ़ हो जाएम कब जिनगी खत्म हो जाई????
ई चिंतन 8 बरिस के उमिर में रहे ,,,,,हम साँझ खा माई के लगे गइनी। माई चूल्हि पे खाना बनावत रहे। ओकरा बगली में बइठ गइनी .....
कहनी..... मम्मी केतना दिन बाद लोग मर जाला???,,,,,मरे के समय केतना दर्द होला ,,????
अइसन का करी कि हमके न मरे के परे.....
मम्मी तवा के राखल रोटी भुला गइली। हमके देख के घबरा गइली। ऊ ,हमके अँकवार में पकड़ के कहली ,,,ई कुल बात कहाँ सुनला ह? के बतावल ह फ़ालतू बात तहके????
बोलs न !!!!
हम कहनी हमके बताव काहें लोग मर जाला !!!
हम नइखी मरे के चाहत माई? माई घबरा जाली ,बाबू जी भी आपा खो देलन एक ही बेटा जे रहनी हम .....
ओकरा बाद हमार बाबा जी हमके बैठा के सुंदरकांड के पाठ कइलन रात में हमके दिमाग में उहे लागल रहे !!!!
आखिर में रात के 11 बजे माई हमके लेके पीछे फूल पौधा के बीच ले गइल अउरी चांदनी रात रहे .....
ओस के कहर ऊपर से हम !!!!फिर माई कहलस एतना जल्दी लो बूढ़ ना होला। बहुत दिन लाग जाला ,अउरी कवनो दर्द ना होला ओ घरी बाकी तू हरमेसा जियबs ,,,,
हम तहरा खातिर ब्रत राखेनी न !! बाकी हमरा मन के कौतूहल भीतर ले हमके हिला देहले रहे .....
माई थक गइल रहे, घर के काम कइला के बाद हमके समझा के .....
हमरा नींद ना आवत रहे .....फेर माई कहलस एकदम जइसे बिलाई बाड़ तू ,,मरला से डेरा तारs?
मौत एतना खराब रहित त सैनिक लो काहें जान दे देइत अपना देश खातिर ????
ऐसे रहब त गोली कैसे चलइबा????? सब कहि कि उनकर बाबू डेरालन!!!
हमर माई 8 बरिस के उमिर में हमके बतवलस कि मौत भी सुन्दर हs ,,बस ओकर उद्देश्य पूर्ण हो गइल रहे के चाही,,,, भगवान भी मौत से न बचलन ,,,बेटा मौत भी बहुत होला .....
माई कहलस तहरा तरे सब हो जाई त देश के रक्षा के करी? (माई आपन 8 बरिस के लइका खतिर जोखिम ले के इतना बात कहलस)
रात 12 बज गइल रहे। साथ में ओस और जाड़ भी तेज हो गइल रहे ! अउरी हमरा मन का ई बात

ब्रह्मांड सत्य के तरह याद हो गइल रहे की "मौत सुंदर ह".अउरी हम शान्त हो गइनी.....उद्देश्य साफ होखे के चाही !

साँच कहतानी माई हमरा जीवन के अइसन अध्यापिका बिया जवन आजु के कवनो सवाल में फसल नइखी!!!!!

अउरी अइसन मूल्यांकनकर्ता बिया की आजु ले परीक्षा में एक्को नम्मर हमार कटले नइखी!!!!

ओह रात हमर दिमाग पर सुंदरकांड का पाठ ना असर कइलस बाकी माई हमर तुलसीदास से बहुत कम ज्ञानी बिया न के बराबर बाकी उहे हमरा मानसिक विकास के सबसे बड़ कारक हिया .....

हमर बात से कवनो प्रश्न से कतनो प्रश्न से ना घबराली ,,,,,फोन में हम अगुतानी कबो कबो कि ठीक बा माई फेर बिहान बताएम .....

माई के ऊपर लाख दुख रहे बाकी उ फोन पर हमसे साधारण होके बोलेली!!अउरी हम ?????

हमके कुछ परेशान करेला त हम माई से ओ तरे ना बतिया पावेनी !!!

बाकिर माई ना बोझ मानेली हमार कवनो बात केतनो बेरु कहीं!!!! हमके अइसन आभास होला कि जब हम आपन माई के बात के अपना हिसाब से सीमित करेनी ,,,,,ओहदिन केहू हमार ना सुनेला!!!!!ई साँच ह केहू ना सहन कर सकेला हमार आवाज माई के सिवा। माई से हम चिल्ला के एक घण्टा बोल दीं त माई कहेली कि कपार में दर्द हो जाई,,,मत चिल्ला बाबू!

माई के सिवा अउरी केहू भी भगवान से हम अइसन बोल दी त उहो कहिहे कि हमार कपार दुखा दिहले ते चिल्ला के !

बिहने से मत अइहे.....

आज मैसेज के जमाना में बहुत कम लोग आवाज के परेशानी से मुक्त बा या होखल चाहत बा !

बाकी माई बिना हमार आवाज सुनले ना रहेली!

केहू के फोन पे भरोसा नइखे ओकरा जबले हमसे ना बतिया लेवे !!!!!अइसने बा हमार माई.....

सभकर माई अइसने होली !!!! भगवान से भी बड़ ,,,,जीवन के सबसे ऊ शिक्षा देबेवाली गुरु जवन ना रहे त इन्सान जानवर कहाई अइसन ज्ञान देले माई!

माई के अभिये फोन भी आ गइल ओकरा नइखे मालूम हम इयाद करतानी .....

माई हमार पोस्ट ना पढ़ सकेली। बाकी कहतानी माई हर जन्म में तेहीं भेटइहे हमरा के माई के रूप में .....

अतना सरधा से हमके आपन दूध पिया के बड़ कइलू की आज भी हम बिना खइले सूत जानी त नींद आ जाला!!!

✍ **"अमन पाण्डेय"**

अभी तऽ उमिरिया बेवे काँच

गवन ले जइहऽ, अभी तऽ उमिरिया बेवे काँच
दिन कुछु छोड़ि दऽ, सीखे के बावे सभ बात॥
अभी तऽ उमिरिया बेवे काँच॥

ससूरा के उँच-नीच अभी ना बुझाई
आँगन देखि-देखि मन ललचाई
दिनवा भेजइहऽ बादे, नऊआ के हाथ॥
अभी तऽ उमिरिया बेवे काँच॥

अबहीं ना आवे चुल्हा फूंके हमरा
गोईंठा जराइब कइसे
अउरी लकड़ी होई बेहाथ॥
अभी तऽ उमिरिया बेवे काँच॥

तोहरी मइया के बात ना बुझाई
अउरी ननद रिगईहों
डर बा कि हमसे हो जाई बात बेबात॥
अभी तऽ उमिरिया बेवे काँच॥

✍राजीव उपाध्याय
सम्पादक : मैना

तूहूँ कुछू तऽ खरीद लऽ

इ बाज़ार लागलऽ बावे
तूहूँ कुछू तऽ खरीद लऽ...॥

माल-असबाब बहुत
बावे छितराइल
अपना हिसाब से
तूहूँ तऽ भीख लऽ...॥
तूहूँ कुछू तऽ खरीद लऽ...॥

अभी केवनो मोल नाही
देबे के बावे
पर होई सभ हिसाब हिया
जियरा के चीऽख लऽ...॥
तूहूँ कुछू तऽ खरीद लऽ...॥

अईसन ना होखे पाईऽ
कि खाली हाथ जइब
कुछू ना कुछू तू
मनवा लगइबऽ...॥
तूहूँ कुछू तऽ खरीद लऽ...॥

✍राजीव उपाध्याय
सम्पादक : मैना

शिव जी से निहोरा(पूर्बी)

पानी भइल बाटे दिल्ली राजधानी
भोलादानी सुनीं ,
धसे लागल पक्का के पलानी
भोलादानी सुनीं ।।

इसकुल, आफिस, अस्पताल सभ बनल बाटे ताल
पोखरा तालाब छोड़ के रोडवे पो लागे जाल
बाड़ी परेशान बाबा मंदिर में भवानी
भोलादानी सुनीं ।।

नर नारी जानवर रहे एके छत तरऽ
ठेहुन भर पानी भरल बाटे सभ घर घर
निकलल मोहाल भइल संगे राजा जानी
भोला दानी सुनीं
धसे लागल पक्का के पलानी
भोलादानीं सुनीं

रफतार रेलिया के बाबा रोज रूकल बा
आँख से पनाला बहे मुँह सभके सूजल बा
देर ना लगाईं नाथ अरजी के मानीं
भोलादानीं सुनीं
धसे लागल पाक्का के पलानी
भोलादानी सुनीं

✍**विबेक पाण्डेय, आरा**

बघवा डेराइल बा सियार से

साँच बाति कहीले इयार से ।
बघवा डेराइल बा सियार से।।

पिजड़ा में शेर बा ई जेहि दिन से आइल ।
ओहि दिन से पौरुष एकर बान्हे बा धराइल।।

कुकुरन के दोस्ती बा बड़का हुँडार से।
बघवा डेराइल बा सियार से।।

कवनो विदवान के बयान ना सुनाला,
अधजल गगरी ह छलकत जाला।

बकता डेराइल बा लबार से।
बघवा डेराइल बा सियार से।।

पिया घरे जात बाड़ी खेले पहिला होली ।
डर बा कि राहि में बदलि जा न डोली।

दुलहिनि डेराइल बा कँहार से।
बघवा डेराइल बा सियार से।।

✍**मदनमोहन पाण्डेय**

निवास-(स्थाई) ग्राम-नटवलिया,पोस्ट-धर्मपुर,जिला-कुशीनगर, उत्तर प्रदेश
(वर्तमान)-ग्राम-पोस्ट-खेसिया
जिला-कुशीनगर, उत्तर प्रदेश
पेशा-शिक्षण "नेहरू इण्टर मीडिएट कालेज मंसाछापर, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश"
प्रकाशित साझा काव्य संग्रह-"अमलताश के शतदल" "ढाई आखर प्रेम" "यथार्थ भाग 1", "आखर" "मधुबन" "सम्यक" "नये पल्लव-4"

कच्चा सूत-कच्चा नाता

अलका आज भगवान भास्कर से भी पहिले जागि गइल रहली।अधनिनिया से अलसाइल देह में ना जाने कहाँ से एकदम बिजुरी नियन फुर्ती समा गइल रहे।आज ना त ऊ झाड़ू पोछा वाली नोकरानी के ही इन्तजार कइली आ ना ही बर्तन धोवे वाली महराजिन के।पति आ बबुवा के नींद में केवनो व्यवधान ना होखे एसे बहुत ही धीरे धीरे ऊ आपन सारा काम निपटा लिहली।भोर के झलमलात सुनहरी किरिन जब खिड़की से झाँक के चिरैया के आवाज में अपना आवे के सूचना देहलस तब जाके आनन्द बाबू के नींद खुलल।देखलन कि पूरा घर देशी घी के साथे जरत शक्कर के सुगन्ध से गमगमात बा।रसोई घर में जा के देखलन त अलका तरह तरह के पकवान के दोकान सजावे में पसेना के कुण्ड में गोता लगवले रहली।

"उठि गइलीं रउवा?बबुवो के उठा देईं आ जल्दी से तैयार हो जाईं जा दुन्नो जाना।भइया के एक बजे के बाद बनारस जाएके बा कुछ काम से एसे हमनी के कुछ भी करके ओइजा 11 बजे तक पहुँचे के ही पड़ी।" अलका जल्दी जल्दी कहली आ अपना काम में लाग गइली।

"का आजो महेश भइया के यहाँ....?" आनन्द बाबू कुछ कहल चहलन लेकिन अलका उनकर बात काट देहली-" देखीं ! रउवा हमके फिरी में सलाह मत देहल करीं।आपो के त दू दू जानी बहिन बा लोग लेकिन आजो के दिन केहू के टाइम ना मिलेला कि भाई से मिल आईं।सूना कलाई ले के घूमत रहिलां।ओहीलोग के काहें ना शिक्षा देइला कुछ?"

आनन्द चुप।

##################

बड़ी बाग,गाजीपुर,

पुराना जमाना के एगो जर्जर हो चुकल विशाल हवेलीनुमा मकान जेवना के देवालिन पर जमल काई आ जगहे जगह घास के बीच बीच में उग आइल पीपर के पौधा ओके अउरी पुरान बना देत रहलन सन।चूवत छत के पानी सालन पहिले पोताइल रामरज के रंगत के पता नाही कब के चोरा चुकल रहे लेकिन जमल काई के कालिमा के बीच में ओकर पियरका रंग अभी भी कराह कराह के अपना अस्तित्व के संकेत दे देत रहे।दहिना तरफ के आधा हिस्सा के तोड़ के एगो भव्य अत्याधुनिक महल बनावल गइल रहे।देखे वाला के साफ समझ में आ जात रहे कि एकही मकान के दू हिस्सा करके एक तरफ लक्ष्मी जी आ दूसरा तरफ दरिद्र नारायण आपन आपन निवास बनवले बा लोग।जर्जर मकान के सड़ल प्रवेश द्वार पर एगो मोर्चा खाइल लोहा के बदसूरत फाटक लागल रहे जेवना के बाईं ओर चाहरदीवारी पर जड़ल तख्ती पर "महेश श्रीवास्तव-अधिवक्ता" लिखल रहे।चमचमात महल छोटका भाई सुरेश श्रीवास्तव के रहे जे पूरा क्षेत्र के नामी ठेकेदार लोग में आपन एगो सम्मानजनक स्थान राखत रहलन।केवनो जमाना में ई मकान 'नारायण सदन' के नाम से पूरा जिला जवार में प्रसिद्ध रहे।श्री नारायण वकील साहब के के ना जाने ओ समय?दू बेटा आ एक बेटी के भरल पुरल परिवार आ जनपद न्यायालय में सबसे टॉप के वकालत,सबकुछ रहे कभी ए घर में। ऊ सबकुछ आज भी बा लेकिन मात्र आधा हिस्सा में ही जेवन आज नारायण-सदन के नाम से ना बल्कि 'सुमित्रा-विला' के नाम से जानल जाला।नारायण-सदन से त कुल सुख-सम्पत्ति अकाल के बदरा जइसे रूठ के जा चुकल रहे।पाँच साल पहिले जब महेश बाबू के रिश्ता लकवा नामक बेमारी से जुड़ल तब्बे से पहिले वकालत आ ओकरा बाद संपन्नता भी उनकर साथ छोड़के चल गइल।सम्पत्ति के नाश होत ही पहिले सगे सम्बन्धी आ फिर बाद में सहोदर भाई-बहिन भी उनसे पीछा छुड़ा लेहल लोग।एगो बेटा रहे जे कि चेन्नई के केवनो प्राइवेट कम्पनी में इंजीनियर रहे आ साल दू साल पर ही कुछ दिन खातिर घरे आवे।कुल मिला के महेश बाबू आ उनकर पत्नी रमा ही एक दूसरा के सहारा रहे लोग,हँसे खातिर भी आ रोवे खातिर भी।

##################

अलका के मुखमण्डल आज एकदम शरद पूर्णिमा के चान जइसे दमदमात रहे।आनन्द बाबू आ गप्पू बबुआ के जल्दी जल्दी भोजन करा के तैयार कइले के बाद राखी के गीत गुनगुनात ऊ अपना द्वारा बनावल कुल पकवान सोनहरा रंग के चमचमात डब्बन में पैक कइली।हिरदय केवनो वन के हिरनी जइसे खुशी के मारे कुलाँच भरत रहे।आपन कुल कीमती गहना के सहायता से घण्टन ऐना के आगे बइठ के बड़ी मेहनत से आपन सिंगार कइली।नौकर सामान ले जा के गाड़ी में रखत रहलन।कुल

तैयारी जब पूरा हो गइल त चले के बेरी अपना हैंडबैग से सुग्घर काँच के बनल एगो चौकोर डिबिया निकललीं जेमे चाँदी से बनल एगो कीमती राखी जगमगात रहे।आँख में सनेह भर आइल,मुस्कुरा के गुनगुना उठली- "मेरे भइया, मेरे चंदा....."

तबले बाहर से आनन्द बाबू के आवाज आइल-"चल$! गाड़ी तइयार बा।"

###############

महेश बाबू के बिस्तर मकान के बाहर वाला कमरा में ही लागल रहे जहाँ से सुत्तल सुत्तल ऊ बाहर सड़क पर आवे जाए वाला लोगन के टुकुर टुकुर देखल करस।आज उनके अपना अपंगता पर कुछ ज्यादे ही रोवाई आवत रहे।बिस्तर पर तकिया के सहारे बइठल बइठल उ कभी अपना निष्प्राण पड़ चुकल पैरन पर घूसा मारसि आ कभी पत्नी पर चिल्लास-"अरे अभागिन ! हम कहली न कि आज खातिर एगो नोकरानी लगा ले।आज अलका आ आनन्द बाबू आवे वाला बा लोग।एतना बोड़ मकान के साफ सफाई करे के बा,मिठाई आ सेवई बनावे के बा,बहुत सारा काम पड़ल बा आ आपन हाथ गोड़ बुढ़ापा में चलते नइखे बाकिर कुल काम अपने ही कर लिहन।"

रमा के आदत बा कुल चुपचाप सुने के।उ जानत बाड़ी कि असहाय मनुष्य खाली चिल्ला सकेला या फिर रो सकेला।उनके पता बा कि ए घर में खाली बहिन के याद आवेले,बहिन ना।स्वागत आ सत्कार के तइयारी बस मन के दिलासा देबे खातिर ही कइल जाले हर साल।महेश बाबू के नजर बार बार सड़क के ओर उठ जात रहे।कुछ तलाश करस आ फिर निराश हो के अपने के समझावस कि "अभी समय ही कहाँ भइल बा....."

तबतक अचानक बाहर के दृश्य देख के उनकर मुर्झाइल मुखड़ा खिल गइल।एगो सफेद चमचमात स्कॉर्पियो कार छोटका भाई सुरेश के मकान के सामने आके रुकल आ ओम्मे से महेश बाबू आ बबुआ के साथे अलका उतरत दिखाई देहली।महेश बाबू के मन मयूर बन के नाचे लागल-"रमा !ए रमा ! देख न, ऊ लोग आ गइल।तू जल्दी से मिठाई आ नमकीन प्लेट में सजा के रख ल, अलका सुरेश के राखी बान्ह के इहवों आवते होई।अउर हँ, हमरो व्हीलचेयर दरवाजा पर पहुँचा द।हम आगवानी करे जाइब।"रमा चुप।

महेश बाबू सुरेश के दुवारी पर ही नजर गड़ा के बइठल रहलन।एक एक पल उनके हजार साल जइसन भारी लागत रहे।धीरे धीरे दू घण्टा बीत गइल।बेचैनी बढ़ल जात रहे,तबले ऊ देखलन कि सुरेश के सात साल के लइका पिन्टू दौड़ के उनका घर ओर आवत रहे।आशा जागल कि शायद बुआ के आवे के खबर ले के आइल होई।पिन्टू दौड़ के सीधे आँगन में बइठल रमा के पास ही पहुँचल।रमेश बाबू अधीर होके सुनत रहलन-"बड़ी मम्मी ! मेरे घर न बुआ आई है वो यहाँ भी आ रही थीं लेकिन फूफाजी को कोई जरूरी काम होने के कारण अचानक जाना पड़ रहा है इसलिए अब यहाँ नही आ पाएँगी।अब जा रही हैं।बुआ ने ताऊजी के लिए ये राखी भेजी है।"

महेश बाबू के कान में ओ बालक के आवाज दहकत अंगार नियन जात रहे जेकरा आँच से पिघल के उनका हृदय के कुल स्नेह पीड़ा के रूप में आँख से झर झर झरे लागल।रमा एगो कच्चा सूत के साधारण राखी ले आ के उनका हाथ में रख देहली।चेहरा काला पड़ गइल ओ अशक्त भाई के।कई जगह से फाटल-तुरपल कुर्ता के जेब में से निकाल के मुड़ल तुड़ल शकल के 51गो रुपया ओ राखी पर रख देहलन आ फफक के रोवे लगलन।तड़प के कहे लगलन-"तू ठीके कहत रहलू रमा।अब ई कच्चा सूत में एतना दम नइखे रह गइल कि ऊ रिश्ता नाता के सहेज के बाँध सके काहें कि अब त रिश्ता नाता ही ए कोमल सूत्र से कहीं ज्यादा ही कच्चा आ कमजोर हो गइल बा।अब सम्बन्धन के पिरोवे खातिर कच्चा धागा के ना बल्कि चाँदी के चमचमात तार के जरूरत बा।हम गलत रहलीं रमा,हम गलत रहलीं।"

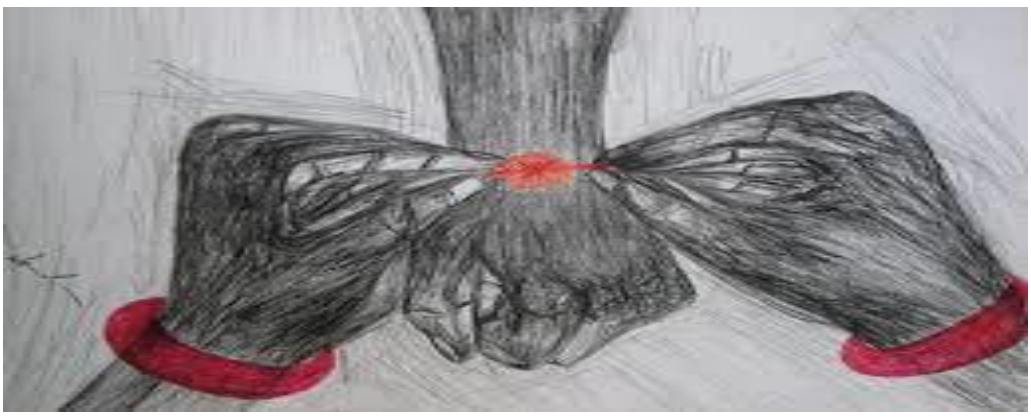

✍ संजीव कुमार त्यागी

लोगवा का कही

भरतपुर जइसन लमहर गाँव में रवि पहिला नवहा रहलन जे इंजीनियरिंग के पढाई पूरा करके एगो मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी करत रहलन।

रवि अपना नाम के मुताबिक तेजस्वी रहले आ धप-धप गोर, लमछड़ काया पवले रहलें। उनकर खास बात ई रहे कि ऊ हाईस्कूल के बाद बाहर पढ़े चल गइलन बाकिर आपन माटी, आपन भाषा से जुड़ल रहलन अउर गांव के सब केहु से अपनापन के व्यवहार राखस ,सबका दुःख के आपन दुःख बुझस। आज रवि गाँव आवत रहले, उनका अपना दिदिया के बिआह में शामिल होखे के रहे। अइसे त रेलगाड़ी के समय 6 बजे शाम तक पहुँचावे के रहे बाकिर रेलगाड़ी 9 बजे रात में स्टेशन पहुँचल। स्टेशन पर उतर के रवि देखलन कि कवनो गाड़ी-छकड़ा नइखे जेसे ऊ घरे जासु।स्टेशन छोट रहे अउर ऊपर से दिसंबर के महीना, कड़ाका के ठंड पड़त रहे एसे गाड़ी मिले के कवनो सवाल ना रहे। रवि घरे फोन करके केहू के परेशान ना करे के चाहत रहलें। स्टेशन से रवि के गाँव भरतपुर मात्र 2 किलोमीटर रहे अउर रवि के पास ढेर समानो ना रहे एसे रवि पैदले चल दिहले। भरतपुर गाँव में ढुकते पहिला घर धनपत बाबा के पड़ेला। धनपत बाबा दुआर पर बइठ के आगि तापत रहले अउर हाथ में चिलम लिहले गाँजा टानत रहले, बगल में रेडियो रखल रहे जे में किशोर कुमार के गाना- "मेरा जीवन कोरा कागज़ कोरा ही रह गया" बाजत रहे। रवि के नजर धनपत बाबा पर पड़ल।"गोड़लागतानी बाबा" रवि कहले। खुश रहऽ,लखिया होखऽ खूब नाम कमा"- धनपत बाबा रवि के आशिर्वाद दिहले।अब रेडियो के आवाज बहुत धीमा हो गइल रहे। रवि धनपत बाबा के लगे कुछ देर रुक गइले। हाथ गोड़ कठुआइल रहे उहो आगि तापे लगले। धनपत बाबा रवि के हाल चाल पूछले। "रउआ सब के आशीर्वाद से सब ठीक बा बाबा"- रवि कहले।

अब रवि धनपत बाबा से पूछले रउआ बताईं बाबा, सब नीमन बा नू? जबाब में धनपत बाबा कहले" ह बाबू, सब नीमन बा, छोटकी बबुनी के बिआह रोपले बानी एही 15 दिसम्बर के बरियात बा, अब कइसे पार लागी बुझात नइखे।" ई बात कहत-कहत धनपत बाबा भावुक हो गइले। साँच कहीं त धनपत बाबा के स्थिति ठीक उनका नाम के उलट रहे, खाली चारगो बेटिये भगवान देले रहले। बेटियन के बिआह करे में ऊ टूट गल रहले। अब त कवनो आमदनी के सोतो ना रहे, जबले देह में कस रहे तबले ट्रक चला के परिवार के पालन-पोषण कइले, अब त खेतों आधा से अधिका बिका गइल रहे। रवि धनपत बाबा के स्थिति से अनजान ना रहले तबो बाबा के दिलासा देत कहले "कहीं बाबा, का समस्या बा ? कवनो उपाय निकालल जाई।" धनपत बाबा कहले - "का कहीं बाबू, तहरा से का छुपावे के बा? बेटहा से दु लाख तिलक तय बा जेमे चौरासी खदरा वाला ज़मीन लिखे के पड़ल ह। असों अनाजो पुरहर नइखे भइल, बारात सम्हारे के अलगे चिंता बा अउर आपन बड़हन गाँव ह, गाँव भर के खियावे के चिंता अलगे सतावत बा।"जबाब में रवि कहले- "बाबा, जब रउआ सकान नइखे त एगो काम करीं, गाँव में अंगेया मत घुमवाई। धनपत बाबा कहले- "ई का कहत बाड़ऽ ए बाबू! लोगवा का कही?" अब रवि कुछ देर खाती शांत भ गइले, फेर कहले -"सब रामजी के कृपा से पार लाग जाई बाबा, पुरनिया लोग किस्सा कहेला कि केहू के बेटी आ खेती धइल ना रहेली, सब निबह जाई।" जब रवि के ध्यान अपना मोबाइल पर पड़ल त देखले की घर से तीन बेर फोन आइल बा अउर समय भी रवि के उँहा रुके के इजाजत ना देत रहे। "अच्छा बाबा चलत बानी फेर बिहान भेंट होई"' रवि कहले। अब रवि अपना घर खातिर चले लगले। धनपत बाबा कहले -"बाबू, खाये के बेरा हो गइल बा, मकुनी बनल बा, खा के जा।" रवि चलते चलत कहले कि "फेर कबो बाबा, घर के लोग राह देखत बा, देर हो गइल बा।" रवि अपना घरे पहुँचल, उनका के देखि के सभे खुश रहे। खाना- पीना के बाद जब रवि सुते गइलन त यात्रा के थकावट के बावजूदो उनका नींन ना आवत रहे, उनका दिमाग में बस धनपत बाबा के समस्या नाचत रहे, धनपत बाबा

के रुआँसा मुँह बेर-बेर उनका आँखि के सोझा आ जाय। ई स्थिति खाली धनपत बाबा के ना रहे, गाँव में अइसन ढ़ेर लोग रहे।रवि नया अउर प्रगतिवादी सोच के युवा रहले, आखिर उनका दिमाग में एगो समाधान आ गईल। बिहान होते रवि अपना बाबूजी से कहले कि "बाबू जी, हम सोचत बानी कि अपना घर के एह बिआह में गाँव में अंगेया ना दिहल जाव, मतलब गाँव के ना खिआवल जाव।" रवि के बाबूजी कहले- "ई तू का कहतारऽ, भोरे- भोरे, तहार माथा ठीक बा नु? भगवान हमरा के कवना चीज़ के कमी देले बाड़े अउर हमार सरधा के का होई? लोग का कही?"

रवि अपना बाबू जी के समझावत कहले-, "रउआ ठीक कहत बानी बाबूजी कि भगवान के कृपा से हमनी के कुछू कमी नइखे,जमीन जायदाद, आमदनी गाँव भर में सबका ले ढ़ेर बा, बाकिर हमरा चिंता बा अउर लोग के जे एक दूसरा के देखा-देखी के चलते ना सकान होते हुए भी एतना बड़हन गाँव के, बेटी के बिआह में खिआवे के बोझ सहत बा, बेटहा के तिलक देबे के बा ओकर चिंता अलगे झेलता।"

रवि के बाबूजी कुछ देर सोचले ओकरा बाद कहले कि "तहरा जवन नीमन बुझाव समाज खातिर उहे करऽ।"

अब रवि गाँव भर के लोग के पंचायत बिटोरले अउर कहले कि " हम अमीर, गरीब, छोट, बड़ सबका के ध्यान में राख के कहल चाहत बानीं कि हमनी के एगो नियम बनावल जाव कि बेटी के बिआह में सभे बरात के आदर सत्कार में सहयोग जरूर करी बाकिर एतना बड़हन गाँव के खिआवल बंद कइल जाव। आ ई नियम हमरे घर के बिआह से लागू होई।"

सभे सहमति जतावल। रवि के परिवार गाँव भर में पढाई, लिखाई ,सम्पति में ऊँच रहे, रवि जानत रहले की कवनो भी समाज अपना में जेकरा के बीस बुझेला ओकर अनुशरण करेला। रवि के दिदिया के बिआह में गाँव में अंगेया ना घुमल तबो गाँव के सभे लोग बारात सम्भारे में सहयोग कइलस। अब 15 दिसम्बर के धनपत बाबा के बेटी के बारात आइल। धनपत बाबा के बेटी के बिआह भी खूब धूमधाम से भइल। रवि सहित गाँव भर के नवहा जबले बिदाई ना हो गइल तबले एके गोड़ पर खड़ा रहले।धनपत बाबा के तनिको ई महसूस ना भइल की उनकर कवनो बेटा नइखे। तिलक त धनपत बाबा खेत बेच के दे देले रहले बाकि बारात के आदर सत्कार के खर्चा ,सामान ,आनाज कहाँ से आइल ,ई बात रवि ,धनपत बाबा अउर समय के अलावा केहू ना जानल। आज भी भरतपुर गांव में बेटा के बिआह में गाँव भर के लोग भोज दबावेला अउर बेटी के बिआह में गाँव भर के लोग सहयोग करेला बाकि ओतना बड़हन गांव के भोजन करावे के सवाल ना रहेला,अब केहू ना कहेला कि लोगवा का कही??

मुक्तक

लोगवा का कही?

एही के चक्कर में हर दुःख के घोंट पियेला लोग।

गतर-गतर फाटल कपड़ा में पेवन सीएला लोग।

✍शुभम सिंह

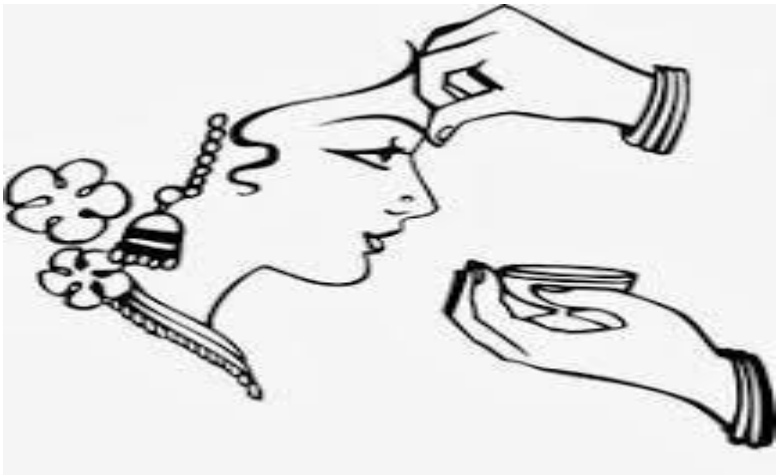

गोधन आ रेंगनी के कांट

आज सभ जगहा अपना संस्कृति के लोग भूला रहल बा, आ जदि केहू एहिके इयाद रखले बा चाहे जोगा रहल बा त ओकरा के अकराइन नियन हीन ताकल जाता। अइसन में दियरी के बिहान भइला जब गाँव घर में माई बहिनी लोग गोधन पारेली त ओहिजा घर के मर्दाना लोग के डिउटी लागेला रेंगनी के कांट खोजे के, काहे कि आपन-आपन भाई-भतीजा के सरपला के बाद मेहरारु आ लइकी सभ एही रेंगनी के काँट के अपना जीभ पर गड़ावेली आ अपना के दंड देवेली लो।

ऐं! का भइल रऊआ, ई पढ़ल छोड़के आगे काहे बढ़ रहल बानी?.....का कहतानी रऊआ, ई रुचत नइखे? ....चलीं कवनो बात ना.....हम जानत बानीं, रउआ सभे इहे सोंचत होखबि कि हम ई का लेके बइठ गइनीं? त साहेब ई बात हम ऐ से कह रहल बानीं कि दियरी आ गोधन के बाद चार दिन चले वाला प्रकृति पूजा के सबसे बड़हन परब छठ शुरू हो जाला। जहाँ दियरी के तइयारी में हमनी अपना घर-दुवार के साफ-सुथरा करिले सन् आ घर के कुल्हि कचरा-कबाड़ निकाल के बहरी फेंकी ले जा, उहईं नदी-नाहर आ पोखरा के घाटन के साफा कइल भूला जाइले जा। एही के ध्यान में राख के हमनी के पुरखा-पुरनिया लोग गोधन में रेंगनी के काँट के उपयोगिता के शुरुआत कइल। रेंगनी के काँट के विशेषता हऽ कि ई साफ-सुथरा जगहा पर ना होखेला, ई हरमेसे गंदा, गोबर-गोथार आ काई-कीच आला जगहा प निपजेला। जब हमनी एकरा के खोजत गाँव के नदी-नाहर चाहे पोखरा-पोखरी के किनारे चहुँपेलीं सन् तब हमनी के नजर उहाँ चारु ओर फइलल गंदगी पर जाला, आ हमनी एह सभ जगहन के भी साफ करे के बारे में सोंचीले जा। गोधन कुटइला के बाद हमनी हँसुआ- कुदारी लेके पहुँच जाइले सन् गाँव में बनल सभ छोट बड़ घाटन के सफाई करे। छठ परब प्रकृति के पूजा हऽ आ एह में प्रकृति में उपलब्ध सभ चीज के प्रयोग कइल जाला। छठ में साफ सफाई आ सुचिता के पूरा धेयान राखल जाला। एही से गोधन में रेंगनी के काँट के जरुरी बनावल गइल बा।

गोधन आ भइयादूज के हार्दिक शुभकामना के साथे

राउर आपन

राम प्रकाश तिवारी "ठेठ बिहारी"

मुक्तक

(१)
सुबह शाम गुल बगिया गइल करीं
राखीं मन के शुद्ध ना मइल करीं
मजा बा खत मे ऊ मोबाइल में कहाँ
कबो-कबो खत से भी गुप्तगू कइल करीं
(२)
चमकत बा बिजुरिया त कहीं-ना- कहीं गिरबे करी
घेरले बा बदरिया त कहीं-ना-कहीं बरसबे करी
केहू के समइया एक जइसन ना रहेला हरदम
केहू केतनो ढक ले चाँद के एक ना एक दिन निकलबे करी
(३)
केहू ना केहू से कम बा इहाँ
सभे डुबल दुखे गम बा इहाँ
घमंडे चूर बा लोगवा देखीं
सबके भीतर भरल हम बा इहा

- **अनिल कुमार**

गॉव- बडहरा
पो०+पु०- गोपालपुर
जिला- गोपालगंज (बिहार)

उल्टा के व्यापार

आजकल भारत में फइलत, उल्टा के व्यापार बा,
जे बनत बा साधु, सच्चा, सिधवा, बूझीं कि बेकार बा।

स्टाइल मारेला हमनी संस्कार के भुला गइनींजा,
फैशन में फाटल कपड़ा पहिन, फेरु गरीबी में आ गइनींजा,

संस्कृति केतना नीक रहे, जवना के हमनी भुला गइनींजा,
आत्मगौरव पीछे छूटल, चरित्र के पान चबा गइनींजा,

समझदार के देख के लागे, बुरबकवे होशियार बा,
आजकल भारत में फइलत..... I

सहमत होईं त आईं मिलके, गलती के सुधार कइलजा,
उल्टा हमनियों का होखल जाई, तनी ओहि में बदलाव कइलजा,

फर्ज त ह विरोधी के जन छोड़ीं, तुरते ओ' से 'संग्राम' कइलजा,
उल्टा करीं नफरत के बदले, आईं ओकरा से प्यार कइल जा,

देखलजा कि बुद्ध के कहल, केतना कारगर बा,
आजकल भारत में फइलत.....I

- **संग्राम ओझा "भावेश"**

जबले सईयां ना अइहें

जाके अउरी कहीं सावन मनइहऽ बदरा
जबले सइयाँ ना अइहें ना अइहऽ बदरा
----- --------oooooooo----------

बिरहिनिया के बा हथजोरी
झँकिहऽ ना मेघा हमरी अँगना के ओरी
मोरा जरत जिया ना छनछनइहऽ बदरा
जबले सइयाँ न अइहें ना अइहऽ बदरा
----- --------oooooooo----------

मेंहदी महावर झुलुवा कजरी
उनका बिना ना भावे ननदो के नगरी
दिलके ममिला बा बात जनि बढ़इहऽ बदरा
जबले सइयाँ न अइहें न अइहऽ बदरा
----- --------oooooooo----------

बिचरेलऽ तूँ देसा-देसी
देखितऽ काहे ना अइले पिया परदेशी
पीर मनवा के उनसे सुनइहऽ बदरा
जबले सइयाँ ना अइहें ना अइहऽ बदरा

----- --------oooooooo----------

- गीत - आनन्द गहमरी
(गहमर ग़ाज़ीपुर उ.प्र.)
मो० - 7376830418

हमारा पीछे परल बा जमाना

कइले बानीं खता का हम प्यार कइके?
हमरा पीछे परल बा जमाना हो राम ।
चूक कइनीं का लभ के इज़हार कइके?
हमरा पीछे परल बा जमाना हो राम!
----- --------oooooooo----------

राधा कान्हाँ के निच्छल कहानी नियन,
प्यार पावन हऽ गंगा के पानी नियन,
गलती कइनीं का सच पे एतबार कइके?
हमरा पीछे परल बा जमाना हो राम!
----- --------oooooooo----------

प्यार जिनिगी के गहना हऽ इंसान के,
प्यार पूजा हऽ बन्दन हऽ भगवान के,
कइनी बाउर का रब से दु-चार कइके,
हमरा पीछे परल बा जमाना हो राम!
----- --------oooooooo----------

सुनले बानी कि जिनगी ई संगीत हऽ,
प्यार संगीत के सुरमयी गीत हऽ
भूल कइनीं का सुर के सिंगार कइके?
हमरा पीछे परल बा जमाना हो राम!

- गीत - आनन्द गहमरी
(गहमर ग़ाज़ीपुर उ,प्र,)

ओराइले बोलऽता

बबुआ कहल भइया के
कवरा देहल गइया के
आ आँगन में चहकल गरवैया के
ओराइले बोलऽता
हेरिटेज में धराइले बोलऽता

इनार के सीतल पानी
इया के कथा कहानी
आ बाँस के टाटी पलानी
ओराइले बोलऽता
हेरिटेज में धराइले बोलऽता

मूँज के बरुआ
आचार के भरुआ
आ खेत के अगोरुआ
ओराइले बोलऽता
हेरिटेज में धराइले बोलऽता

चउरठ के कसार
भूँजा के गोंसार
बेचा-किनी बइसाख के करार
ओराइले बोलऽता
हेरिटेज में धराइले बोलऽता

पहरुआ के ठनकल
रातरानी के गमकल
आ महिया के डभकल
ओराइले बोलऽता
हेरिटेज में धराइले बोलऽता

बेंगवा के टरटराइल
जाँत के घड़घड़ाइल
आ ओखर के कुटाइल
ओराइले बोलऽता
हेरिटेज में धराइले बोलऽता

खेत के बाद खरिहानी
घर के बाद बथानी
स्कूल के बाद गाटा घुघुनी के दोकानी
ओराइले बोलऽता
हेरिटेज में धराइले बोलऽता

होली में गवाइल फगुआ
भोजन में सनाइल सतुआ
खेत में खोटाइल बथुआ
ओराइले बोलऽता
हेरिटेज में धराइले बोलऽता

बाबूजी नाट्य कलाकार आ कवि हईं,
उहाँ के दुःखी होके हमरा से कहतानीं--

जरता तवनो बुताइले बोलता
समाजो अगुताइले बोलता
सइतलका सहेज ल ए बेटा
ना त उहो ओराइले बोलऽता

- **राजू उपाध्याय**

थिएटर एंड फिल्म अभिनेता
सिवान(वर्तमान में मुम्बई)

आदमीयत

ज़िनिगी में छिहत्तर गो झमेला के बादो संतोष परधान के दुख राति के घरे लौटे बे अरू बढ़ि जाला, जब कतिरामोड़ प आवते कुक्कुर उनका के तड़िआवे ल सन्....

कब्बो दिन में गइले बेमतलब उनुका पाछा ना दउरिहँसन्..लेकिन ना जाने काहें रात होते.. ई ससुरन्ह के का हो जाला.. .संतोष के समझ में ना आवे..

संतोष प्रधान डुमराँव टेक्सटाइल मिल में काम करे लें.. आ अठबजिआ टरेन से आरा खाती गाड़ी पकड़े ले.. ससुरी गाड़ी कारीसाथ अस्टेसन प रूकि के ज'ले पीछे के पाँच गो मेल इस्परेस के पास ना दी. त'ले कब्बो आरा ना चहुँपाई..हमेशा दु घरी रात बितला प आरा अस्टेसन से उतर के आपन खड़खड़िया साइकिल प चढ़े के परे ला..आ जब कतिरामोड़ के तिमुहान प अइहें..चाहें गरमी होखे भा जाड़ा.. ई सरवा मय खानदान के साथ उनका के तड़िआवे खाती तइयार रहे ल सन्....

ना जाने एहनी के का भेंटाला परधान जिउआ का पीछा !

अइसे ई कब्बो कटले नइख सँ..आ ना ढेर दूरि तले पिठिआवे ले सँ.. एके साथे हाँऊ-हाँऊ करिहऽसँ.... आ चार डेग चहेटि के चुप लगा जइहसँ....

बाकी परधान जिउआ तिमुहान आवते घबड़ा जाला..

ऱउआ रात बिरात काम से थाकल ...घर गिरस्ती के चिंता में तीन पांच के हिसाब जोरत ..साइकिल के पैडिल मारत लौटत होईं...आ अचके अन्हरिया में झूंड के साथ कुक्कुर के चहेटला प नीमन-नीमन लो के बाई कबर जाई.. ई त बेचारू संतोष.. कहे के माने समझते बानीं.. डरे हनुमान जी के पाँच हाली अनेसे नाव धरे लागेलनि..

दिन भ टेक्सटाइल मिल के सहेबवा सतरह हाली कवनो-ना- कवनो काम से दउरावत रहेला , आ ई अठबजिया साली आधा रात बितला के बादे आरा चहुँपाई..आ जब अस्टेसन से कतिरामोड़ आवऽ.. ई सरवा लगेदे खाती तइआर रहेलसँ.. इहो कवनो जिनिगी ह?

रोज नियम से संतोष कतिरामोड़ चहुंँपते ..कुकुरन्ह के भूँके से पहिलहि आपन दुन्नो गोड़ उठाके मोडगाड प ध लेलनि..का जाने कब कवनो कुक्कुर फिली में दाँत गड़ा दी..त दुब्बर देहि के ढोढ़ीं में सोरह गो सूई सदर अस्पताल में जाके दिआवे परी.. देहि के गिंजन हो जाई..

पान के गुमटी के नीचे से हरमेश नटुरा चितकबरा कुक्कुर सबसे जादे तेजी से पिठिआवेला.. संतोष परधान के सबसे जादे डर ओकरे से लागेला..राकस लेखा मुँह बा सरवा के..

तेज़ पैडल मारे के चक्कर में कबो कबो त साइकिल के चएन उतर जाला। अब ई नया बखेड़ा!

साइकिल के चएन चढ़वला के बाद हाथ में जरल मोबिल के करिखा से सउँसे तरहत्थी लेटा जाला.. एने भूख से परान निकलत रहेला , घरे जा के दु रोटी खाए के टाइम में आधा घंटा ले हाथ मलि-मलि के करिखा छोड़ावे के परेला..छी ! नरक हो जाला. हे भगवान!....

कब्बो-कब्बो मन करेला.. ई सरवा कुक्कुरन्ह के ईंटा मारि-मारि के टांग तूरि दीं ..ना त मोंड़ छोड़ा दीं..लेकिन फेनु डेराइबो करे ले की कहईं काटि लेलेसँ.. त?

एक दिन के बात ह..

सावन के बरखा वाली रात रहे.. अठबजिआ राति के बारह बजे पहुँचवलसि..मलकिनी नइहर गयिल रही..घरे जा के खाना बनावल परधानजी के पहाड़ बुझाइल.. त एक पाकिट बिरटानिया आ एक पाकिट पावरोटी गुमटी से लेके साइकिल प बइठते संतोष प्रधान, कालीजी के गोहरवले..हे माई! आजु तूँहें बचइह.. सिंग सिआरी राति में ना जाने केने से चहेटिहसँ..

प्लास्टिक के बरसाती ओढ़ले परधान जी साइकिल के घंटी बजावत दनदनात जात रहन.. संयोग से लाईन ना कटल रहे.. कतिरामोड़ निकल गइल..बाकी आजु ना कवनो कुक्कुर बोलल..आ ना चहेटबे कइलसि.. कवनो हलचल ना..

पान के गुमटी निकल गयिल, कवनो हलचल ना.. कवनो कुक्कुर के पता ना.. बोल बे ना कइलेसँ.. अइसे संतोष गुमटी आवे से पहिलही आपन दुन्नो गोड़ मडगाड प चढा ले ले रहन..

उनुका कल्पना में चितकबरा, साइकिल प लपकल..लेकिन संयोग के बात..केहू ना..

संतोष के हाथ अनायास साइकिल के ब्रेक प चल गयिल..साइकिन के स्टेन लगा के उतर लें..

पीछे गरदन घुमावत अन्हरिया में देखे लगले.. त देख तारे कि चितकबरा के पुरा खानदान गुमटी के नीचे पानी में सरबोथा हो के जीभि निकलले कान आ पोंछ गिरवले पटुआइल बा.. चितकबरा के नाक आ आँखि लोराइल बा, सबन्हि के पेट भूखे हुकु-हुकु कर ता..

दुख आ परेशानी से उदास..

संतोष परधान के मन पसीज गयिल..

साइकिल छोड़ि के धीरे धीरे चितकबरा के परिवार देने बढ़े लगले..अचानक ना जाने कब हाथ कुरूता के नीचे के बगली में चलि गयिल..आ कुछ देर पहिले कीनल बिस्कुट के पाकिट दुनो हाथ से खोले लगले. ..ए चितकबरा.. ए गबरूआ..ए बिसहवा..

एक-एक क के सबन्ह के बिस्कुट के पूरा पाकिट खिया देले.. कुँ-कुँ करत देखि के संतोष के आँखि में लोर आ गयिल..आ बाँचल पावरोटी के पाकिट भी ओहनी के दे के.. अनायास हाथ जोरि लेले.. माफ करसँ, हमरा पाले अब नइखे कुछ..कुछू अवरू रहित त उहो दे देतीं..

आ चितकबरा के मय परिवार पूँछ हिला-हिला के पावरोटी आ बिस्कुट खात..अघा गयिल..चितकबरा आके परधान जिउआ के गोड़ में आपन मूँड़ी लगा के जीभ से चाटे लागल..

संतोष के भुखाइल मन ना जाने कब भर गयिल...भूख पिआस खतम.. दुन्नो हाथ झारि के मने-मन ई कहत कि बरखा में चितकबरा के पूरा परिवार के काल्हो कुछ ना कुछ बेवस्था कइल जाई। संतोष परधान अपना साइकिल देने बढे लगलें..।

** **अखिलानंद ओझा, आरा**

सवाल के गठरी

हमनीं के देश नया नया सवाल उगावे वाला देश ह । कुछ सवाल त परमानेंट बान स जवन कबो ना बदलेलसँ, साँच कहल जाव त हमनीं क ओके बदलले ना चाहींजा। रउवा इहो कह सकिला कि सवाल से लड़ल हमनीं क पुरनका सवख ह । लइकिन के आजादी आ पोशाक प सवाल त सनातनी सभ्यता का हिस्सा ह । ओहिजे बेरोजगारी वाला सवाल प बुरबक नियन चुप रहले में भलाई समझीं ला जा । खुदे कामचोरी क के भरस्टाचार के शिस्टाचार वाला दर्जा दे के नेताजी के भरस्टाचार के गरियावल हमनीं क पुरान आदत ह। किसान खातिर सैकड़ो योजना बनवला के बादो अउरी गगरिन लोर बहववला के बावजूद किसान काहे आत्महत्या करता ? एकर जबाब न हमनीं के लगे बा ना किसान के चिंता करे वाला मलिकार लोग के पास। दहेज बिरोधी आंदोलन में बढ़-चढ़ के हिस्सा लेके, जोर-जोर गर फार के नारा लगवला के बावजूद अपना लइका के बियाह के समय दहेज मांगे में हमनीं क जबान काहे न लड़खड़ाला ? सवाल क त अम्बार लागल बा लेकिन जबाब खाड़ बा गूँग लेखा जइसे ओकरा मुँह में जबाने नइखे । कश्मीर से कन्याकुमारी तक सवाल के फसल लहलहातीया । हमनी के नेताजी लोग एकर जबाब देहला के जगह एके-एक दोसरा प फेके के कला में माहिर हवें लोग । सवाल के घुमावे में ओह लोग के कवनो जोड़ नइखे।

सवाल इहो बा कि सत्तर बरिस क पाकल उमिर में चहुँपला के बाद भी हमनीं के बचकाना हरकत बदलत नइखे। का इहे बेशर्मी, असंवेदना, फूहड़पन के साथ हमनीं क आवे वाला उमिर के सामना कइल जाई ? सदन में हो रहल कार्यवाही आ ओकरा में शामिल सदस्य लोग के ढंग देख के त अइसने लागता। सड़क प गाड़ी चलावे के समय कवनो गाड़ी अगर हमनीं के गाड़ी से आगे निकल जाई त हमनीं के आगे निकले वाली गाडी के ड्राइवर के मरे-मारे प उतारू होइल कवन सभ्यता के निसानी ह ? तनकी-सा गोड़ छुवा गइला प केहू के रॉड से मार-मार के जान लेहल इ कवन मानवता ह ? का शिक्षा आ चिकित्सा जइसन जइसन पवित्र पेशा सिर्फ व्यापार बन के रह जाई ? समाज में लइकिन, मेहरारुन, के ऊपर होत अत्याचार के साथ हमनीं के विकसित देश वाला कतार में आपन नोचल मुँह ले के खाड़ रहल जाई ? हाले क सावन में हमनीं के देखनींजा शिवभक्ति में नाचत-गावत भक्तजन के टोली में एगो मातृशक्ति क चार पहियवा गाड़ी से तनिका-सा छुवा गइल त भक्तजन कितना उग्र हो गइलनि। जबरदस्त तोड़ फोड़ के साथे साथ सरकारी सम्पत्ति के भरपूर नोकसान भइल, बड़ा मोसकिल से ओहि मातृशक्ति के जान बचावल जा सकल बाकिर गाड़ी ना बाँच पावल भक्तन के किरोध से। इ कइसन भक्ति ह। पाथर में भगवान के कामना आ इंसान में बसल भगवान क वजूद के कवनो कीमत ना? नया स्कुल कॉलेज दिन-प-दिन खुलते जातानसँ । ई समय के मांग बा । एहिजा से करोड़ो युवा डिग्री लेके बाहर आवताड़न लेकिन सबके नौकरी देहल सम्भव नइखे। त काहे ना सरकार अइसन शिक्षा के व्यवस्था करतिया जवन व्यावहारिक आ रोजगार दिवावेवाला होखे।सवाल के पाछे सवालन क लमहर फेहरिस्त बा लेकिन ओकर जबाब नदारद बा । इंसानियत, मानवता, संवेदना वाला बीया ओरात चल जाता। एकरा बिना इंसान क जिनगी कइसे चली ?

- **तारकेश्वर राय "तारक"**

ग्राम+पोस्ट : सोनहरियाँ,भुवालचक,
जिला : गाजीपुर, उत्तरप्रदेश

विकास भैया जल्दी जल्दी डेगवा चलावऽ.....

भारत के अंग्रेजन से मुक्ति दिलावे में कांग्रेस के योगदान के नकारल नइखे जा सकत । हमनी के अंग्रेजन से आजादी त मिलल बाकी नेता के गुलाम बन के रह गइनी सन । १५ अगस्त १९४७ से पहिले भी अलग अलग तरह के बैनर, पोस्टर आ झंड़ा रहे आ आजो बा । गांधी के स्वराज्य के सपना बुकनी - बुकनी हो गइल । रामराज हवा मे उधिआ गइल ।अंग्रेजन के जगह पर खादीधारी आ उनकर चमचा बेलचा लो ले लेहलक ।भारत एगो अइसन देश जेकरा के हमनी माई के बराबर दर्जा देनी जा, बाकिर आज ओकरा के भुला के सबकेहु आपन पाकिट आ अपना सवारथ के सिधी मे लागल बा ।

फेकटरी खुलल नयका सबेरा लेके आवे ला, बाकिर ले के का आइल त प्रदूषण, सड़ांध, दुर्गन्ध, शोषण, अत्याचार । भारतीय सत्ता के हस्तांतरण के ७५ साल २०२२ मे पुरे वाला बा आ मौजूदा सरकार प्रयास करत बा कि कम से कम २०२२ तक लोग हाथ धो के खाना खाये के सिख जाओ, बाहर शौच कइल छोड़ देव । इहे ह हमनी के पचहतर साल के तरक्की। आज ले रहे ना आइल ।

देश बाँटल गइल, धर्म के आधार पर पाकिस्तान अलग भइल आ भारत सर्व-धर्म समभाव के माला जपत रह गइल । ई खराब नइखे मिल-जूल के रहला से तरक्की होखेला, खुशहाली आवेला ।

एह दौर मे आतंकवाद से जहां सउसे दुनिया परेशान बा ओहिजां भारत बाहरी आ भीतरी दुनू आतंकवाद से परेशान बा । पहिले बिचारधारा के लड़ाई चले ।समाज मे मनभेद बाचल रहे बाकिर मतभेद ना चलत रहे ।अब स्थिति बदल गइल बा। अब बिचारधारा के नाम पर जहर बोआत बा, नफरत फइलावल जात बा । पंथ,सम्प्रदाय, आ जातिवाद के आग मे भारत झउसा रहल बा । बुद्धिजीवी लोग गरीब मजदूरन आदिवासियन के भड़का के ओकरा हाथ में बन्दूक थामा रहल बाड़े लो । बड़का- बड़का फोड़ा बनल जा रहल बा माई भारती के देह पर बाकिर अभीओ ना लउकत बा, ना बुझात बा ।

गिरोह का गुटबाजी से देश आगे ना बढ़ सकेला । झंडा ढोवे से ना पार्टी बड़ होला ना भाषण देवे से नेता बड़

होला । आपन -आपन खोंइछा भरे के चकर मे केहू कही अगर नजाइज होत भी देखत बा त चुपी साध लेत बा आ कहत बा अपना मन में कि हमरा का? जवन चलत बा तवन चले द ।कबो -कबो इहो सोच आ जाला कि हम अकेले भला का कर सकिले?

वोट देहला से खाली आदमी के आपन काम ख़तम ना हो जाला, भारत जइसन देश में काहे कि इहवा के सिस्टम अब सड़ चुकल बा ।मौजूदा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सरकार कहत बा कि सफाई राखी, हमनी के साफ़ रहे के चाही । लाख गाला फाड़ के चिलइला के बादो स्थिति में अमूलचुल परिवर्तन अभी नइखे आइल । सरकार के साथे साथे हमनी सब केहू के भी बदलाव के आत्मसात करे के पड़ी ।जन जन के सुरक्षा, सामाजिक समरसता, शिक्षा, रोजगार कवनो भी देश के विकास के आधार स्तंभ होला ।

एहमें कवनो दू गो राय नइखे कि भारत एगो विशाल देश ह । क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से ई दुनिया के सातवाँ सबसे बड़ देश ह । जनसंख्या के हिसाब से भी एकर स्थान संसार में दूसरा बा । आपन देश दुनिया के विकासशील देश के श्रेणी में आ रहल बा आ ई तीव्र गति से विकासमान बा। इक्कीसवीं सदी में भारत विकसित राष्ट्रन के पंक्ति में खड़ा होखे खतिरा लालायित हो उठल बा।

बाकिर भारत में नक्सल अपराध दर दिन-प्रतिदिन बढ़ रहल बा। बलात्कार, डकैती, दहेज अउरी हत्या के क गो मामला हर दिन दर्ज कइल जा रहल बा। कई मामला के त सुनवाई भी ना हो पावेला। शिक्षा के अभाव, बेरोजगारी अउरी गरीबी विकसित भारत के राह में सबसे बड़का रोड़ा बा ।अपराध मुक्त भारत भारत, शोषण से मुक्त भारत ,भ्रष्टाचार से मुक्त भारत कब होई? ई सपना इहवाँ हर आँख में बाटे बाकिर सब केहू दोसरा के ऊपर आपन डाल के आपन पीछा छोड़ावत लउकत बा ।

भारत पिछला कुछ दशक से तेजी से औद्योगिक विकास, तकनीकी उन्नति अउरी कई अन्य क्षेत्र में प्रगति कर रहल बा । हालांकि अभी भी सुधार के बहुत गुंजाइश बा। भारत के पहिले के समय में एकरा समृधि के कारण ही सोना के चिड़िया कहल जात रहल रहे। देश फेर से ओही गौरव के प्राप्त करे एकरा ला सब केहू के सामूहिक रूप से प्रयास करे के चाही । देश में अभी जवन राष्ट्रवाद के चिंगारी जलल बा ऊ बंद ना होखे के चाही ।देश से बड़का कवनो धरम चाहे मजहब ना होला ,राष्ट्रवाद खुद में एगो परिपूर्ण धरम ह । सब केहू के राष्ट्र के नाम पर मरे जिए ला हरदम तेयार रहे के चाही । सरकार के भरोसे सब कुछ ना होखेला बाकिर इतना बा कि समाज में हर तरफ लोग आपन आपन जिमेदारी समझे लागल त बदलाव जरुर आई । समाज के बदलला से बदलाव आवेला आ देश बदलेला । इक्कीसवा सदी भारत के सदी बने ओहला हमनी सब केहू के बदलाव के बाहक बने के पड़ी ।आखिर सरकार के आलोचना कब ले होई। आखिर सरकरवो त राउरे आ हमार नू चुनल हवे। त धेयान केने बा? आई, बदलाव में आपन आपन जोगदान देहल जाव आ बदलाव के आत्मसात करे के दिशा में कदम बढ़ावल जाव ।काहे कि साँचो जब १२५ करोड़ के डेग एक साथे बढ़ी नू त देश कहाँ से कहाँ पहुँच जाई । मिल-जुल के सब केहू के गुनगुनाये के चाही कि विकास भैया जल्दी -जल्दी डेगवा चलावऽ..... ।

- जलज कुमार अनुपम

अपनापन

सरगही एगो छोटे टोला रहे। समतल उपजाऊ माटी रहे सरगही के। अभावो का जुग में अनपूरना माई की किरपा से पेटकट्टी के नौबत गाँव में केहू की घरे ना आवे। छोटहने टोला में चार-छौ घर सब बिरादर बसल रहे। सबका बीचे परेम-भाव भरपूर रहे। बहुत अधिका त केहुओ का ना आँटल रहे, बाकिर श्रम-आधारित गँवई बेवस्था में सबकर काम एक-दूसरा की सहजोग से ठीके-ठाक डुगुरि जाव।

रामसनेही, जाति के गोंड़ रहलें। सुख त उनका नान्हे से कब्बो नसीब ना भइल। इमान आ मेहनति की बले जिनगी के धुपछाहीं कवनो तरे कटत रहे। खेत त नाहिंए की बराबर रहे। बीच गाँव में दू कमरा के खपड़इला घर आ ओही की असोरा में पुरनिया के थाती, नौ अइला के गोनसारि। देबी-देवता से बढ़ि के सरधा रहे गोनसारि खातिर रामसनेही की मलिकाइन का मन में। भुजौनी में जौने थोर बहुत रहिला-मटर, जौ-गोजई, रहर, मकई मिल जाव, कब्बो रोटी-भात के अभाव भइले पर गरीब की लइकन के ऊहे त जिआवन होखे।

रामसनेही, गँउए में एगो पंडीजी की घरे खेती-बारी के कार जोगा देसु। दइब के अइसन लीला की हैजा महामारी बहुत कम्मे उमिर में पंडीजी के उठा लिहले रहे। पुरुखा-पुरनिया के धरम-बेवहार जोगवे के आ चारि गो अँखुआत लइकन के पालि-पोसि के बड़ करे के जिम्मा पंडिताइन पर आ गइल रहे। पंडिताइन बहुत बड़हन घर के बेटी रहली। भगवान रूप-गुन, नेम-धरम सगरी से त खूब सँवरले रहनी बाकिर अइसन अभागि की बहुत कम उमिर में जिनगी से सिंगार रूसि गइल। पंडिताइन आपन कौनो बड़हन दोस मानि के दिन भर बस पूजा-पाठ, दान-बरत में ही लागल रहँस। दया के त मुरती रहली पंडिताइन। केहू आसरे के लरिका होखे, ओकरा ऊपर पंडिताइन के नेह-छोह अपने लरिकन लेखाँ बरिसल करे। गाँव के सब लरिका उनका छोह में भोराइल रहें, अपना माई से तनिको कम ना माने सन। सब लरिका दुलार से उनके कनिया कहें कुल आ धीरे-धीरे बड़-छोट सबकी जबान पर पंडिताइन के इहे नाव चढ़ि गइल रहे।

रामसनेही खूब इमानदारी से खेती के काम करँस। उनका मन में ई रहे कि जबले जाँगर-पाँजर चली हम आपन धरम जोगा देब। तब ले पंडीजी के चारू लरिकवा सयान हो जइहें। बाद में सब अपनहीं सम्हारे लगिहें। कनियो अपना ओर से जानत भर में कुछु उठा ना धरें। गोंएड़ा-सरेह मिला के पंडीजी के डेढ़ बिगहा खेत रामसनेही की जिम्मे रहे। ओकरा अलावा तीज-तेवहार पर रामसनेही की मलिकाइन के, लरिकन के कपड़ा लत्ता के खयाल कनिया जरूर राखें। दूनू परिवार के दिन भगवान की किरपा से नीके निकलत रहे।

भादो के महीना, घनघोर बदरी छपले रहे। तिजहरिए का बेरा बुझा की गदबेर हो गइल बा। बरखा के आगम देखि के रामसनेही दूनू बैलन के नाद पर से उकड़ावत रहलें आ उनकर मलिकाइन गोनसारि के लवना-पतई सहेजे में लागल रहली। तवले उनकर समधी जी अपना पितिआउत भाई घाला दुआर की ओर आवत लउकनी। रामसनेही के मलिकाइन घूघ लमहर करत झपकल घर

का भीतरी समा गइली। परनाम-पाती भइल। रामसनेही बँसखटिया बिछा के ओइपर चदरा डललें। दूनू हीत बिराजल सब। डलिया में सोन्ह भूजा आ मीठ्ठा के भेली आइल। पनपिआव भइल। जब रामसनेही डलिया-लोटा लेके अँगना में धरे गइलन तब मलिकाइन के मूँह ओरमल पवलें। पूछलें त पता चलल कि घरे ना पिसान बा ना चाउर। हीत सब के भोजन के बेवस्था कइसे होई? भदवारीे की चिकिर-पिकिर में राशन तैयार ना होखे पावल रहे। घरे त लरिका भूजा खाके सुति जइतन सँ। हीत सब के कवनी तरे भूजा दीहल जाई। ओहू में बेटी की घर के बाति बा।

छनहीं भर में उछाह की जगहा फिकिर पसरि गइल रामसनेही का चेहरा पर। भगवान के गोहरावे लगलन। कइसहूँ भरम राखीं देवता सब। तवलहीं उनकर मलिकाइन कहली 'कनिया जानि जइतीं त इज्जति ढाँपे के कुछ उपाय जरूरे कइ दिहतीं'। रामसनेही कहलें कि संझा के जून भइल बा। तूँ दीया बार$, हम तनिका देर बाद जाईलें पंडीजी की घरे। छन भर के मोहलत ले के रामसनेही कनिया की अँसोरा पहुँचलें। बड़कू लरिका से भीतर हालि दिहलें। कनिया दोगहा में आ के पल्ला की ओटे से पूछली-' 'कहीं कइसे अइनी हँ?' रामसनेही सकुचाते-सकुचाते सब हाल बतवलें। त एइमे घबराए वाला कवन बात बा। बड़ा भागि से बेटी के ससुर आइल बानी। रउरा जा के उहाँ सबकी सेवा टहल में लागीं, हम कुछ बेवस्था क के भेज तानी।

जुरते बड़का लरिका भेजि के कनिया रउताइन के बोला लिहली। देखीं रउताइन! 'बेटी के ससुर आइल बानी। बरखा-बुन्नी के दिन बा। हमरो घरे पिसान ओरा गइल बा। लेकिन ए बेरा के माड़ल आटा आ काटल तियना त बड़ले बा। रउरा ई ले के कवनो उतजोग से उहाँ की अंगना पहुँचवा दीं। एक नदिया सजाव दही अपना घर से पहुँचवा दीं। ओकरा बदला में चाउर हम काल्हि दे देब। हीत सब का आदर-भाव में अपना सके भर में कौनो कमी ना होखे के चाहीं।' रउताइन समान लेके चले की बेरा पूछि दिहली 'ए बेरा बाबू सब का खाई कनिया?' 'ओकर फिकिर मति करीं। ऊ त अपना घर के बाति बा। उहाँ की गोनसारि से काल्हिए के भूजा भुजवा के मँगवले बानी। आजु त अब ओही पर कटी।

रउताइन एक-टक कनिया के निहारते रहि गइली। मनहीं में कहली 'कनिया साँचो रउरा बहुत बड़हन के बेटी बानी'। जब चले के भइली त कनिया कहली 'तनिका भर अउरी बिलमि जाईं। कहीं समधी सब फजीरे निकले लागे सब त उहाँ के मलिकाइन बिदाई कइसे करब।' थोरहीं देर में दू गो पियरी धोती की कोना में पाँच-पाँच गो रुपिया बान्हि के थमा दिहली।

एक नदिया सजाव दही आ बकिया सब समान लुका-छिपा के रामसनेही की अँगना पहुँच गइल। खूब सरधा से समधी सब के भोजन-भाव भइल। अगिला दिने जब हीत सब के बिदाई हो गइल तब रउताइन रामसनेही का घरे अइली। जब रामसनेही आ उनके मलिकाइन सब बाति जानल लो त हिरदय बढ़िया गइल, आँखिन से लोर के धार फूटि चलल।

पहिले की गाँवन का अनपढ़ समाज में आपन हरज सहि के धरम निबाहे वाला रामसनेही रहँस। ओही जुग में आदिमी-जन के इज्जति जोगवे खातिर अपना लरिकन की थरिया के रोटी दोसरा की आगे परोसि देबे वाली कनिया रहली। अब त सभत्तर पढ़ल-लिखल लोग बा। ऊ पुरनका बुरबक लोग बस कथा-कहानी में बाचल बा।

(शेष भाग- अगिला अंक में)

- **शशिरंजन शुक्ल 'सेतु'**

पछतावा

जिनगी केहू के अपना तरीका से जिए ना देबे । ना एकर कवनो मोल होला आ ना कवनो संगिरहा । बाकी, जब ई अपना पर आ जाले त इतिहास रच देबेले । लोग ओह इतिहास के जनम-जनमांतर तक दोहरावेला । अपने कहेला आ आस-अऊलाद के सुनावेला , बतावेला । अइसने एगो इतिहास रऊआ सभे के सोझा राख रहल बानी । आशा बा कि एह खिसा पर रऊआ सभन के आँखी से दू ठोप लोर जरूर चू जाई ।

रामेश्वर पाँड़े एगो पुरनिया रहनीं । लोग ऊहाँ के काका कहत रहे । काका के तीन जाना लइका भइलें । शालिग्राम पाँड़े , परशुराम पाँड़े आ बलिराम पाँड़े । तीनों जना महीन कनूनियाह भइल लोग । रोज केहू ना केहू में फूट डाल के मजा लेबे लोग । काका के तीनों बेटा सयान होत रहलें बाकी चुगलखोरी ओ लोग के ना गइल । लइका तीनो सयान होइए गइल रहलें त काका बो रोज बियाह के गीत गावस । उनका सपना में अपना तीनों पतोह के रूपवान चेहरा लऊके । रोज काका से ओ लोग खातिर लइकी देखे के कहस । अपना भाई से अगुअई करावे के कहस । भाई बीच में पड़लें आ एके घर में दू जाना भगिना के जेंउआ बहिन से बियाह करा दिहलें । दू जाना भाई लोग के एके माड़ो में बियाह भइल रहे आ अपना-अपना कनिया के लेके डोली में चल आइल रहे लोग । काका बो दुनू पतोह के खूब बढ़िया अगुआनी कइले रहली । हमार बाबा बतावेनी कि ओ बेरा के जमाना में दुनू जाना के तीन-तीन भरी के सोना के सिक्का दहेज में मिलल रहे । दुनू पतोह लोग सुन्दर रहे आ आवते सब कुछ सम्हार लिहल लोग । १३ गो कमरा के मकान के बीचे एगो अंगना रहे आ पतोह लोग अंगना में खूब फइलवर होके रहे , काहे कि घर में अबे बियाह होखे के शुरू भइल रहे आ ई नया घर बनल रहे । तबो ओह घरी मरद लोग दुअरे सूते आ मेहरारू कुल्हि घर में । अंगना में बुढ़ियो लोग आपन खटिया बिछा लेबे । दुअरा पर बूढ़ - जवान - लइका - सेयान सभकर बिछवना बिछे आ दुआर रजगज रहत रहे । काका , घर के मुखिया रहनी । सभे उहाँ के आदर करे । सभे बात मानत रहे आ घर परिवार में उहें के कहल होत रहे । सभकर दिन बढ़िया से बीतत रहे । काका बो के दुनू पतोह के जइसन रूप रहे ओइसने गुण से भरल रहे लोग । दुनू बहिन घर के पहिल पतोह रहला के चलते खूब मान-दुलार पावे लोग ।

अब काका बो अपना तीसरा बेटा आ (कथा के आधार) के बियाह के फेरा में लाग गइली । छोट बेटा के नाम बलिराम रहे । उनकर नोकरी रेल के किरान ड्राइवर के रूप में भइल रहे । दुआर पर अब अगुआ आवे लगले । काकी के खुशी के ठेकाना ना रहे । ऊ जवन अगुआ आवे ओकरे किहाँ चाहस कि बियाह हो जाए बाकी काका अपना अनुभव आ विवेक से काम लेत रहनी । ऊहाँ के छोट बेटा के बियाह बड़ा रजगज आ शानदार तरीका से करे के चाहत रहनी । काका बो रोज ऊहाँ के सुनावस कि कहीं जल्दी बियाहवा तय कर दीं आ काका बस सुनिए के रह जाईं । छपरे जिला के विश्वनाथ मिसिर अपना बहिन के बियाह खातिर पहुँचलें आ सब बात बनियो गइल । बियाह खातिर तीन सौ रूपिया दहेज तय भइल । मिसिर जी मान गइनी । दिन रोपा गइल आ काका बो के खुशी देखल बने ।

तय दिन पर बियाह भइल । काका बो फेर अपना छोटकी पतोह के अगुआनी कइली । घर में अब तीन गो पतोह आ गइल रहे लोग । तीसरको पतोह दुनू पतोह से सुन्दर रहली । बलिराम पाँड़े के भाग के लोग सराहे । दिन अइसही बीते लागल रहे ।

बलिराम पाँड़े के दू जानी बेटी आ दू जाना बेटा जनम लिहलें । बड़ जना के नाम दिनेश आ छोट जना के नाम महेश रखाइल । बेटी के नाम देवता आ तारा रखल लोग । छोट बेटा महेश जतने मृदुभाषी रहलें दिनेश ओतने टेढ़ , उदंड आ झगराह । उनका अपना बल पर अतना गुमान रहे कि केहू

से कुछ होखे त सीधे मारे दउरस आ मारिए देस । दुनू जना पढ़े जाए लागल लोग। महेश पढ़ के आवस त दिनेश लड़ के । घरे अइला पर माई पूछस कि , का पढ़लऽ ह लोग ? महेश सीधा जवाब दे देस आ दिनेश लात देखा के कहस कि खाना देबू कि कुछ चाहऽतारू ? हई लात देख ल , सोझिया देब अबहिये । माई के एह बात के बहुत चिंता होखे कि बेटा के अइसन बुद्धि कहीं ओकर दुश्मन मत बन जाए । एक दिन फेर पूछली त दिनेश का ओर से उहे जवाब मिलल आ माई के झोंटा नोंच लिहलें । ऊ नुस्किया के खाना निकालत कहे लगली कि बाबू हो , अइसे ना बोले के । अबहीं अइसे बोलतारऽ त आगे लोग से के तरे बोलबऽ ? रह जा , एह बेर तहरा बाबूजी से कहतानी । अतना सुन के दिनेश उठलें आ चूल्हा के लगे धइल चइली उठाके माई के मन भर बेंवत दिहलें आ खाना के लात मार के बहरी निकल गइलें । माई दिन भर रोवत रह गइली आ अंग अंग में उनका दरद रहे । ऊ बेटी के बहरी भेज के बलिराम पाँड़े के बोलववली आ एह विषय में उनका से बात कइली आ कहली कि आज स्कूल से अइला पर जब पूछनी ह त लात देखा के कहलें ह कि सोझिया देब आ कई चइली हमरा के मरले ह । बलिराम पाँड़े ठठा के हँसलें आ कहलें कि कवनो बात ना । ऊ बेटा ह । घर के लाठी । आ लाठी कमजोर ना होखे के चाहीं । कहलस ह त कवनो बाऊर ना आ मरलस ह त हम मना क देब । आज के बाद ना मारी । ओकरा खून में गरमी बा । ऊ एकदम ठीक बा । अतना सुन के मेहरारू अवाक रह गइली आ लगली मुँह ताक के रोवे । बलिराम पाँड़े पर एकर कवनो असर ना पड़ल आ ऊल्टे ऊ मेहरारू के लात से मरलें कि ऊ ढिमुला गइली । ऊ जमीन पर गिरल रह गइली आ बलिराम बाबा ई कह के बहरी चल गइलें कि

कुकुरा के जब धीरे से मारल जाला त दुर्र साला कहेलन स आ जब जोर से मारल जाला त चाबस चाबस करेलन स । उनकर मेहरारू ई सुन के भीतरी ले जर गइली । उनका स्वाभिमान पर चोट आ गइल रहे आ ऊ चोट केहू आऊर ना , उनकर सवांग , उनकर मरद देले रहलें । ऊ खीस में बिलबिला के उठली । घर में जाके आपन माँग धो दिहली आ दुआर पर आ गइली । तब के समय में मेहरारू दुआर पर ना आवत रहे लोग । दुआर पर मरद लोग के एकाधिकार रहे । जेठ के घाम में सभे ओसारा में बइठल रहे । ऊ सभका के पार करत दुआर पर आ गइली आ ई देख के सभे अवाक रह गइल । लोग उठे के चाहल त सभका के खबरदार कइली आ बलिराम पाँड़े से कहली कि जा , तहरा जिअला के धिक्कार ह कि तहार बेटा हमरा के अपशब्द कहे , मारे आ तू सुन के चटकारा पारऽ।तहरा अइसन मरद रहला से नीमन कि हम मुस्मात बन के ओकर लात खाईं । सभे ई सुन के सन्न रह गइल । ऊ अतने कह के फुर्ती से अपना घर में भगली आ किल्ली बंद क लिहली । लोग उनका पीछे दऊड़ल । बलिराम पाँड़े मोटहन लाबदा लेके अइलें कि फेर मारब एकरा के , बाकि ऊ किल्ली बंद क लिहले रहली । सारा लोग खोलवावत रह गइल बाकि ऊ ना खोललली । तकरीबन एक घंटा तक सभे चिल्लात रहल कि कुछु करिहऽ मत । केंवाड़ी खोलऽ बाकी ऊ कवनो जवाब ना दिहली । तब सभे के चिंता भइल आ छान्हि पर कुछ नवका लइका लोग के चढ़ावल गइल । छान्ह उजड़ाए लागल । नरिया-खपड़ा दनादन नीचे गिरे आ फूटे । जल्दी जल्दी छान्ह उजड़ाइल । तीन जना लइका नीचे धरान पर कूद गइलें । भीतरी के नजारा देख के तीनों जना चिहा गइलें । एक जना जल्दी से केंवाड़ी खोललें । बहरी के सभ लोग घर में घुसल । सभे देख के चिहा गइल । दिनेश के माई आपन देह पर के साड़ी से फँसरी लगा के धरान पर टँगाइल रहली । नीचे दू बरिस के बेटी तारा रोवत रहली । उनका शायद बूझा गइल रहे कि माई मर गइल बाड़ी । सब लोग दिनेश के आ बलिराम पाँड़े के कोसे लागल । बलिराम पाँड़े के अपना गलती पर पछतावा होत रहे आ लाबदा उनका हाथ से छूट के नीचे गिर गइल रहे । ऊ पछतावा में दिनेश से कहलें कि तहरा के हम आपन लाठी बूझनी बाकी तू हमरे कपार फोड़ दिहलऽ । जा , आज के बाद ना हम तहार बाप आ ना तू हमार बेटा । तहरा से हमरा कवनो मतलब ना रही अब । तू जवन मन करे करऽ , हम तहरा के अब रोकहूँ ना जाएब । जेकरा कहला पर तहरा के रोकबे ना कइनी , अब त कहहीं वाली चल गइली ।

आ उनकर अटल प्रतिज्ञा भइल । ऊ दिनेश के बियाह कर त दिहलें बाकी उनका मेहरारू के बनावल ले ना खास । अापन अलगे बनावस । बाद में महेश के बियाह भइल त उनका मेहरारू के बनावल खाए लगलें । आज तक बलिराम बाबा दिनेश के छुवल पानी तक ना पियलें । दिनेश के मुअला आज पाँच बरिस हो गइल आ बलिराम बाबा छोट बेटा महेश के लगे कए बरिस से बिछवना पर आपन दिन काट रहल बाड़े । मऊअत रोज उनका लगे आके उनका के रिगा के चल जाले , कुछ दर्द दे जाले । ऊ रोज चिल्लालें कि हमरो के बोला ल ना हो । बहुत दरद होता हमरा । बर्दास्त नइखे होत । बाकी उनकर सुनेवाला ओजा केहू ना रहेला ।

प्रीतम पांडे सांकृत
ग्राम - बसडीला,
पो•+थाना-कोपा, जिला - सारण ।

बुचिया (भोजपुरी लघुकथा)

"अरे बुचिया ! ई का होई? किताब !!"

"सब फेंकऽ - फाकऽ,किताब आ डिग्री ई कुल लइकन के हाथे नीमन लागेला"।

""आज ई सब किताब फार फूंक दे तानी"।

लइकी रोवत चिल्लात-" ना बाबूजी अइसन मत करीं, हम पढ़े चाहत बानी"।

बाबूजी चिल्लात कहले कि-" रे बुचिया !!चुपचाप जो घर में।"

पाकिट से मोबाइल निकलने आ पण्डित जी से फोन लगा के कहले कि-

" पण्डित जी बुचिया के हाथ पियर करे के बा ,जल्दी से कवनो निमन लइका बताईं"।

बुचिया बाबूजी के गोड़ ध के रोवत फेरु से कहलस-

" हमरा पढ़े के बा, आ पढ़ के नीमन नोकरी करे के बा, तहार नाम आगे बढ़ावे के बा"।

बाबूजी कहले कि-"ते मनबे ना!! हमार नाक कटवइबे!!, एकरा ले त नीमन रहित कि हम तोरा के जनमते मुआ देले रहिती!!, हई दिन ना नू देखे के परित"!!!

फेरू माई से कहले कि-"सुन तारू हो!!! बुचिया के माई, इहे सिखवले बाड़ू एकरा के ???"ई सब तहार देन ह एकरा कुछ लूर ना आवेला "।।

बुचिया कहली-" बाबूजी हम अभी छोट बानी !!'हंमरा खाना बनावे ना आवेला"!!

"एक बेर कह देहले ,,!!..... ससुरा में मति कहिहै..... ना त तोरा के माटी तेल डाल के जार दिहे सन.....!!!!!

""देखलू हो बुचिया के माई !!!!....ई हमरा से ज़बान लड़ावत बिया"तू आ तहार बेटी कबो ना सुधरबो लो"!!!

एतने कह के खेत मे चल गइले,वापस अइले त बुचिया घर छोड़ के चल गइल रहे।।

रोज बुचिया के माई के ताना दिहल गारी दिहल चालू कइले।

बुचिया शहर की ओर रास्ता बढ़ा देले रहे। मन मे इहे ठनले रहे कि चाहे कुछवु करे के पडे," हम पढाई ना छोड़ब"!!

बनारस जइसन अनजान शहर में पहिली बेर घर से दूर अकेले पहुंचल ।पहिला रात कैंट स्टेशन पर बितल ।विहान भइले रुपिया त रहे ना ।कहां से खाए के?? त हाथ मे बैग लिहले एगो दूकान में पहुँचल नोकरी खातिर,।आपन व्यथा सुनवलस त होटल वाला के लड़की पर दया आ गइल। ऊ कहले कि" हम तोहके पढाइब"

B.H.U. में एडमिशन मिलल आ लड़की डॉक्टरी के पढाई पढ़े लागल ।

एने उनकर ताना सुन सुन के उनकर माई चल बसली ।बाबू बेचारू अकेले गम में दारू के नशा ध लिहले।..... एक दिन उनके एक्सीडेंट हो गइल ।

संयोग से ऊ लड़की डॉक्टर बन गइल रहे आ उनके जान बचवलस ।

फिर उनके साथी एकजना कहले कि डॉक्टर साहिबा जान बचवली ह त ,...कुछ सोच के बुचिया के बाबू मिले के इच्छा जाहिर कइले।।

डॉक्टर साहिबा अइली.... त कहले कि" हम ई एहसान कब्बो ना भुलाइब "।तब लड़की कहलस कि --"बाबूजी हम' बुचिया 'राउर एहसान कइसे चुका पाएब"

"याद बा रउरा कहले रहनी कि -जनमते मार देले रहिती"।!!! आज बचन दी -"कबो कवनो लड़की से ई ना कहब कि लइकी कुछ नइखे कर सकत" ई दोहरा माप दंड के भुलवाई-"

- **गणेश नाथ तिवारी श्रीकरपुरी**

बखरा

रामनाथ अउर सामनाथ दू भाई रहे लो जेमें रामनाथ अपनी छोट भाई सामनाथ से दू साल बड़ रहले..बाकिर सामनाथ के शरीर के आगे दुनू भाई के बीच दू साल के अंतर ना बुझाव, जेसे दुनु भाई हमउमरी लागे लो.....हमउमरी होखला से दुनू भाई संघतिया नियर रहे लो। एक दूसरा के मन के बात बुझे लो, समझे लो अउरी दुनू भाई एक दूजा के मजबूत कड़ी के साथे-साथे कमजोर कड़ी के भी बकायदा समझे लो, बुझे लो। एह से एक दूसरा के मदद करे के ना कहे के पड़े, जेह कारण ओ लो के आपस में प्रेम के धार कलकल बहे... रामनाथ अउरी सामनाथ बचपने से साथे-साथे गेना खेले लो, साथही खाव लो, साथही नहाव लो अउर साथे ही साथे खेती बारी दुनियादारी भी करे लो....खेती बारी के काम में रामनाथ ना चाहस कि सामनाथवा ढेर मेहनत करो आ इहे हाल सामनाथ के भी रहे। उहो ना चाहस कि भाई ढेर मेहनत करस....राम लक्ष्मण के जोड़ी में रामनाथ भोरे भइल उठ जास। गाय गोरु उकड़ा, खिया पिया, गोबर गोंसारि क ध के दतुवन कुला करे लागस, तले सामनाथ भी उठस आ दूध दुहि-दाहि के दुवार बहार देस....दुनू भाई के आपसी मेलजोल, तालमेल अउरी प्रेम समर्पण के चलते गांव के पूछे जवार में ले ए लो के खेती एक नम्बर में आवे....एह तरे दुनू भाई के काबिलियत, तरक्की अउर एकगोटीया आदत के भरे जावर में भइल हाला।

भले ही रामनाथ अउरी सामनाथ के जनम साथे ना भइल होखे बाकिर खेल कूद पढ़ाई लिखाई सारा बचपन साथ-साथ बीतल रहे। अब वियाह भी साथे-साथे हो गइल अउर संजोगवस दुनू जाना के दूलहिन आपस में बहिने रहली सन, अब देयादिन बनली सन....रामनाथ अउर सामनाथ के शादी भइले अभिन दू बरिस भइबे कइल तले दुनू जाना के गोद में एकहक गो लड़िका भी खेले लगले सँ.....भगवान के अइसन लीला देख गाँव दुनू भाई के जश गावे लागल...अब गाँव के बड़ जेठ, बूढ़ पुरनिया इहे आशीर्वाद देवे लो कि भगवान रामनाथवा, सामनाथवा के भाग फ़लाना के भी देस...शादी-बिआह, बाल-बच्चा, खेत-बारी के साथ अब रामनाथ, सामनाथ गाँव में एक नम्बर जाए लागल लो....खेती बरियार त होखबे करे अब मेहरारू लो भी जतन करल शुरू कइल लो... दुनू बहिन के हुनर भी दुनू भाई नियर रहे, जेसे गृहस्ती के चाल तेज गति से चले लागल....ना घरे बइमानी रहे, ना दुवारे बइमानी रहे। एहि से त भाग जागल रहे..रामनाथ, सामनाथ के तुलना में लड़िकन से ज्यादा प्रेम करस जबकि सामनाथ कबो कबो लड़िका लो के थोपिआइयो देसु ...रामनाथ जबे बाजार चाहे खेत खलिहान से आवस उनका के देख दुनू लड़िका कुछ दूर पहिलही से उनका ओर वेग नियर दउड़े सन...कि रामनाथ जउन खाये लायक लियाइल होइहें, तउन जलदिए मिल जाव....कबो रामनाथ के लड़िका आगे पहुँच जाव त कबो सामनाथ के लड़िका आगे पहुँच जाव....एह तरे हसत खेलत दिन बीते लागल....एक दिन रामनाथ खेत से अइले। उनका हाथ में दूगो ऊख रहे। दुनू लड़िका ऊख देख सबसे आगे ऊख पावे खातिर दउड़ले सन....रामनाथ भी दुनू हाथ में एक ह गो ऊख लेहले हँसत हाथ फइला देहले, रामनाथ के ऊख एक नियर ना रहे..एगो ऊख तनी गाजारी रहे, जबकि दूसर ऊख तनी पोड़हर रहे...गाजारी ऊखिया कावर रामनाथ के लड़िका दउडल रहे अउर पोड़हर ऊखिया कावर सामनाथ के लड़िका दउडल रहे...दुनू जाना के लड़िका दउडल बाड़े सन वोही घरी में रामनाथ के पुत्रमोह दबोच देहलस। ई उहे पुत्रमोह ह जवन

महाभारत करवलस, तनकी भर में ही भाई भतीजा के मोह कोस भर फइला भागल, करेजा में स्वार्थ के बिया जामल, बइमानी के शरण मिलल, दूसर जोग जागल एह तरे तनिका खातिर रामनाथ के बुद्धि हेराइल, करम में जउन लिखा जाई तउन टलले ना टलाई...एही से त रामनाथ गाजारी उखिया वाला हाथवा सामनाथ के लड़िकवा की ओर मोड़ देहले अउर पोडहर उखिया वाला हाथवा अपनी लड़िकवा की ओर मोड़ देहले....दुनू लड़िकन के ऊख मिल गइल लड़िकाई बुद्धि लड़िका का जाने सनs पोड़हर ऊख अउरी गाजारी ऊख के बीच के अंतर....ऐहसे जउन ऊख जउना के मिलल तउने ऊख नोचे, छिले, चिभे लगले सन.... जब बैल के एक जोड़ी कदम-से-कदम मिला के साथे साथे आगे बढ़े ले सनs तबे न टायर (बैलगाड़ी) के चाका आगे बढे ला....अब रामनाथ, सामनाथ रूपी बैल के टायर आगे कइसे चली? वो बेरा ई बात जे अर्जुन के रथ चलवले रहे उहे बताइत।

सामनाथ दूर खटिया पर बइठल ई दृश्य के देखत रहले..जब राति के दुनू भाई खाना खाये बइठल लो तब सामनाथ अपनी भाई से कहले कि भाई हो! एगो बात कहे के ह..रामनाथ हँ के इशारा में मुड़ी डोलवले...तब सामनाथ कहले कि भाई हो! अब हमनी के आपस में समझ बुझ लेवे के। हमके लागता अब इकाठा ढेर दिन ना चली, ऐसे बिना हाला-गुला के बाखरा लाग जाव....सामनाथ के बात परिवार के मरद मेहरारू सबका पर बिजली नियर गिरल...मेहरारू रसोई छोड़ आँगना में जुटियइली सन, रामनाथ चुप्पी तोड़त सामनाथ से कहले कि ए सामनाथ! ई तू का कहत बाड़, का भइल ह हो...? सामनाथ कहले कि भाई कुछ भइल ह ना। अब लागता हमनी में बइमानी समा गइल बा, अब एक में ना चली....रामनाथ कहले हमरा से कवनो बइमानी भइल होखे त क हा....सामनाथ कहले ना तहसे कउनो बइमानी नईखे भइल। बाकिर अब बाटा जाव....रामनाथ, सामनाथ के समझावे लगले सामनाथ बटवारा पर अडिग हो गइले...मेहरारू समझवली बाकिर सामनाथ केहू के कुछ सुनबे ना करस....अटी-पट्टी समझावल, बाकी सामनाथ ना वजह बतावस अउर नाहीं केहू के बात सुनस। हित-नात, संगे-संघतिया सभे एक सुर में सामनाथ के समझावल-बुझावल- मनावल बाकिर सब बेकार। सामनाथ मनले ना मानस.....सब हार थाक के बखरा लागे लागल.... रामनाथ कहले कि जवन सामनाथ के चाही तवन ले लेस। हमरा कुछ ना चाही...तब सामनाथ कहले कि पंच पंचायती के फैसला हमनी के मंजूर रही। खेत-खलिहान, घर-दुवार में आधा आधा बखरा लाग जावs....लेकिन हमार एके चाह बा कि ऊखिया वाला खेत हमरा बखरा में आवो। ओकरा सनतिर हम अपना बखरा से गोंएडा खेत, चाहे घड़ारी भी देवे के तइयार बानी....बखरा लागल सामनाथ के बखरा में उहे ऊखी के खेत मिल गइल...बाकिर रामनाथ के आज ले ई ना बुझाइल कि छोटका सामनाथवा के दिमाग में बखरा के बात आइल कइसे?

- **आदित्य तिवारी 'विक्की'**

ग्राम - बभनौली, पोस्ट- छितौना, थाना- बिजयीपुर, जिला- गोपालगंज (बिहार) 842426

खटिया ओंघाए लागल

जबसे बाबा के खटिया ओंघाए लागल
खेत, घर, बैल, हेंगा बिलाए लागल.।

पहिले बारी गिरल, बाद छान्हीं उड़ल
फेर तनि-तनि घर भहराये लागल।

पहिले बेटा गइल, बाद में नाती-पोता
फेर त गऊँवे शहर में समाये लागल।

मुड़के देखे जे जब्बो कबो गाँव के
रो के बोले कि दुनियाँ बिलाए लागल।

लोग एतना दलीदर कबो ना रहे
कि देख शीशा में मुँह शरमाए लागल।

गाँव नाहीं बिलाइल सुन 'रुद्रा'जी
आत्मा लोग के अब हेराये लागल।

बात अउरू बिगड़ते जाई रात-दिन
जब शहर अब देहाते में जाए लागल।

- **अभिनाष मिश्रा (रूद्रा)**

गरीबी क बोरसी

गरीबी का बोरसी में जे पाकल बा,
कहाँ जिनगी का राह में थाकल बा।

ओकरा थरिया में कबो जूठ ना छूटे ,
रोटी खातिर जे गली-गली माँकल बा।

कवनो आफतो के परीक्षा बूझ के चलीं,
मीतो के चाउर बड़ी दिन पे फाँकल बा।

रिश्तन के जिआईं, निभाईं फूँक-फूँक ,
स्वाद का जानी जे खइले तातल बा।

पूसो ना पाला कइल आँचर जवन ,
कइसे लोग कह देहल कि घाँकल बा।

सौ बार सोंचस बुलेट गोड़ बढ़ावे में ,
कहीं सभ के हिसाब नू राखल बा ।

- **अमरेन्द्र सिंह**

रसपान

जिनिगी के सभसे मधुर इयाद साइद बचपने के होला। लरिकाईं के कुछ मीठ स्मृति के असर अइसन गहिरोर होला कि ताउम्र अदिमी ओकर अहसास के अनुभव करत रहेला। पुरान भइला का संगे अइसन इयाद अमृत में तब्दील होके मन के घइला में समा जाला।ई अमृत जीवन के हतास-निराश छन में बहुते संबल प्रदान करेला।

आज बहुत दिन बाद हम अपना बेडरूम में के शो-केस साफ करत रहीं। अचानक हमरा एगो फ़ोटो मिलल। फ़ोटो बहुत पुरान रहे, साइद बीसहन बरिस पहिले के। फ़ोटो प जमल गरदा के कारन कुछुओ साफ नजर ना आवत रहे, लेकिन जहाँ हमार अँगुरी पड़ल रहे ओ'जा से जमल धूर थोरिका हट गइला का ओजह से एगो चेकदार कमीज पहिनले लइका के चेहरा साफ दिखाई देत रहे जेकर उमिर तकरीबन दस से बारह बरिस होई। ऊ अउर केहू ना हमहीं रहनीं। जी हँ, ई हमरे बचपन के फोटो रहे, साथ में अउर लोग भी रहन लेकिन फ़ोटो पे गर्दा के वजह से सब केहू ना लउकत रहे। अब हमरा अंदर बेचैनी समा गइल। अब हम कहीं अकेला में बइठ के ऊ सब केहू के देखे के चाहत रहनीं जे जे फ़ोटो में रहे। हम सफाई कइल छोड़ के अपना बाहर के कोठरी में आ गइनीं अउर गला में लपेटल गमछा के छोर से ओहि फ़ोटो के साफ कइनीं। अब सब चेहरा हमरा आँखि के सोझा रहे।

हमार नाम 'नितेश' ह अउर हमरा छोट भाई के नाम 'नितिन'।हमनीं के दु भाई रहनींजा, हर चीज में बराबर-बराबर के बखरा लागे। हमरा से तीन साल छोट रहे नितिन बहुत ज्यादा जिद्दी। हर बात में टेक अड़ा देवे सब कुछ ओकरा अधिके चाहत रहे, ऊ माई के कोरा होखे भा बाबूजी के कन्हइया। ओकरा लागे कि भइया के ज्यादा प्यार-दुलार मिलेला एही से ऊ आपन हक सब में भा सब चीज में जबरन जतावे के कोशिश करे। नीतिन के जबरदस्ती के शरारत-ठिठोली ओकर छुटपना में अच्छो लागे।

हमनी के दुनू भाई के जन्म गाँव में ही भइल आ पढ़ाई-लिखाई के व्यवस्था अपना गाँव के प्राइमरी स्कूल से लेके बगल वाला गाँव के हाईस्कूल तक भइल काहे कि हमार बाबूजी किसान रहनीं अउर आपन खेती-बारी उहाँ के कइल पसंद रहे। एही से उहाँ के बहरा ना गइनीं अउर हमनियों के गाँवें में रहे के पड़ल। पहिला क्लास से पँचवा क्लास तक बोरा पर बइठनींजा तब जाके आगे के क्लास में बेंच प बइठे के मिलल।

छुट्टी में त आदमी बहुत कम घूमे जाय कहीं बाकिर सावन में त पक्का तय रहत रहे कि मामा के घरे जाये के बा काहे कि सावन के अंतिम दिन रक्षाबंधन पड़ेला। हमनीं के कवनो बहिन ना रही। मामा के एगो लइकी रही, जवन हमनीं दुनू भाई से छोट रही, एकदम कवनो जापानी गुड़िया नियन। ओकर नाम रहे 'अराध्या', हमनी ओकरा के प्यार से पिहू कहींजा। रक्षाबंधन के एक सप्ताह पहिले से मामा के घरे चल जाईंजा अउर खूब मजा करींजा।

सावन के पूरा महीना खुशनुमा होखे। भरि सावन कवनों-ना-कवनों परब-उत्सव होखे से हमनीं के खुशी के पर्याप्त अवसर भेंटे । सावन के शुरुआती पखवारा में नागपंचमी मनावल जाय तेकरा दु दिन बाद सतमी के पूजाई होखे, फेरु महाबीरी धजा फेराई, गढ़देवी 'अश्कामनी माई' आ 'सिमरीख बाबा' के पूजा। ई दुनू देवी देवता के पूजाई से पहिले सबसे श्रेष्ठ देवी यानी काली माई के पूजाई होखे। सावन के पूरनमासी के होखे वाला रक्षाबंधन सबसे विशेष होखे। एह दिन एगो 'पढ़कउवा' पूजा होखे जवना लइकी-मेहरारू सब मिल के मेंहदी पिससि। मेंहदी अउ फुलावल चना देवी माई के अरपित होखे आ शेष मेंहदी घर के सब सदस्य औरत-मरद, आपन अँगुरी भा हाथ प प्रसाद के रूप में धारण करस।

सावन माह में लागेवाला दु-दुगो मेला हमनीं बदे सभसे बड़ आकर्षण रहे, पहिला गाँवें में लागेवाला नागपंचमी मेला आ दोसरका रक्षाबंधन के

दिन मामा गाँवें के मेला। हमनीं के मामा बहुते मानत रहलें। अउर कबो जाईं जा चाहे ना बाकिर रक्षाबंधन हमनीं मामा गाँवें जरूर जाईंजा। पिहू हमनी के राखी बान्हस अउ माई मामा के।

इहे सावन के दिन चलत रहे हमनी दुनु भाई इस्कूल से पढ़के छूटल रहींजा। ओह समय स्कूल में कवनो तय पोशाक ना होत रहे, जवन मन करे तवन पहिनऽ। चट्ट भा कपड़ा के झोरा ओ समय के इस्कूल बैग रहे। कच्ची रोड प गाड़ी के चक्का से पड़ल दाब से बनल गड़ही में बरखा के पानी लाग गइल रहे जेकरा से बचत-बचावत हमनीं क चलल जात रहीं स। नितिन साइद कुछ पूछल चाहत रहे। ऊ एक कान्ह से दोसर कान्ह प बस्ता फेरत पूछ बइठल- "भइया, अब त राखी में चारे दिन रह गइल नू? हमनी कब मामा किहाँ जाएम स ? परसाल त दस दिन अगते चल गइल रहींजा।"

हम नितिन के माथा पर हाथ फेरनी कहनी- "अरे बबुआ, चलल जाई। माई के तबियत अभी खराब बा, जब ठीक हो जाई त माई थोरे मनिहें? ऊ जरूर जइहें त हमनियों जाइब।" हम नितिन के दिलासा देवे के भलहीं जतन कइले होखीं बाकी हमरे मन में एह बात के निश्चिंतता ना रहे। मामा गाँवें के मेला अ ओ'जा के बेरोक मस्ती, हमजोलिन संगे के हुरदंग सब कुछ आखि क सोझा नाचत रहे। लागे कि माई के तबियत गबड़इला से असों सब खलिहे सपना ना रहि जाय। दुनु भाई घरे चहुँपनींजा आ बस्ता रख के माई लगे जम गइनींजा। साँझ के चार बजत होई। लागल जइसे माई हमनिएँ के बाट जोहत रही। ऊ भात में नून-तेल अउ मरीचा के भरवाँ आचार सउन के खाये के दिहली अउर नितिन के अपने हाथे खिआवे लगली।

नितिन मुँह में कवर भरले पूछ बइठल- "माई, मामा किहाँ कहिया चले के बा।"

माई कटोरा में भात के कवर बनावत कहली- "चलल जाई ननकू, जब हम ठीक हो जाएम तब।" माई नितिन के ननकू कहत रही साइद छोट होखे के ओजह से। हमू आपन मुँह में कवर लेत कहनी- "माई, इहे बात ई हमरा से इस्कूले से पूछत रहे। हम ऐके बोलनी कि माई जब ठीक होइहें त खुदे जइहें अउ हमनियों जाइबि ।

रक्षाबंधन में माई मामा किहाँ जरूर जात रही काहे कि ऊ उनसे छोट रहली। माई अपना बाबूजी आ माई के मुँह जादे दिन तक ना देखले रहली। माई के पालन-पोसन, पढाई-लिखाई से लेके बिआह आ कन्यादान तक के दायित्व मामा ही निभइले रहलनि। ए से दुनो भाई-बहिन में बेइंतहा स्नेह रहे। लाख व्यस्तता के बावजूद माई मामा के राखी बान्हे जरूर जात रहली।

जब बाबूजी साँझ के घरे अइनीं त माई खातिर बाजार से दवाई भी लेके आइल रहनीं। उहाँ के माई से कहनी- "ऐ रमा, डॉक्टर साहब कहनींहँ कि ज्यादा काम-धन्धा नइखे करेके ना जादे फिकिर-चिंता करे के बा, काहे कि गइल बुखार फिर लौट सकत बा। तू अब खाली आराम करऽ आज से सब काम हम करेम।"

माई के कई दिन से बोखार रहत रहे। कबो छूटे कबो आ जाय। माइयो के आपन तबियत के चिंता कमे रहत रहे। बोखार के बावजूद ऊ घर के सभ काम अकेलहीं कइल चाहस। बाबूजी कहस कि एगो आदमी रख देत बानी त ऊ मना कर देस।

माई बाबूजी से दवाई लेत कहली- "का हम असों अपना भइया के राखी ना बान्हे जाएम?"

अइसनो लाचारी में माई मामा के राखी बान्हे के सोचत रही। ई सुननीं त बाबूजी थोरे खीझनीं। बाबूजी आपन पूरा बाँहि के कुर्ता खोलत कहनी- "आ एह साल ना जइबू त काम ना चली? अरे तनी पहिले आपन सेहत के खयाल करऽ। जब ठीक हो जइहऽ त जाके घूम अइहऽ।" एतना कहिके बाबूजी दुअरा चलि गइनीं। माई के आँखि से टपटप लोर चुवत रहे। पता ना का बात के दुख रहे माई के तबियत खराब भइला के भा मामा के राखी ना बान्हल पावे के?

ओ बखत ना मोबाइल होत रहे ना कंप्यूटर जइसन संसाधन रहे कि तुरत संवाद भेजल जा सके। चिट्ठी-पाती के जुग रहे आ अब समय भी ओतिना ना रह गइल रहे कि चिट्ठी लिख के पोस्ट कइल जा सके।

हमरो मन उदास रहे कि अबके सावन में मामा किहाँ के मेला धूमे के मोका ना मिल पाई। नितिन के उदासी दोसर रहे। ऊ पिहू के बहुत मानत रहे, जब मामा घरे जाय पिहू का संगे खेले-कूदे में मगन रहे।

आखिर रक्षाबंधन के दिन आइए गइल। हमनीं मामा गाँवें ना जा पइनीं। माई के आज मन सभसे अधिका उदास रहे। हम महसूस कइनीं कि माई के आँख रहि-रहि के डबडबा जाता। ऊ कुछो खुरखार क के काम में व्यस्त रहे के ढोंग जरूर करस बाकी आँख रहे जे भीतर के चुगली कर जाय।

अचके ननकू दुआर प से दउड़ल- हाँफत आँगन में आ धमकल। ओकर चेहरा प अथाह खुशी रहे- "माई, मामा....मामा.. मामा आइल बानीं पिऊ क संगे ।ऊ पिहू के 'पिऊ' कहे।

अतिना सुनते माई ड्योढ़ी का ओरि दउर गइली। बाबूजी पिहू के आपन गोदी में उठइले मामा संगे आवत दिखाई दिहलें। माई के बेमरिया-पियर चेहरा प गजब के चमक रहे।

घर भर के मुर्दनगी ना जाने कहाँ परा गइल रहे। माई मामा के राखी बन्हली आ पिहू हमनी दुनु भाई के। बाबूजी कवनो फोटोग्राफर के बोलवले रहलीं। ई बाबूजी के करामात रहे कि फजिरे के गाड़ी से उहाँ का मामा गाँवे चल गइल रहलीं, मामा के बोलावे। एह बात के जानकारी केहू के ना रहे। ओह दिन के ई फ़ोटो आज मिल गइल। जवना में हमनीं सब केहू एक साथ रहींजा।

अब ना माई रहली ना बाबूजी ना मामा, सब कुछ बदल गइल बाकी ई तस्वीर जस-के-तस रहे। एक-ब-एक कवनो गाड़ी के आवाज से हमार धेयान भंग भ गइल । आवाज के दिशा में देखनीं त अराध्या यानी पिहू अपना पति आ गोदी में लरिका लिहले स्कॉर्पियो से उतरत नजर अइली। हर साल रक्षाबंधन में पिहू के आवे के क्रम अबो ले ना टूटल ह कबो बिलानागा।

हम अमरित कुंभ से टपकत जीवन रस में बोथा होत चलि गइनीं।

विवेक सिंह, पंजवार,सिवान

हम चोर हईं

हम चोराइले सुरुज से तेज़ के
पवन से वेग के
सावन से मेघ के

हम चोराइले नदी से निर्मलता के
चाँद से शीतलता
कर्ण से मित्रता के

हम चोराइले मीरा से भक्ति के
हनुमत से बुद्धि शक्ति के
धरती से सहन भार के

हम चोराइले माई से ममता के
बाबूजी से क्षमता के
भाई से स्नेह दुलार के
हम चोराइले आँख से लोर के

हम चोराइले सप्तक से संगीत के
दीयाबाती से प्रीत के
राधा से मनमीत के

हम चोराइले गीता से ज्ञान के
अम्बर से स्वाभिमान के
हम चोराइले कीचड़ से फूल के
चरण से धूल के
वास्तु से मूल के

हम चोराइले विदुर से नीति के
रावण से राजनीति के
विश्वकर्मा से कलाकृति के
हँ हम चोर हईं।

- **अभियंता सौरभ कुमार**

बी.एच.यू. के ठीक पाछे

छित्तुपूर सनबीम के आगे
पानी बहुते छितराइल बा,
फेसबुक पऽ सावन आइल,
रोडे पऽ भइँसा लोटियाइल बा।

इंस्टा आ वाटसेप पऽ
सबके, हैप्पी सावन बोलाइल बा,
औटोरेक्सा मिलत नइखे,
सब जाके कतहीं लुकाइल बा।

बात बनारस के कहत बानीं,
बहुतै पब्लिक आइल बा,
एक ओरिया बा खूबे निमन,
दोसरी ओरिया गन्हाइल बा।

घाट किनारे चमकत बाटे,
रहिये पऽ नाला चलि आइल बा,
छित्तुपूर आ सनबीम के आगे
पानी बहुते छितराइल बा,

- **कोशलेन्द्र मिश्र**

(परास्नातक छात्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

अब हमरा के नाम करेद

(हास्य कविता)
अब हमरा के नाम करेदऽ
ए भइया, आराम करेदऽ

लाख-लाख के भोजन कर के
पेट फुलवनीं बड़ा जतन से
अउरी तनी फुलवावे खातिर
कवनो इंतेजाम करेदऽ
ए भइया, आराम करेदऽ

धनिया कतनों जोर से चीखें
हमरा बेड-बिछवना दीखें
दुनिया जाए भाँड़ में
दुनियावालन के कोहराम करेदऽ
ए भइया, आराम करेदऽ

चिउरा-दही प जोर लगाके
खूब ऊंघाईं पेट फुलाके
सुतले-सुतले ए राजा जी,
भोर से दुपहर शाम करेदऽ
ए भइया, आराम करेदऽ

का होइ ई देह हिलाके
खूँटा हरदम रखे जमाके
खाये-पीये के मिल जाए
अइसन इंतेजाम करेदऽ
ए भइया, आराम करेदऽ

- **विजय कुमार चौबे 'मनु'**

(मुक्तक)
कतना दिन माई ममता के आस रहल
थोड़े दिन त माई हमरा पास रहल
अइसे त आशीष सभे देला हमके
माई के आशीष मगर कुछ खास रहल

- **विजय कुमार चौबे 'मनु**

आम किस्सा

हर ओर आम किस्सा ई यार हो गइल
सर्दी में मुफ़लिसी भी अखबार हो गइल

सुतल रहे फुटपाथ पर ऊ रात काटे खातिर
कतना रहे मजबूर जूठ भात चाटे खातिर

भर पेट खाना ओकरा दुस्वार हो गइल
सर्दी में मुफ़लिसी भी अखबार हो गइल

जेतना रहे बसेरा काग़ज़ में बँट गइल बा
मरघट के घाट सर्दी में खूब पट गइल बा

हे राम, तहर दुनिया बेकार हो गइल
सर्दी में मुफ़लिसी भी अखबार हो गइल

उ खूब डींग हाँकत रहले ह वोट खातिर
हरदम रहे ललायित दोसरा के नोट खातिर

जब जीत गइले अलगे व्यवहार हो गइल
सर्दी में मुफ़लिसी भी अखबार हो गइल

- **विजय कुमार चौबे 'मनु'**

सामंतवाद

आठ घरी अन्हरिया गइले अधरतिया में जब रामखेलावन के केंवाडी बाजल त रामखेलवना ब के करेज डोल गयील।भादो के भयावह रात, एक त टोला के बहरी गाँव के गोंयडा के घर, चिल्लइलो पर केहू ना सुनेला... आ दोसर ई कि रामखेलावन दुनू बेकत के छोड़ के घर में केहू हइयो नइखे। माई-बाबूजी कुल्ह काचा-बाचा के ले के एक दिन पहिलहीं के ममहर गइल बा लो,अब ई आधा रात के कवन दानो पिचास ह रे दादा...

रामखेलावन बो धीरे से रामखेलावन के पंजरी मे खोद के जगवली आ फुसफुसा के कहली- "ए जी! देखेब के केवड़िया खटखटावता..."

-आँय! रामखेलावन के त खूने सुख गयील! अचकचा के उनका मुँह से निकलल- "आहि दादा!जवन सोचुवीं तवने भइल। अब का करीं..."

-का ह जी?काहें एतना बेचैन हो गइनी?

-आ का कहीं हो, काल्ह हर ले के जात रहुईं त जीन बाबा तर रमेसरा के डराइबर टेक्टर से बैल के धाक्का मार देहुए। खींस मे दू- चार गो गारी दे देहुईं। बुझाता जे ओकरे बैर काढ़े आइल बाड़न सँ।

- आहि दादा! त रउआ ओकनी के गारी दिहला बिना कवन आकाज रहुए? नइखीं जानत दस सवांग बाड़न सँ, जेकरे के मन करेला थुर देलन सँ। अब का होई?

-आरे त काहें ना बोलीं हो? ऊ कवनो बाभन ठाकुर ह जे बैल के गोड़ तुर दी आ हम बोलबो ना करीं....

- आहि दादा ! रउरों साफ लेंढा हयीं का जी? बाभन ठाकुर के त खाली नाम बदनाम बा, ना त ए बेरा जेकरे लगे पाँच गो सवांगी आ दस गो रोपेया बा उहे खुंटाटोक राय जमींदार बा। अब जा के देखीं जे के ह...

रामखेलावन डेराते डेरात जा के केवाड़ी खोललें त देखतारें जे पुलिस के गाडी से बरदी मे पांच गो हाकिम लो खड़ा बा।

-रै, रमखेलवना तोरे नाव ह?

-हँ सरकार! का भयील?

-रै ढेर चरबी चढ गयील बा रे सारे, बताव जे रमेसर बाबू के जोड़ा बैला केने हँकववले बाड़े?

-आहि दादा! ए सरकार हम नइखी जानत.

-करबे तामाशा? सारा गाँव कहता जे तोरे काम ह।

- ना ए मालिक! हम ई कुल्ह चोरी-चकारी के काम कहियो नइखीं कइले, रउआ गाँव में केहू से पूछ लीं। हम कुछु नइखीं जानत।

- रै त हम झूठ बोलतानी? ते प्रशासन के झूठ कहबे?

- ना ए मालिक! हम रउआ के झूठ नइखीं कहत, बाकिर हम कुछु नइखीं जानत।

-त तेंही बताव, जे बएल के खोलले बा?

- हम कुछु नइखीं जानत ए हाकिम! का जाने बएल खुललो बा कि उ झूठ बोलतारें। उनुकर बएल खोलेके केकरा बेंवत बा?

- रे सारे, गाँव भर में एगो तेंही हरिश्चन्द्र के सार बसल बाड़े? बाकी सब लोग झूठे बोलता?

रामखेलावन के आँख से डरे लोर गिरे लागल। ऊ अब बुझ गइल रहलें जे गारी दिहल महंगा पड़ि गइल, बाकिर तबो कहलें " हम कुछु नइखीं जानत ए हाकिम! हमरा के छोड़ दीं..."

- रै चल ढेर तमाशा मत कर, सीधे सीधे बताव कि बैल कहाँ बाड़न सँ?

- ए मालिक, जब हम कुछ जानते नइखीं त कइसे बताईं? हमरा के मुआइयो देब त हम कइसे बता देब?

-रै ले चल रे एके थाना पर,एकरा गां... मे लाठी हुराई तब ई बताई।

-ना ए मालिक हम नइखीं जानत....

-चुप्प.. बैल त तोरा मेहरारु के...

रामखेलावन कहते रहि गइलें, बाकिर सिपाही जी लोग उनके ध के गाड़ी में बइठा लिहल। उनकर मेहरारू घर से रोअत निकलली त सिपाही जी एक लात उनका पीठ पर लगा के चल दिहलन।

रात में का भउए ई भगवान जानस बाकिर बिहान भइला लोग देखल जे भर देंहि खून लगवले रामखेलावन दुआर पर खटिया पर पटा के कोंहरत बाडें, आ रामखेलावन ब छाती पीट पीट के चिल्लात रोअत बाड़ी...

आ ओने रमेसर जादो के डराइबर टेक्टर पर गीत बजावत जा ता! सइयाँ लइका नियर सूत जाला कोरा में, दीया के अँजोरा मे ना....

- **सर्वेश तिवारी श्रीमुख**
  गोपालगंज, बिहार।

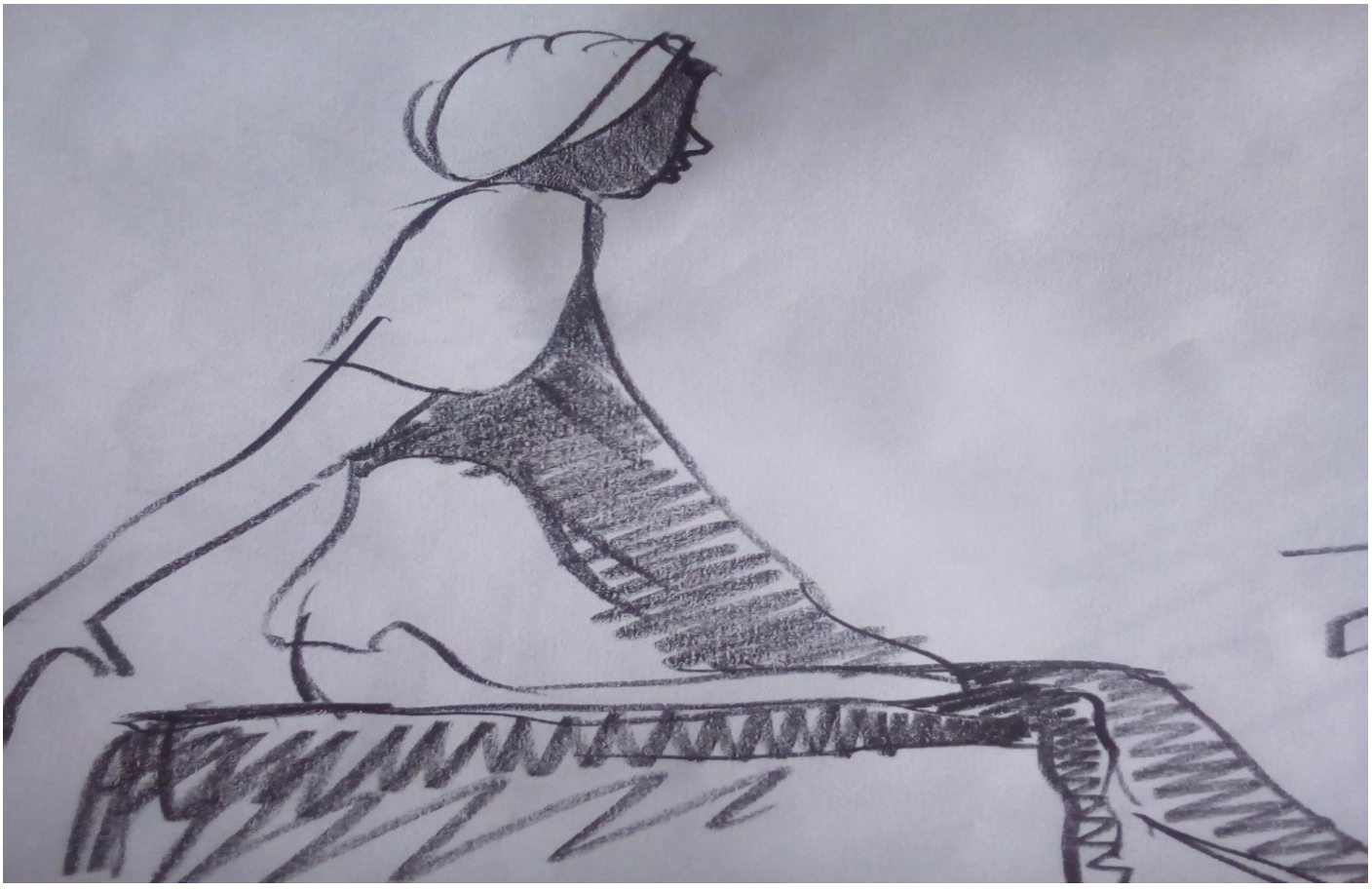

भोजपुरी गजल

आँख दरिया के भी अब मिटा देहले बा
रानी तोहरी सुरतिया खता कइले बा ।। 1

मस्त यौवन के पर्दा में अविरल सुघर
ई मुहब्बत के फिर से जगा देहले बा ।। 2

ऊ लिखावट तोहर खत पे जीवंत बा
हमरे जिनगी में रंगत लिया देहले बा ।। 3

ऊ मिलन ले समाँ मन्द मुस्कान भी
भूल के याद फिर से दिला देहले बा ।। 4

चांदनी के शीतलता रहे हर घड़ी
कइसे दिनकर पल में चुरा लेहले बा ।। 5

काहें बदलेलू रंगत के अपने सनम
ई अलक दिल तोहपे फिदा कइले बा।। 6

याद करला ऊ बीतल मुहब्बत के पल
जवना जीवन में रंगत जगा दिहले बा ।। 7

अब त जीवन फना हो करब हर घड़ी
अब कसम ई मुहब्बत दिला देहले बा ।। 8

- **अशोक सिंह अलक**
  आजमगढ़ यू.पी.

मनवा न धीर

भइल मनवा अधीर न धीर धरे,
केहू न पराया पीर हरे ।।

सब जानेला जग नसस्वर बा,
तबो बनाइ आडम्बर से प्यार करे।।

ले जाई न कुछ संघे केेहू,
फिर भी झूठे हऊजार करे।।

कइ लूट पाट बोलि झूठ साँॅच,
झूठे जिनगी बेकार करे ।।

बा अदब लिहाज कहाँ जग में,
जब बाप के बेटा मारे धऊरे ।।

सभे बनत अब बड़के बा,
केहू पुरनियन के पवलग्गी ना करे।।

अपने भीतर केहू ना झाँॅके,
दूसरे के निन्दा रोज करे ।।

बा भुलाइल जात सब नेह के रहिया,
अउर नफरत तिरसकार के राह धरे।।

नमस्कार, प्रणाम के छोड़ि ,
हाय, हेल्लो से दिन के शुरूआत करे।।

मिटत बा अपन संस्कृति सभ्यता,
पर केहू चिन्तन न विचार करे ।।

"राजू"मनवाँ अति व्याकुल बा ,
देखीं बदलत मन भावना अखियाँ लोर ढरे।।

राजू साहनी
ग्रा०/पो०-मदनपुर, जिला-देवरिया (उ०प्र०)

अपना समय के कुशाग्र बुद्धि अउर प्रतिभाशाली इंजीनियर निकोल टेसला के सन १८८४ में प्रसिद्ध आविष्कारक थामस एडिसन अपना कंपनी एडीसन मशीन वर्क्स में नौकरी पे रखले रहलन। टेसला के सिफारिश खाली एही कारन भइल रहे कि उनुको के ओह समय एडिसन नियन प्रतिभाशाली मानल जात रहे। ऊ अपना अल्पकालिक कार्यावधि में एडिसन खातिर कइगो सफल डिजाइन तैयार कइलन लेकिन उनका के ऊ बोनस (आज के हिसाब से १ मिलीयन डालर) ना मिलल जवन कंपनी करार कइले रहे। बात उनका हिया मे अतिना लागल कि ऊ कंपनी छोड़ देले। ओह जबाना में एडिसन के ग्राहकन के 'डायरेक्ट करेन्ट' (DC) द्वारा बिजली पहुँचावे में एकाधिकार रहे। टेसला एह से हट के एगो नया तकनीक 'अल्टरनेटिंग करेन्ट' (AC) के रूप में विकसित कइलन जवन DC से भिन्न ढ़ेर पावर के लमहर दूरी तक संचारित कर सकत रहे। बाद में एडिसन हाई भोल्टेज वाला एह तकनीक के घातक करार देहलन आ अपना बात के सिद्ध करे खातिर सार्वजनिक रूप से 'इलेक्ट्रोलाँक्युटिंग टेस्ट' तक क दिहलन, जवन एगो हाथी के उपर अगस्त १८९० में न्यूयॉर्क में कइल गइल। हतिना कुल कइला के बादो ऊ एगो निवेशक के टेसला के AC तकनीक में निवेश कइला से ना रोक पइलन अउर अंत में टेसला जीत गइलन और ओकरा बाद जवन भइल ऊ सगरे दुनिया जानत बिया।

कबो-कबो प्रतिस्पर्धा के भइल लाभदायक होखेला अउर उहे हमनीं के आपन क्षमता के पहचान कइके आगे बढ़े में मदद करेला। जइसे कि उपर कहल किस्सा में भइल, हतिना कड़ेर प्रतिद्वंद्वितो से दुनिया के जब्बर परिणाम मिलल। कठिन परिस्थिति में जब मनई एगो प्रेरणा खातिर संघर्ष करेला, ओह समय दोसरा के उपलब्धियो ट्रिगर के काम करेलें। प्रतिद्वंद्विता मनई के अंदर एगो अइसन जोश के संचार करेला, जेकरा से ऊ अउर

मेहनत आ लगन से अपना लक्ष्य प्राप्ति में लाग जाला।

जर्मनी के हर्जोगेनार्क शहर में बीस के दशक में दुगो भाई- एडोल्फ आ रूडोल्भ, अपना पुस्तैनी लाउन्ड्री रूम में डैस्लर ब्रदर्स स्पोर्ट्स शू कंपनी के शुरुआत कइलें। बाद में १९४८ में तालमेल ना बइठला पे ओह फर्म के बटवारा हो गइल आ शहर के विपरीत दिशा में दुगो प्रतिद्वंद्वी फर्म स्थापित हो गइलीसँ। एक-दूसरा से आगे निकले के पारस्परिक दृढ़ संकल्प अतिने ना बढ़त गइल कि कुछेके साल में दुनों अपना क्षेत्र में वर्ल्ड लीडर बन गइलनसँ। एडोल्फ के कंपनी के नाव रहे - एडीडास आ रूडोल्भ वाली के नाव रहे- पूमा। हर्जोगेनार्क शहर आगे जा के " द टाउन आफ बेन्ट नेक" के नाव से मशहूर भइल। कारण ई रहे कि उहाँ के हर नागरिक के ई देखे के आदत हो गइल कि उनकर पड़ोसी दुनों ब्रान्ड्स में से कवन ब्रांड के जूता पहिनले बा।

२०१२ में एप्पल के दुनिया के सबसे बड़हन कंपनी घोषित कइल गइल। ओह समय के सबसे बड़हन कंपनी 'कोक' आ 'नाइकी' के ओवरटेक करे के विषय में स्टीव जॉब्स कबो ना सोचले रहलन। उनकर प्रतिद्वंदता बिल गेट्स से रहल, दुनो जना लगभग ऐके उमिर के रहलन, दुनो जना के बिजनेस भी लमसम ऐके समयावधि आ ऐके तरह के परिस्थिति में शुरु भइल रहे अउर ओह समय में लगभग ऐके लेबल पे रहुवे। ऐही प्रतिस्पर्धा के परिणाम रहे माईक्रोसॉफ्ट के विन्डोज़ (जवन बाद में विश्व के डिफाल्ट आपरेटिंग सिस्टम बनल) आ एप्पल के आईफोन, आईपैड आ आईपोड।

एक बेर बिल गेट्स जाब्स के बारे मे कहले रहलन कि

"नया प्रोडक्ट बनावे के भा नया कुछ सीखे के जवन-जवन परिकल्पना हमनीं कइले रहनींजा ऊ सभ हासिल कइलींजा, बलु अधिकतर प्रतिद्वंद्विए के रुप में।"

१९९७ में एप्पल भयंकर आर्थिक संकट से गुजरत रहे लेकिन आश्चर्य एह बात पे होई कि ओकर संकटमोचन के बनल ?

हँ, माइक्रोसॉफ्ट ही सही समय पे आ के एप्पल कंपनी के शेयर में १५० मिलियन डॉलर के निवेश कइले रहलस। अब सवाल ई बा कि बिल गेट्स एप्पल के काहे बेल आउट कइले?

जवाब बा- शायद उ समझ गइल रहलन कि उनुका स्टीव जॉब्स के प्रतिद्वंद्विता के जरूरत बा। शिथिल होखला ले बढ़िया बा कि आगे बढ़े के लड़ाई जारी रहो।

मनोविज्ञान कहेला कि प्रतिस्पर्धा में आदमी के रचनात्मक सफलता के आगे बढ़ावे भा रोक देबे वाला दुनों क्षमता होखेला। ई हर आदमी के ऊपर निर्भर करेला कि ऊ ओकरा के कवना हिसाब से नियंत्रित करsता। जरला ले बढ़िया बा मुकाबला करीं। चाहे जवन भी क्षेत्र होखे रउवा सभ, प्रतिद्वंद्विता के भीतर ले आईं - चुनौती के चुनौती देत रहीं- ई रउवा के अपेक्षाकृत बेहतर करें आ आधा कोस अधिका चले खातिर प्रेरित करी।

- **त्रिपुरारी पांडेय**

ग्राम: भोजापुर, बलिया।

वर्तमान पता: मनीकोन्डा, हैदराबाद।

राजरानी

साल २०१३ के बात ह, हमनीं के पोसल-पालल कुकुर मू गइल त एगो नीमन कुकुर पोसे बदे खोजात रहे। काहे से कि हमनीं ठहरनीं जा खेती-किसानी करे वाला अदिमी, रात-बिरात कब बधारी जाये परि जाई कवनों ठीक ना रहेला। ढेर बेर त अकेलहूँ जाये के परेला ओही घरी कुकुर के जरूरत बुझाला। रात-बिरात के, कम-से-कम एगो कुकुरो के संगे रहले, बड़ी बल मिलेला।

एह से भर परिवार के बिचार भइल कि एगो पिल्ला पोस लिआव। मने-मने सभ केहू नजर दउरावत रहे बाकी एक्को नीमन कुकुर के बच्चा ना मिलल। भीरिए टोला में एगो साहुकार जी के सार रहत रहे जवना के पूरा गाँवे गोबर ममवा कहत रहे। ऊ पटना रहत रहे, जब ओकरा पता लागल कि कुकुर के बच्चा खोजतारे लोग त आके कहलसि कि हम पटना में बड़ी सुघर-सुघर कुकुर के बच्चा देखले बानीं, चोरा के लेले आइब। बाकी सयिगो रुपया देवे के परी।पोसे के त रहलें रहे सभ केहू कहलस कि ठीके बा।

चार-पाँच दिन बाद सँचहूँ में गोबर ममवा कुकुर के दुगो सुघर सुघर बाचा लेके आ गइल। एगो उजर-करिया रहे अउर एगो भूअर - उजर। दुनों बड़ी मनमोहक रहलनसँ। जवन भूअर-उजर रहे हमनीं के ओकरे के रखि लिहनींजा। भूअरके सभ केहू के पसनो रहे अउर दोसर बात कि हमनीं घरे करिया भा करिया-उजर कुकुर सहतो ना रहसँ बड़ी जलदी मू जात रहसँ। होतना दूर से ले आवे के चलते ऊ भूख से कूँ-कूँ करत रहे। ओकरा के दूध भात दिआइल। जब खा लेलस त हमार माई कहलसि कि पिल्ला ह कि पिल्ली हो? देखाइल त ई त पिल्ली रहे।

सभे खिसिआइल कि ले जा के सरवा गोबर ममवा भीरी फेंकि आईंजा बाक़ी बाबूजी कहले कि होतना दूर से आइल बिया कवनों पोसिहेंसँ ना, मर जाई... एकरे पोस ल लोग बड़ी तेज होली स पिल्ली। माइयो हँ में हँ मिला के कहलस कि राज राजाई राजरानी हियऽ। उहे पिल्ली पोसा गइली अउर नामों करन हो गइल - 'राजरानी'।

इनिका सेवा अउर प्यार अतना मिलल की कुछे महीना में अपना से ढेर बड़-बड़ कुकुर से डापुट हो गइलि।

राजरानी जस-जस बड़ होखत गइली उनुकर पोंछ भी झबदार हो गइल जवन राजरानी के सुंदरता में चार चांद लगावत रहे। अब राजरानी हमनीं के परिवार के एगो सदस्य लेखा हो गइल रही।केहू का मजाल कि ऊ घरे होखस अउर एको बाहरी अंदर आ जास? घर से केहू बोल देत रहे अब ढेर हो गइल, चुप हो जा, त अदिमी लेखा चुपा जात रही।

घर के केहू पैदल भा गाडी से केनियों जात रहे राजरानी उनुका आगे-आगे पोंछ हिलावत चोन्हा करत एक डेढ़ किलोमीटर तक अरियवला के बादे घरे आवत रही। कतनों बरिजल जात रहे बाकी ना मानत रही। सभ केहू से अतना हिल- मिल गइल रही कि बहरी से अइला प देहि प कूदे लागस, गोड़ छाने लागस, उनुका खुशी के कवनों ठेकाना ना रहत रहे। उनुकर हाव भाव देखि के केहू बता देत रहे कि सभ परिवार से कतना लगाव बा एकरा।

एक बे गाँव से सात आठ किमी दूर हँसवाडीह मील प ट्रैक्टर से धान बेंचे ले गइनींजा संघे-संघे अउर आगे- आगे इहो मिल प चल

गइली। जेही देखे डेरा जाय कि मरदे हई कुकुर केकरा संघे आ गइल बा। रात भ हमनीं के संगहीं ओहिजे रहलीं, बिहान भइल त हमनीं संगही अइली। राजरानी के अपना मालिक से लगाव-पेआर के एह से बड़ सबूत अब दोसर का हो सकेला?

बाकी उनुकर एगो आदत बड़ी बाउर रहे-----जहाँ सुतिहें, बइठिहें बीचहीं दुआरी । जवना चलते कबो-कबो दुरकावलो जात रही। अउ इहो उनुकर कमी ना गुने रहे की दुआरी प बइठ के सभ केहू के निगरानी करत रही। तबो हमरा ओतना ना भावत रही जनता अउर सभ केहू के। कबो कबो हम इहो कह देत रही कि अबकी जवन पढ़कउआ आवता नू एह में इनिका बहरिया दिआई ।शायद हमार ई बात भगवान के भी खराब लागल अउर हमर

बतिया के साँच बना देले।

एही बाइस तारीख के बाबूजी आ छोट भाई मोटर साईकिल से खाद लेवे पीरो जात रहन लोग त राजोरानी पीछे लाग गइली कतनों मनो कइला प ना मनली। मोटरसाइकिल के आगा पीछा करत-करत पाँच छव किमी गइला के बाद हरान होके बइठ गइली। बाबूजी अ भाई बड़ी खुश भइलें लोग कि चलऽ अब लवटि जाई ना त आई त कुकुर काटि के मुआ देतेसँ।

खाद के पइसा देके अइला प पूछल लोग कि राजरानी आइल हिया कि ना? पता चलल कि ना अभी कहाँ आइल बिया? भइल कि आ जाई बाकी छोट भाई मनले ना, गाड़ी से ओही घरी खोजे चल गइले। राजरानी कतहूँ ना लउकलि।

राखी के दिन जब आरा से अधौरा अपना बहिन किहाँ राखी बन्हवावे गइल रहलीं त हम एह बात से वाकिफ भइनीं। हमार मन भीतर से बड़ी दुखी भइल। बिचार आवे कि कबो हँसिओ मज़ाक में जबून बात मुँह से ना निकाले के चाहीं।

राजरानी के गुम गइला के बाद ओकर प्यार-दुलार अउर स्वामी भक्ति के मर्म हमरा बुझाइल। कुकुर त ढेर पोसइलेसँ बाकी राजरानी सभके दिल में जवन जगह बना लेले बिया ऊ जगह साइदे अब कवनों पशु-पक्षी बना पइहें।

अभियो मन में बिसास बा कि राजरानी देर-सबेर आ जाई काहे कि ओहके मरला-हरला के निसान केनियों नइखे मिलल। कहईं बाहर जात खने आँखि एने-ओने खोजत रहेलीसँ कि साइद केनियों लउक जाय बाकी अभी ले ऊ केनियों लउकलि ना। मन कहेला कि राजरानी जरूर आई।

✍विमल कुमार
ग्राम +पोस्ट-जमुआँव
थाना-पीरो,भोजपुर,बिहार

महंगाई

ई ह बड़ी हरजाई जेकर नाम ह महंगाई
डीज़ल पेट्रोल के दाम बढल
साग सब्जी भी ना ख़रीदायी
ई ह बड़ी हरजाई.....
लइकन के त दूध ना मिले
दिल दे ता रो रो दुहाई
ई ह बड़ी हरजाई.....
तेल मसाला महंगा भइल
चाउर दाल भी ना ख़रीदायी
ई ह बड़ी हरजाई.....
कम बा कमाई देख बढ़ता महंगाई
दीवाली में पड़ाका अउरी
होली में कपड़ा ना ख़रीदायी
ई ह बड़ी हरजाई.....
हो गइल लोग भुखमरी के शिकार
तबो बदलत नाइखे सरकार के विचार
जनता के पैसा से नेता लोग के
पजेरो अउरी सफारी ख़रीदायी
ई ह बड़ी हरजाई....
का कही भाई दुखवा केकरा से सुनाई
गिरता अखिया से लोर
ये के केतना हम छुपाई
ई ह बड़ी हरजाई....
साहूकार के मान बढल अब देत नाइखे उधारी
कारण इहे बा कि बढ़ता चोरी और चमारी
काम कइल के बाद भी मिलत नाइखे मजूरी
अउरी लोग के हो नाइखे पावत जरूरत पूरी
ई ह बड़ी हरजाई.....

• **सम्राट**
ग्राम +पो.-सावना जिला -सिवान बिहार

हम आ हमार घर

हँसी,ख़ुशी, उल्लास,
समरपन आ बिसवास

हमरा घरे रहेला।
सभे हँसेला, बोलेला,

बतिआवेला आ मुसुकाला।
हम दुनू का बीच में रहिले,

तीत- मीठ सहिले।
सबकी बात के नीमन से

सुनिले ,समुझिले,
चिन्हिले आ गुनिले।

सबसे आ सबकी बातिन से
अलग आ अकेले बइठल रहिले।

हमार घर के खुशी
हमरा कमरा के केंवाड़ी से

लवट जाला,
जइसे हमरा से

वोकर पुरान अनबन होखे।

• **दीपक सिंह**
कोलकाता

विदाई गीत

बिधना का ई रीत बनइहा
बिधना कांहें के प्रीत बनइहा
छूटल जाता बाबू–मइया
छूटल जाता भइया
बिधना का ई रीत बनइहा

जेकरा गोदी में खेललीं ह
जेकरा अंचरा में सुतली ह
होखल जाता परइया
बिधना का ई रीत बनइहा

जनती जे तैं अंचरा छोड़इबे
बेटी के दुसरे घर में बियहबे
हम मरि जइती कहियइ
बिधना का ई रीत बनइहा

बाबू तोंहउ निष्ठुर भइला
अपने करेजा के दूर कइला
कइसन बाट्अ तूं गोसइंया
बिधना का ई रीत बनइहा

प्रान पियारा भइया के जनली
राउर दुखवा अपनइ मनली
भइयउ आज कसइया
बिधना का ई रीत बनइहा

• पंकज तिवारी
बादशाहपुर
जौनपुर उप्र

माई

माई के बिना ना ई जग संसार बा X 2
माई त जिनगी हई माई ए आधार बा
माई के बिना.....

नौ महिना कोख में रखली बचा के
तब मुँह देखल तू दुनिया में आके X2
माई के दुनिया में अनमोल प्यार बा

पल-पल तोहरे ला, तरपेली माई
कइली सिआन तोहके रखली ना दाई X2
दूधवा के कारजा त बबुआ उधार बा

माई के जान अब तू जन बिसराव
माई के पलकन पर हेमा अब उठाव x2

लाल बिहारी लाल, नई दिल्ली
गीत-वरिष्ठ साहित्यकार(गीतकार) एंव पत्रकार

योग अउर योगी

योग संस्कृत के 'युज्' धातु से बनल शब्द ह- युज् भावादौ घञ्, कुत्वम्- जेकर असली अर्थ जुड़ल,संजोवल ह। योग जेकर मुख्य काम ह आपन आत्मा के परमात्मा से जोड़ लिहल अर्थात सब केहू के आपस मे जोड़ल, एह संसार के बुराई से दूर रहल, हमेशा साँच बोलल-बतिआवल, मीठ आ शांति से बोल- चाल कइल अउ भगवान के आराधना कइल ही योग के वास्तविक उद्धेश्य ह।

जे लोग योग से दूर भागल ऊ कवनो-ना-कवनो रोग से ग्रस्त बा, ऊ चाहे तन के रोगी होखस चाहे मन के रोगी भा विचार के रोगी होखस। रोगी आदमी के कबहूँ शांति ना मिलेला, शांति प्राप्त करे खातिर एकसरि उपाय बा योग।प्राचीन समय में हमनी के ऋषि मुनि जंगल मे काहे जाए लो कभी विचार कइनी ह रउआ सभे? खाली अपना मन के शांति खातिर उहाँ लोगिन जंगल मे जाइँ आ ध्यान योग ,भक्ति योग में लीन हो जाइँ।

आज का युग मे हमनी के जंगल त ना जा सकिले जा, लेकिन शान्ति प्राप्त करे खातिर अपना भाग-दउड़ भरल जिनगी में से रोजो कुछ समय निकालल जा सकता जवना से हमनी के शांति मिली आ निरोगी भी रहल जाई। ई कहावत त रउरो लोग सुनलहीं होखेम- "प्रथम सुख-निरोगी काया", जब पहिले मन के सुख पहुँची त तन अपने आप निरोग रहे लागी।

हमनी के प्राचीन धर्म ग्रंथ के हिसाब से योग के आठ भाग में बाँटल गइल बा जवना के अष्टांगयोग योग कहल गइल बा-

1= यम

2= नियम

3= आसन

4= प्राणायाम

5= प्रत्याहार

6= ध्यान

7= धारणा

8= समाधि

यम अउर नियम

सबसे पहिले हमनीं के यम से प्रारंभ कइल जाई। अष्टांग योग के पहिला भाग यम होखेला अउर यम के भी आपन पाँच प्रकार होखेला-

(क) सत्य

सत्य अर्थात जे शाश्वत बा, जवन कभी नइखे बदल सकत, जेकर कभी भी नाश ना हो सकेला। जइसे जन्म लिहल सत्य ह, मरण सत्य ह लेकिन सबसे बढ़ के सत्य ह कि आत्मा के कभियो नाश ना होखे-

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

[जवन शस्त्र से काटल नइखे जा सकत, अग्नि से नइखे जरावल जा सकत, जल से गलावल ना जा सके आ जवना के हवा अवशोषित नइखे कर सकत ऊ आत्मा ही वास्तविक सत्य ह।]

हमनी के शरीर नाशवान ह एकर अंत निश्चित ह अर्थात हमनीं के आत्मा ही वास्तविक सत्य ह ई शरीर एगो माटी के चोला ह।

(ख) अहिंसा

मन से, वचन से आ कर्म से हिंसा के त्याग अहिंसा ह । केहू के तकलीफ न दिहल ही अहिंसा ह। निष्कपट - निःस्वार्थ सब केहू से प्रेम कइल ही अहिंसा ह।

(ग) ब्रह्मचर्य

केवल विवाह न कइल, स्त्री के संसर्ग के अभाव भा परित्याग ब्रह्मचर्य ना होला। ब्रह्म के प्राप्ति अर्थात प्रभु से सम्पर्क बनावल ही वास्तविक ब्रह्मचर्य ह। एहीसे ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम अउर सन्यास आश्रम के निर्माण भइल रहे , लेकिन आश्रम व्यवस्था के कमजोर भइला से भा लोप भइला से समाज मे अनाचार -दुराचार दिन-ब-दिन बढ़त जा रहल बा।

(घ) अस्तेय

कवनो भी समान के स्वामी, समान के मालिक के आज्ञा के बिना ओहि के इच्छा कइल , जवना के उपभोग कइला में कवनो डर, कवनो दुख केहू के ना होखत होखे उहे अस्तेय कहल जाला। दोसरा शब्दन में, कवनो वस्तु के चोरी ना कइल अस्तेय ह। समाज में हर बेकती में श्रमशीलता, स्वावलम्बन अउर संतोष के भाव होखे त चोरी पर अँकुसा लाग सकता। अधिका संपत्ति सँगोरल एक प्रकार के चोरिए कहाला।

(ङ) असंग्रह

स्वार्थ, अभिमान, झूठ, पाखंड से दूर रहल खराब वस्तु के त्याग कइल आ एकरा संघे-संघे अपना मन के लालसा के कम कइल , फालतू के समान ना जोगावल आ दोसरा के हमेशा भलाई सोचल बुरा विचार मन मे ना ले आवल धन संपत्ति के सदुपयोग कइल ही असंग्रह/अपरिग्रह कहाला। अबहीं अतने बाकी अगिला भाग में, तबले करीं योग रहीं निरोग रहीं। (क्रमशः)

- **योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी**

२९ जुलाई २०१८ के मुशहरी बाजार में सिरिजन के लोकार्पण के अवसर पर सर्वेश तिवारी श्रीमुख जी के भासन के अंश

इ कट्या के धरती ह एगो साहित्यकार के रूप में हम गोपालगंज के पुरवी भाग से पश्चिमी भाग के देखेनी त बड़ी श्रद्धा उपजेला इ अंजन जी के धरती ह प्रदीप जी के धरती ह । ये मामला में त हम अपना जवार के मरुस्थले बुझेनी, सँचहुँ बा अगर तुलना कइल जाव गोरैया, कटैया त हमनीके सतीश पाण्डे आ भागल चौधरी भले पैदा कइले बानी जा अंजन जी आ प्रदीप जी नइखीं जा जनमवले । भोजपुरी में अबहीं बहुत काम बाकी बा । अपना जिला में कहीं से उमीद आ आशा के किरण रहेला त कटेया से ही रहेला काहे की एनही काम भइल बा । हमार इलाका बंजर बा इ मामीला में, अभी भोजपुरी में काफी काम बाकी बा । रउवा भोजपुरी के दुर्भाग्य के अंदाजा लगाई १९२४-१९२६ के बिच में महिंदर मिशिर जी से जेल में रहिके अपूर्व रामायण लिखनी । भोजपुरी में रामायण एकलौते बा जहां तक हमरा जानकारी बा १९२४ के लिखल किताब आज तक ले प्रकाशित नइखे भइल शायद एतना बड़ा दुर्भाग्य कवनो भाषा के ना रहल ह । महिंदर मिशिर अइसन रचनाकार जेल में रहीं के ओहि के अगल बगल में सत्यार्थ प्रकाश लिखल गइल रहे जाने कई बार इ छप चुकल बा । लेकिन महिंदर मिशिर बाबा के किताब आज ले ना छापल । गइल रहनी जा उनका जयन्ती प छपरा त पता चलल उहाँ के गाँव के लोग अपना परयास से छपवावता अपना परयास से गाँव के लोग उहाँ के मूरति लगवावता । इ स्तिथि बा हमनी के भाषा के उहो ओह दौर में जब १२ गो देश देश में इ बोलल जाला लेकिन झारखण्ड ओकरा के द्वीतीय राजभाषा के दरजा देहलस । हमनीके उर्दू के ढोवतानी जा जबकि हमनी के आधा जिला भोजपुरी बोलेला । भोजपुरी के क्षेत्र से ही प्रेमचंद जी आइल बानी । बनारस के भी भोजपुरी क्षेत्र से ही मानल जाला । प्रेमचंद जी भोजपुरी से आवतानी, जयशंकर प्रसाद जी भी भोजपुरी से ही बानी, अइसन लोग भोजपुरी से भइल लेकिन भोजपुरी खातिर एक पन्ना में काम लोग ना कइल । एकरा ले बड़ दुर्भाग्य ना होइ कवनो भाषा के । हम एगो बात कहेब हो सकता कुछ लोग के बुरा भी लागो आ एकरा प बिबाद भी खड़ा होखे लेकिन सोची जवन भाषा में अंजन जी जइसन रचनाकार भइल बानी जवना भाषा में पाण्डेय कपिल जी जइसन रचनाकार भइनी गद्य आ पद्य दुनो पर एक प्रकार अधिकार होखे ओह भाषा में दुनियां में केहू से पूछ लीहीं भोजपुरी साहित्य के सबसे बड़ नांव कवन ह त एके नावें लोग जानता भिखारी ठाकुर । जबकि ८०/% भोजपुरी के बुद्धिजीवी सच्चाई बा की भिखारी ठाकुर के साहित्यकार आ रचनाकार त ना मानेला उहाँ के मूल रूप से रंगकर्मी रहनी । लेकिन एह भाषा के दुर्भाग्य देखी भाषा के साहित्य के एगो रंगकर्मी के हमनीके एडाप्ट कइले बानी जा साहित्यकार के रूप में । हमनीके एह दौर से निकले के परी । हम एहिजा एही से कहतानी की हमरा ब्यक्तिगत रूप से कटैया प उम्मीद रहेला अपना जिला में । इ सिरिजन के लोकार्पण के एहि कड़ी में लिहल जाइ । एगो इ बहुत बड़ कदम बा, गोपालगंज भी अब इ कह सकता बा की हमहुँ एगो पतिरिका देले बानी भोजपुरी खातिर । बलिया एकरा पर आपन एकाधिकार मानेला । भोजपुरी साहित्य में बड़लो बा उ लोग बिशेष काम कइले बा । देखीं हम नांव भुलातानी तिवारी जेकर १०५ वां किताब के हाल हीं में बिमोचन भइल ह, उहाँ के

युवा बानी हे चाचा हे भइया के उमिर में ५० के आस पास । हिंदी साहित्य में कमे अइसन साहित्यकार बाड़न जेकर एह कम उमिर में १०० गो कितान छपल होखे । अइसन साहित्यकार बाड़न जेकर एह कम उमिर में १०० गो किताब छपल होखे । अइसन साहित्यकार बाड़न हमरा हिया ओकर बावजूद भी हमनीके ए बेरा ले लड़तानी जा हमनीके राजभासा के दरजा मिलो भा हमनी के आठवीं अनुसूची में जगह मिलो । एह दिशा में बहुत मजबूती से आगे बढ़े के होइ । हमरा बुझाता कटैया एगो बढ़िया राह देखा सकता । हम मान के चलतानी । एहिजा के हमनी के जुटियाई एह दिशा में काहें के कवि सम्मेलन त बहुत होला । जहां कुछ लोग कविता पढ़ेला आ ताली बजेला आ ख़त्म हो जाता लेकिन एह तरह के आयोजन भोजपुरी खातिर कुछ नाया करे के ज़ज्बा एगो अउरी काम बाँचल बा, हम एहिजा कहीं दिहिं की कहानी लिखाता तबो रउरा हमार बात पसंद आ जाइ आ अगर हम कहीं की कहानी लिखातिया तबो रउरा सही मान लेब काहें की आज तक ले भोजपुरी के मानकीकरण होइबे ना कइल । दू चार गो बियाकरन के किताब लिखाइल होखी लेकिन हमनी में से शायद कोई पढ़ले होखी । भोजपुरी के एगो इहो दुर्भाग्य बा की किताब छपेला लेकिन कोई किन के ना पढ़ेला दू सौ अढ़ाई सौ परती छपा के यार दोस्त में बाँट दिहल जाला । किन के पढ़े के परवीरति भोजपुरी के पाठक लोग के लगे नइखे । हमनीके इहो शुरू करे के परी । भोजपुरी के बियाकरन लिख के ओकरा के अगिला पीढ़ी तक पहुंचावल भी एगो बहुत बड़ जिम्मेवारी बा । अगर एह दिशा में काम हो रहल बा त बढ़िया बा । आज शोसल मिडिया बहुत बड़ हो गइल बा हइ सिरिजन के नाम प जवन हमनी के एहिजा जुटल बानी जा एकर जनम भी सोशल मीडिया में ही भइल बा । अब छपल किताब से ज्यादा नेट प क किताब बिकता पढ़ाता । उ बियाकरन के नेट प लियावे के परी ताकी अगला पीढ़ी के पाता चलो की कहानी लिखाता की कहानी लिख़ातिया ।

****

२९-७-२०१८ के मुशहरी बजार, गोपालगंज में आयोजित सिरिजन तिमाही भोजपुरी इ-पत्रिका के लोकार्पण के अवसर पर ब्रजभूषण तिवारी जी के भासन के अंश

सभा के आयोजक आ हमार मित्र जगत बाबु आ सभा के इ राष्ट्रिय रूप देवे में सक्षम संजय जी इहाँ के हम बहुत कार्यक्रम में देखले बानी, इहाँ के अइला से एह जगह के शोभा बढ़ गइल । भोजपुरी के संबंध में त बहुत बात कहे के बा । भोजपुरी के उतपत्ति कहाँ से भइल जाने के चाही, भोजपुरी भाषा के साहित्य बतावेला की इ भाषा कहाँ से आइल । हिंदी साहित्य से एकर उतपत्ति के बारे में पता चलेला, हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के मतानुसार की भोजपुरी सीधे संस्कृत से आइल बा उहाँ के कई गो उदाहरण देले बानी हमनीके इहाँ गोरु बोलल जाला । बक्ष स्वरूप बछरू, गोरु,

के संगठन कब से बनल इहो जाने के चाही । भोजपुरी से का का बिलोपित हो रहल बा जवन हमनीके धरोहर रहे, इहो जाने के चाही । हम दू दू शब्द हर बिषय में बताइब । हर कुकुर, इ भोजपुरी में बा दुसरा भाषा में इ शब्द ना मिली । पानी के बियाकरन में इ बा ओहिजे से इ भाषा में आइल बा । भोजपुरी के बिरासत बहुत पुरान बा । जहां ले जय

भोजपुरी जय भोजपुरिया के सवाल बा जब कवनो हम संगठन खड़ा करतानी त हमरा इहो जाने के चाही ये क्षेत्र में अउरी कवनो संगठन बा की ना अगर कवनो संगठन बा की ना अगर कवनो संगठन बा त ओहमे कवनो अच्छाइ बा त ओके सीखी आ अउरी कवनो कमी बा त उ आवे ना पावे। एगो गोपालगंज के पूर्वी क्षेत्र से एगो नौजवान आइल बान उ बड़ा उत्साह से बोलले ह उ बड़ा पसन आइल ह। कहले ह एनिये सब कुछ बा ओने बीरान बा, अइसन बात नइखे ओने बहुत लोग भइल बा। महिंदर मिसिर ओहिजे के हउअन। भिखारी ठाकुर ओहिजा के हउवन देवेंदर नाथ शर्मा जी ओहिजे के हउवन सिपाही सिंह ओहिजा के हउवन, अइसन बात नइखे । भोजपुरी के बहुत सारी संस्था बाली स सबसे पुरान संस्था हिय सारण जिला भोजपुरी संगठन। एकर निर्माण केकरा प्रेरणा से भइल राजेंदर प्रसाद क प्रयास से। राजेंदर जी अपना साहित्यिक सचिव संत कुमार बर्मा के प्रेरित कइल इ संस्था के बनावे खातिर। १९४७ से पहिलका भोजपुरी साहित्य सम्मेलन छपरा में भइल जेकर अध्यक्षता कइले डॉ बलदेव उपाध्याय ओकर उद्घाटन कइले जगलाल चौधरी जे राजनेता रहले, २२ दिसंबर १९४७ में दुसरका भोजपुरी सम्मेलन गोपालगंज में भइल जेमा राहुल बाबा आइल रहले। उहाँ के कहली की भासा के आधार पर प्रान्त बने । अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन इलाहाबाद में भइल एकर अध्यक्षता कइले उदय नरायन सिंह जी कइनी जवन भोजपुरी में शोध कइले रहनी । दुसरका पटना में तीसराका सिवान में । बिश्व भोजपुरी सम्मेलन के भी स्थापना भइल जवन आजो चल रहल बिया। सारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्य्क्ष प्रदीप जी रहल बानी जवन इ इलाका खातिर गौरव के बात बा। ओहिसे कईगो संस्था बाली से ओहि तरह इहो एगो संस्था खुलल हमार शुभ कामना बा कवनो संस्था खुलला के बाद जवनो उत्साह का उ बरकार रहे आ रचना होखे।

भोजपुरी के बारे में एगो नौजवान बड़ा अच्छा चर्चा कइले ह की हमनी के भोजपुरी में खूब बतियावत बानी जा। लेकिन भोजपुरी के हालत का बा। जे भोजपुरी के झंडा ले के घूमता आ जे भोजपुरी के बिद्वान बा ओकरो घरे ओकर लइका अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता बेजाय नइखे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ल लेकिन घरे आके उ भोजपुरी में नइखे बोलत भा भोजपुरी नइखे समझत इ बेजाय बा। हमरा याद बा जब हम राजेंदर कॉलेज में पढ़े गइनी त ओहिजा एगो प्रोफेसर रहले मनोरंजन प्रसाद सिन्हा जे गाँधी जी के बरियार भक्त रहने फिरंगिया गीत लिखले रहने भोजपुरी में उ बिषय में एम ए रहने। डिस्ट्रिक जज के लइका रहने जब हमनीके उनका लगे जाइ त उ भोजपुरीया में बतियावास जा के कहनी जा भोरे चले के बा भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में चले के बात कहने हो हम त जगदीशो पुर ना गइनी ह, उहाँ जगदीशपुर के रहे वाला रहनी, कहनी क हम ना गइनी ओहिसे लोग मुहं फुलवले बा मुहावरा में बतवनी। मुरली बाबू के बोला के कहले रउवा जाइ इ लड़िका आइल बा एह सम्मेलन में।

जब घरे आ के हम देखीना की एम ए पास कवनो लइकी भोजपुरिया क्षेत्र के बियाह के बाद जब अपना ससुरा जा के भोजपुरी में बतियावतिया त ओकर निपट अनपढ़ भोजपुरी बोले वाली सास कहतिया की इ त हमार नाक कटा दिहि भोजपुरी में बोलतिया। एह तरह के जवन भावना बा ओके दूर करे के परी। एगो बहुत निक बात भइल राजभाषाचार्य जवन बहुत बड़का बिद्वान बानी जे कहनी बाबा कहल बा इया, बाबू, माई कहला में जवन आनंद बा। आनन्दे नइखे ओकर बहुत बड़ा अर्थ बा। आज घर भर मम्मी कहत रहे अब मम कहता डैडी ना अब त डैड कहाता। जेतना लोग एहिजा आइल बा उ त कम से कम एह बात के मानो। हम एगो अउरी बात पर बिचार कइल चाहब एगो संग्रह होके के चाही। भोजपुरी शब्दन क जवन बिलुप्त होत जा तालीस ओकर शब्दकोश बनो उसे भोजपुरी संस्कार मालूम पड़ो। अब सिंचाई टूबवेल से होखता पहिले का रहल ह ढेकुल, लाज, शिर, चवणा, गोड़, बरहा, इ कुल शब्द रहे के चाहि। समाजिक शास्त्री लोग जब एकरा के पढ़ी अध्ययन कृ त उ लोग के पाता चली की ओह समय के समाजिक स्थिति का रहे। इ समझल जाइ हम इ चाहब की भोजपुरी के नांव होखे हमे इहो ना चाहब की भोजपुरी में हमनीके पीछे रही जा। एहि तरह जय भोजपुरी जय भोजपुरिया नांव के एगो संस्था बनल, जय भोजपुरी कहते जय भोजपुरिया आ जाला। भोजपुरी के किताब के ना पढ़ी। जेतना संस्कार गीत रहली सा। संस्कार गीत लोप होखत चल जाता घर घर में इ लोक गीत गावल जात रहे मटकोर से ले के कुल मौका प। उ खत्म बा अंग्रेजी में गावल जात बा सिनेमा के गाना के तरज प गावल जाता। लोक नृत्य के जियावे के चाही, गोड़ के नाच, धोबी के नाच, अहीर के बिरहा, इ सब हमनी के धरोहर बा इ कुल्हिये के बचावे के चाहि। सुभाष जी से हम कहेब की लोक गीत के बचावे के चाही समय बहुत हो चुकल बा। बात बहुत बा लेकिन समय के अभाव बा फिर कबो। सिरिजन के के लोकार्पण में रउवा हमनीके बोलवनी जुटवनी एकरा खातिर हमार बहुत आशीर्वाद बा।

****

एह अंक के चित्रकार

“सिरिजन” के एह अंक के अधिकांश रेखांकन श्री पंकज तिवारी जी निवासी बिलोंई, मधुपुर, मुगरा बादशाहपुर, जौनपुर (उ.प्र.) के बा। बहुत कम बयस से पंकज तिवारी जी के प्रतिभा चित्रकारी क ओरि उन्मुख भइल। अतिने ना, साहित्य के अनेकन विधा जइसे कहानी, कविता, कला समीक्षा में भी इहाँ के बहुमुखी प्रतिभा के दर्शन होला। श्री

पंकज तिवारी जी के ललित कला क शिक्षा महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, बनारस में भइल । बर्तमान में इहाँके स्वतंत्र रूप से पत्र-पत्रिका ख़ातिर रेखांकन के साथे-साथे लेखन अउरी चित्र निर्माण में भी काम कर रहल बानी । इहाँ के बनावल चित्र देश के कई पत्र पत्रिका के शोभा बढवले बा जे मा कुछ उल्लेख जोग पत्रिका बाड़ीसँ हिंदी समय, मंतव्य, कथादेश, पाखी, अंजुमन, प्रतिलिपि, परिंदे, यशोभूमि वगैरह । आकाशवाणी वाराणसी, ओबरा, मुंबई से प्रसारित अनेक काव्यपाठ, वार्ता में इहाँ के महत्वपूर्ण सहभागिता रहल। इहाँ के राइटर्स एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन महाराष्ट्र से वर्ष २०११ में काव्य भूषण के सम्मान से सम्मानित हो चुकल बानीं । देश में अलग-अलग जगह इहाँ के अकेले भा सामूहिक चित्र प्रदर्शनी लाग चुकल बा जेमा मुख्य बा उ.प्र. राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ, उम्मीदें वाराणसी, सम्भावनाएं गाजीपुर, आइफा आजमगढ़। तमाम जगह प्रदर्शित चित्र प्रशंसित व पुरस्कृत भइलीसँ। चित्रकारिता के गुण इहाँ में सहज आ स्वभाविक रूप में पैबस्त बा। एकरा अलावा उहाँ के उपहार में 'बेलन', 'बेटियां', 'आठवां आसमान' जइसन किताबन के आवरण चित्र बना के पाठक लोग के बाहबाही पा चुकल बानी । सिरिजन टीम आभारी बा जमीन से जुड़ल एह चित्रकार से मिलल नायाब सहयोग ख़ातिर।

कुछ चित्र क सहभागिता दिनेश पाण्डेय जी, पटना के बा आ आवरण अउरी बैक कवर के डिजाइन लव कुमार सिंह लव के। टीम सिरिजन एह सहयोग बदे इनकर आभारी बा।

राउर बात

** सिरिजन के पहिला "समहुत" अंक पढ़नी , पहिले त पुरा टीम के बधाई देतानी बहुत सराहनीय पत्रिका बा , हर कोण से बेहतर लउकता ।हमनी के बचपन में एगो बर्तन होत रहे पीतल के सायद अबो होइ जवना के हमनी डाबारा कोई चिलमची कोई बरह गुना कहे ओकर कई गो उपयोग रहे , ओइसने सिरिजन भी लागल या एकरा के गागर में सागर कहीं भा भानुमति के पिटारा कहीं कवनो उचित शब्द हमरा नइखे सूझत । बस अतने कहबि जय भोजपुरी जय भोजपुरिया । सिरिजन में कहीं कुछ कमी लउकते नइखे आ अंतिम कहानी "छोह" त भाउक कदेता कवना कवना प्रसङ्ग के नाम गिनाईं संपादकीय से लेके अंत तक हिरीदय में बैठत चल जाता, "का हाल बा" त हमारा फउजी जीवन के याद दिलावता काहें कि मदरासी अउरी बिहारी जवान के कहे का हो का हाल बा, कविता भी एक से बढ़ी के एक बा केहू एगो के नाम लिहल उचित नइखे लागत, एह से सभी बधाई के पात्र बा आ सिरिजन जे एक बार पढ़ी उ खोजी के बार बार पढ़ी सबहिं के धन्यवाद बा । - सुरेन्दर कुमार पाण्डेय, आरा, बिहार |

** आप सऽब सीरजन के सीरजनहार बानी सभे सुघर रचना सम्पादित करी सभे भाषा के गौरव बनल रहे एकर धियान रहे सहता भाषा से भाषा के गौरव मे कमी आवेला ।रऽउआ सभन के परियास एक ना एक दिन जरूरे रंग ले आई आ हमनि के भोजपुरिया माटी के ठेठ भाषा बिहार उत्तरप्रदेश के आपनी भाषा कऽ ताज माथे पर चढि के बोली हम हूं लिखी के पेठा इब। जतना हो सकी साहित्यिक सेवा सीरजन खातिर होई बाकी सम्पादक मंडल के कीरपा। जय भोजपुरी जय भोजपुरिया समाज । - महेश्वर सिंह, शिक्षक, अरुणाचल प्रदेश

** सिरिजन के समहूत अंक पढ़े के मौका मिलल, दिल्ली से दिलदारनगर के ट्रैन के सफर में जब हमरा के एक जाना सिरिजन डाउनलोड क देहले हमरा मोबाइल प, रउवा सभे भोजपुरी खातिर बहुत बड़हन काम कर रहल बानी जा, आपन नयका पीढ़ी के भोजपुरी से जोड़ल बहुते जरूरी बा, इ जमाना त इंटरनेट के बा, भोजपुरी क ई पत्रिका देख के बड़ा निमन लागल । सिरिजन के सफर अनवरत जारी रहो, हमार शुभकामना बा । - गोबर्धन तिवारी, भोजपुरी साहित्यकार, दिलदारनगर, उत्तरप्रदेश ।

**सिरिजन के समहूत अंक में भोजपुरी थाती से परिचय हो रहल बा । बहुत नीमन गीत आ कविता, कहनी पढ़े के मिलल । सबसे नीमन बात इ बात बा की सॉफ्ट रूप में बा । हम पहिला बेर कवनो भोजपुरी इ पत्रिका के देखनी । बांच के अरब में भी गाँव गिरावं क याद ताजा हो गइल । - रविंदर सिंह, कुवैत

** भोजपुरी अइसनो होला जब तक सिरिजन ना पढ़ले रहनी तब तक पाता ना रहे, चेन्नई में बइठ के एगो दोस्त व्हाट्सअप प इ पत्रिका शेयर कइले । हतना नीमन लिखाता भोजपुरी में हमनी के त बिश्वाशे नइखे होत । सिरिजन टीम के बहुत शुभकामना बा इ-पत्रिका के रूप में भोजपुरी पत्रिका के प्रकाशन खातिर । - अनुराग शेखर राय, चेन्नई, तमिलनाडु

** सिरिजन टीम के हियरा से बधाई बा । कनखी, क्षोंह और मय लेख एक से बढ़ के एक बा । बड़ा नीमन कोशिश बा रउरा सभें के । - ऋतुप्रिया शुक्ल, चंदौली, उत्तरप्रदेश

** डाउनलोड कइनी सिरिजन के, भजपुरी साहित्य के एगो कोना, जहां हर बिधा के रचना के दर्शन भइल । जहां क गो कंठ गोहरावता, बोलावता उहो काहे खातिर ? त रउरे भजपुरी खातिर, सिरिजन टीम खातिर दिल से दुवा बा । - शमशेर अंसारी, शिक्षक, सईदराजा, उत्तरप्रदेश |

कलमकार से गोहार

निहोरा

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे । भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. **आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं । फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई ।**
2. **रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।**
3. **एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो । असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।**
4. **राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।**
5. **आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।**
6. **रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।**
7. **रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ ब्यक्तिगत ना होखे ।**

२९,जुलाई, २०१८ सिरिजन के लोकार्पण क समाचार मिडिया के नजर में

नारायणी साहित्य अकादमी की कवि गोष्ठी संपन्न, पत्रिका का हुआ लोकार्पण

भोजपुरी तिमाही ई-पत्रिका "सिरिजन" का लोकार्पण

पियवा बनी गइले परधनवा, कइसे ...

सिरिजन – तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका के लोकार्पण

भोजपुरी तिमाही ई-पत्रिका सिरिजन का लोकार्पण

(लाल बिहारी लाल)

गाजियाबाद। रोज़ीरोटी के चलते अपनों, परिजनों और जड़ों(जमीन) से दूर होना मजबूरी है। इस कारण आज राष्ट्रभाषा की जननी अन्य क्षेत्रीय को कियागया। पाठकों के लिए यह पत्रिका **www.sirijan.com** पर उपलब्ध है। दिल्ली एन.सी.आर की कड़ी में जय भोजपुरीजय भोजपुरिया संस्थापक सदस्य संजय कुमार ओझा, दिल्ली एनसीआर प्रतिनिधि राम प्रकाश तिवारी, योगगुरू शशि प्रकाश तिवारी एवं पूर्वांचल समाज के वरिष्ठसदस्य

२९, जुलाई, २०१८ सिरिजन क लोकार्पण क कुछ यादगार छाया चित्र

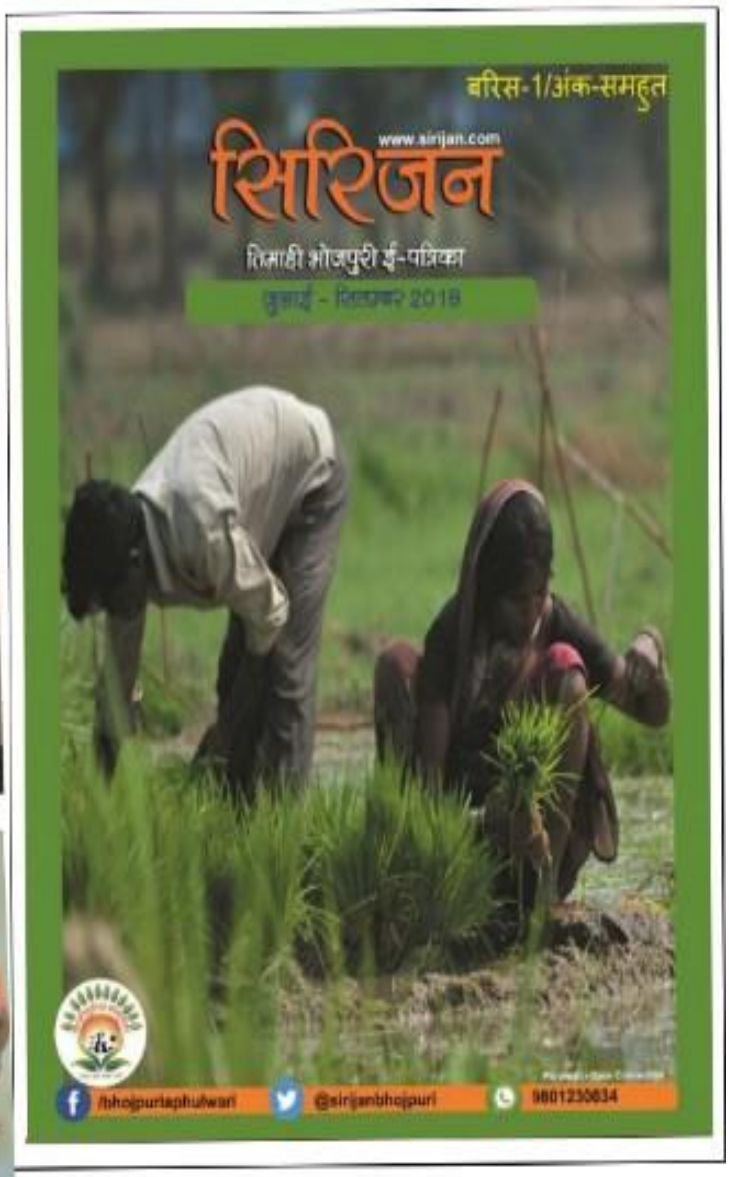

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

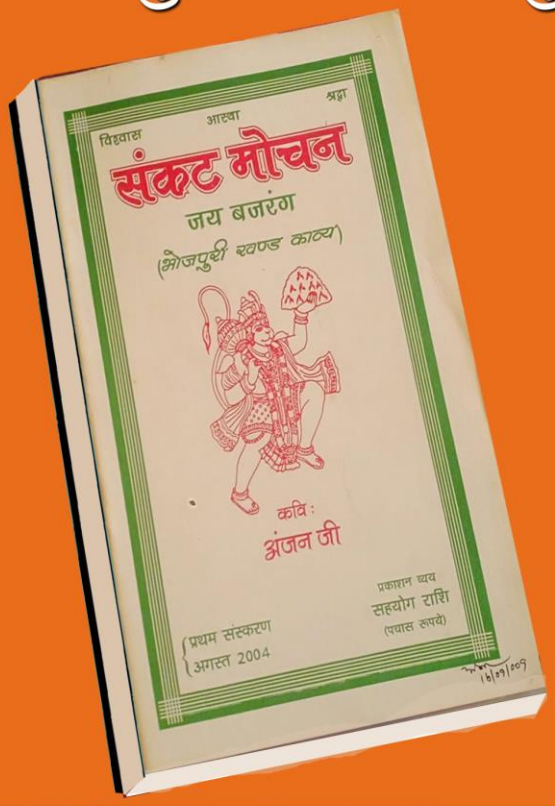

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी मानस मंडल के अमिट हस्ताक्षर राधा मोहन चौबे 'अंजन जी' के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं :

श्री भावेश कुमार

मोबाइल नं.- 9939516626

ईमेल - bhaweshanjan@gmail.com